बी एच ई एल
BHEL

अरुणिमा

अंक-39 अर्धवार्षिक, 2026-27

पावर एवं उद्योग क्षेत्रों में विकास को गति

राष्ट्र के विकास का विश्वसनीय साथी

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में बीएचईएल की महत्वपूर्ण भूमिका

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

नराकास प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार जीतने हेतु बीएचईएल को विशेष सम्मान

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), नई दिल्ली के तत्वावधान में नवंबर – दिसंबर 2025 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार जीतने हेतु बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय को नराकास द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया। नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित 15 प्रतियोगिताओं में बीएचईएल के 15 कर्मचारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए। 29 जनवरी, 2026 को आयोजित नराकास की 62वीं अर्द्धवार्षिक बैठक में सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। बीएचईएल की ओर से कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) श्री एम श्रीधर एवं कार्यपालक निदेशक (उद्योग क्षेत्र) श्री जितेन्द्र दास ने नराकास अध्यक्ष से 'सर्वाधिक पुरस्कार जीतने हेतु विशेष सम्मान' ग्रहण किया।

निदेशक (पावर)– अतिरिक्त प्रभार (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

हिंदी भारत की आत्मा को जोड़ने वाली भाषा है। हमारे व्यक्तिगत जीवन में यह संबंधों में आत्मीयता, सरलता और मिठास घोलती है और जब हम अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग करते हैं, तो उस समय हम केवल एक संवैधानिक दायित्व का पालन ही नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि हम अपने देश की मिट्टी और जनमानस से भी सीधे जुड़ रहे होते हैं। हिंदी ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और संस्कार की भाषा है।

बीएचईएल जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारे तकनीकी कौशल को राष्ट्र की जड़ों से जोड़कर अधिक सार्थक बनाता है। राजभाषा का प्रयोग अपनी जड़ों से जुड़ने का उत्सव है।

एक सार्वजनिक उपक्रम के रूप में, हमारा यह निरंतर प्रयास होना चाहिए कि हम अपने दैनिक प्रशासनिक और तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक सहज, सरल और व्यापक बनाएं।

'अरुणिमा' पत्रिका हमारी रचनात्मकता, वैचारिक प्रखरता और राजभाषा के प्रति हमारे साझा समर्पण का जीवंत प्रतीक है। पत्रिका का यह अंक हमारे कार्मिकों की रचनात्मक सोच, तकनीकी विमर्श और साहित्यिक अभिरुचि को और अधिक समृद्ध करेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

आइए, हम सब मिलकर इस यात्रा को और आगे बढ़ाएं और बीएचईएल को राजभाषा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने की ओर अग्रसर करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन और आप सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएं!

(तजिंदर गुप्ता)

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

प्रिय साथियो,

'अरुणिमा' के 39वें अंक के प्रकाशन के इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं।

'अरुणिमा' बीएचईएल की रचनात्मक ऊर्जा, तकनीकी सोच और भाषाई समन्वय का एक उत्कृष्ट मंच है। कॉर्पोरेट कार्यालय सहित देश भर में फैली हमारी विभिन्न इकाइयों के कार्मिकों की उत्कृष्ट रचनाएं पत्रिका को अधिक समृद्ध और ग्रहणीय बनाती हैं।

मेरा यह मानना है कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम होती है। जब हम अपनी तकनीकी और प्रशासनिक कार्यों को राजभाषा हिंदी में करते हैं, तो अपनी बात को सरलता से और ज्यादा प्रभावी तरीके से दूसरों तक पहुंचा पाते हैं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति और गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। संसदीय राजभाषा समिति के बहुमूल्य दिशा–निर्देश हमें अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की निरंतर प्रेरणा देते हैं। बीएचईएल इन सभी निर्देशों और लक्ष्यों के अनुरूप अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रचार–प्रसार और प्रगति के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

'अरुणिमा' के नवीन अंक के प्रकाशन पर पत्रिका में योगदान के लिए सभी रचनाकारों को तथा पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

श्रीधर

(एम श्रीधर)

संपादकीय

प्रिय साथियो,

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, अपितु हमारे समाज और संस्कृति की अंतरात्मा होती है। बीएचईएल परिवार के लिए हिंदी हमारे पारस्परिक जुड़ाव, संवेदनाओं और सामूहिक चेतना का आधार है। इसी अपनत्व और भाषाई गौरव को समेटकर राजभाषा विभाग आपके समक्ष **'अरुणिमा'** का 39वां अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है।

हमारी सनातन परंपरा में ज्ञान, विज्ञान और भाषा के विस्तार को ही जीवन का परम ध्येय माना गया है। कहा भी गया है:

"उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।"

(अर्थातः उदार चरित्र वाले लोगों के लिए संपूर्ण पृथ्वी ही उनका परिवार होती है।)

हिंदी भी हममें इसी उदारता और व्यापक दृष्टिकोण का भाव जागृत करती है। तकनीकी संस्थान होने के बावजूद बीएचईएल में हिंदी का प्रसार बहुत तेजी से हुआ है और हम दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का भरपूर प्रयोग कर रहे हैं। इसे और गति प्रदान करने के उद्देश्य से कंपनी ने हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं जो व्यक्तिगत तौर पर कर्मचारी से लेकर संस्थान के हर स्तर को हिंदी में कुछ नया और बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

'अरुणिमा' का यह अंक हमारी इसी भाषाई ऊर्जा और रचनात्मकता का एक गुलदस्ता है। पत्रिका के इस अंक में कॉर्पोरेट कार्यालय के साथ ही हमारी विभिन्न इकाइयों के प्रतिभावान साथियों के उत्कृष्ट तकनीकी आलेखों, कविताओं, कहानियों, संस्मरणों और ज्ञानवर्धक लेखों को भी स्थान दिया गया है। देश भर में फैली हमारी इकाइयों की राजभाषा गतिविधियों की झलकियाँ भी इसमें सम्मिलित हैं, जो हिंदी के प्रति हमारी आत्मीयता को दर्शाती हैं।

यह पत्रिका बीएचईएल परिवार के विचारों, भावों और मूल्यों का सुंदर दर्पण है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 39वां अंक सदा की भांति आपके हृदय को स्पर्श करेगा और राजभाषा के प्रति आपके समर्पण को और सुदृढ़ करेगा।

'अरुणिमा' के भावी अंकों को और उत्कृष्ट बनाने के लिए आपके विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

(राजीव कृष्ण श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन, मा.सं.–स्थापना एवं डीएजी)

संपादक मण्डल

संरक्षक
श्री के. सदाशिव मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक
श्री तजिंदर गुप्ता
निदेशक (पावर)–अतिरिक्त प्रभार (मा.सं.)

मुख्य परामर्शदाता
श्री एम. श्रीधर
कार्यपालक निदेशक (मा.सं.)

मुख्य संपादक
श्री आर के श्रीवास्तव
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन, मा.सं.–स्थापना एवं डीएजी)

संपादक
श्री मंगल स्वरुप त्रिवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक

श्री अनुराग मिश्र
प्रबंधक (राजभाषा)

परामर्शदाता मंडल

सुश्री दीपिका शर्मा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं.)

श्री उदयराज मीणा
अपर महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

सुश्री अर्चना महाराम यादव
वरि. प्रबंधक (वित्त)

संपादन सहयोग

श्री नीरज कुमार सिंह
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

श्री सुरेश कुमार
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

संपर्क सूत्रः
राजभाषा विभाग, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय,
बीएचईएल सदन, प्लॉट नं. 25, सेक्टर 16ए नोएडा–201301
दूरभाषः 0120–6748141, ईमेलः arunima@bhel.in

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं, सरकार अथवा बीएचईएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

अनुक्रमणिका

क्रं	शीर्षक	रचना वर्ग	लेखक (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पेज नं.
1	आने वाला कल	आलेख	अमृत स्वरूप सक्सेना	8–11
2	एक सीख जो जीवन बदल दे	संस्मरण	अक्षय कुमार	11
3	भेल – कर्मवीर चेतना	कविता	सचिन सैनी	11
4	भरतपुर की नाव	आलेख	अरविन्द कुमार पाण्डेय	12–13
5	बीएचईएल उत्पाद	कविता	अनिल कुमार मरकाम	13
6	आखिरी कॉल	आलेख	गौरव सिंह गंगवार	14
7	उत्पादकता	उत्पादकता आलेख	सुनील कुमार	15
8	विश्व शांति का मार्ग	आलेख	डॉ. मधु सूदन व्यास	16
9	पिता की चादर	कविता	अस्मिता कुमारी	16
10	प्रौद्योगिकी	तकनीकी आलेख	तरुणेंद्र कुमार तिवारी	17
11	मन की सुरक्षाः हेलमेट की भूमिका	सुरक्षा संबंधी आलेख	दिनेश कुमार	18
12	समय के साथ जीवन का अनुभव	आलेख	रोहित मिश्रा	19–20
13	सतत ऊर्जा समाधान	तकनीकी आलेख	लोकेन्द्र प्रकाश बिजल्वाण	21–23
14	कुसुमाकर	कविता	दिनेश कुमार परते	23
15	बीएचईएल में क्वालिटी सर्कल्सः औद्योगिक उत्कृष्टता की एक विरासत	तकनीकी आलेख	विनय कुमार सविता	24–25
16	हाथी की बारात	कविता	दीपा कुमारी	25
17	अरुणिमा के 38वें अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कृत कर्मचारी	उपलब्धि	संकलित	26
18	नौ इंजीनियर, दो फोल्डर और एक मेट्रो – दिल्ली विजय की हास्यगाथा	हास्य व्यंग	संजीव कुमार भारद्वाज	27
19	रफ्तार का शोर और एक माँ का अंतहीन इंतजार	आलेख	तेजराम देशमुख	28–29
20	कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां	समाचार	संकलित	30–36
21	गरीबी	कविता	पुष्पेंद्र मणि	36
22	हर की दून यात्रा–प्रकृति की गोद में पाँच अविस्मरणीय दिन	संस्मरण	अनुराग कुमार सिंह	37–38
23	बारिश	कविता	स्वाति जैन	38
24	मधुमेह के लक्षण और निदान	स्वास्थ्य संबंधी	डॉ. यू एस शिल्पी	39–40
25	पतरातु की घाटी	कविता	सतीश कुमार	40
26	प्रकृति का बदलता स्वरूप और मानव जीवन पर प्रभाव	पर्यावरण आलेख	नीरज कुमार सिंह	41–42
27	क्यों रुठ गई है कुदरत?	पर्यावरण आलेख	रोमिला वी रॉय	42
28	सैन्य जीवन से नागरिक और कॉर्पोरेट दुनिया की प्रेरक यात्रा	आलेख	विनोद कुमार सिंह	43–44
29	बीएचईएल के कर्मचारी	कविता	पंकज कुमार	44
30	जीवन की तीन खामोशियां	आलेख	योगेश कुमार धीमान	45
31	कार्यस्थल पर अकेलापनः कर्मचारियों के लिये उभरता खतरा	आलेख	नेहा	46–48
32	सकारात्मक उत्पादकता और हमारा बीएचईएल	आलेख	मुकेश कुमार	49–50
33	मैं हूँ एक फेब्रीकेटर	कविता	मनोज कुमार राय	50
34	हिंदीः राजभाषा से राष्ट्रभाषा	भाषाई आलेख	सुनीता	51–52
35	देशभक्ति गीत	गीत	नवल किशोर सिंह	52
36	गंगा की गोद और राम की नगरीः एक परिवार की पवित्र यात्रा	संस्मरण	शिवांगी गोयल	53–54
37	वन्दे मातरम् के 150 साल	गीत	प्रतिभा शाही	54
38	भारतीय ज्ञान और परंपरा –संस्कृति और साहित्य	आलेख	डॉ. के.पी. मिश्र	55–56
39	परिचय मेरा	कविता	वरुण कुमार शर्मा	56
40	बात अठन्नी की	कहानी	सुदर्शन	57–58
41	धर्म और मातृत्व	कविता	अरुण सक्सेना	58

आलेख

आने वाला कल

अमृत स्वरूप सक्सेना

महानगरों की तो माया ही अलग है जहां गांव और छोटे शहरों में लोग जगह खरीद कर अपने मकान बनाते हैं साथ ही अपनी जरूरत के हिसाब से ही भूतल के ऊपर एक दो मंजिल भी बना लेते हैं। तिवारी जी को ही लीजिए पैंतालीस–छियालिस की उम्र है इनकी और तीन बच्चे हैं जिनमें राकेश सोलह साल, मोहित तेरह साल और सरला ग्यारह साल की है। तिवारी जी और मैं बचपन के मित्र हैं। दोस्ती निभाना तो कोई तिवारी जी से सीखे, मुझे जब भी कभी कोई जरुरत लगी उन्होंने हमेशा मदद की। स्वभाव से शालीन और उसूलों के पक्के थे, वह कभी–कभी अक्खड़ से भी लगते थे। न जाने क्या हो जाता था उन्हें अचानक? जनाब को पिताजी का पचास गज का बना मकान छोटा लगता था तो शहर के बाहर में करीब पौने दो सौ गज का प्लाट लेकर लगे मकान बनवाने। इकलौते होने के बाद भी खुद से तो मां–बाप के साथ रहा नहीं गया और घर बनवाने के साथ ही लगे बोलने ..... " सोच रहा हूँ कि एक साथ ही दो मंजिला बनवा लूं ... आगे चलकर बच्चे–बहू कहां भटकेंगे ... साथ ही रहेंगे सारे। "

मेरा इकलौता लड़का गोपाल बैंक में काम करता है और मुंबई में पदस्थापित है। मेरा गोरखपुर छोड़ कहीं जाने का मन नहीं करता। मैं अपनी पत्नी सुधा के साथ यहीं खुश हूँ। बारह हजार की राज्य पेंशन और पांच हजार के पी. एफ. के ब्याज से महीने का खर्च चल जाता है। इकलौता बच्चा होने के कारण मैंने गोपाल की परवरिश में कोई कमी नहीं छोड़ी और खूब पढ़ाया–लिखाया। वैसे गोपाल ज्यादा होशियार न था पढ़ाई में, हमेशा औसत दर्जे के ही नंबर लाया। स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने के बाद वह बैंक की प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी करने लगा। दो साल तक प्रयास करने के बाद जाकर एक राष्ट्रीयकृत बैंक में लग ही गया। पहली तैनाती चेन्नई में मिली। दक्षिण भारत का माहौल, खान–पान, वेशभूषा आदि उत्तर भारत से बिल्कुल भिन्न है। गोपाल के बार–बार बुलाने पर भी मैं और सुधा एक बार भी उसके पास नहीं गए। नौकरी के दो साल के बाद पास के गांव में रहने वाले अग्निहोत्री जी की बिटिया से गोपाल की शादी करवा दी। अग्निहोत्री जी और उनके परिवार से सालों–साल का परिचय था तो ज्यादा जांच–पड़ताल नहीं करनी पड़ी। शादी के दो माह बाद ही मैंने बहू को गोपाल के साथ चेन्नई भेज दिया। समय निकलता रहा और दो साल बाद गोपाल को चेन्नई से मुंबई स्थानांतरित कर दिया गया। गोपाल हर दूसरे दिन फोन कर घर परिवार और रिश्तेदारों के हाल–चाल लेता रहता था।

एक सुबह जब मैं प्रतिदिन की तरह घर के बाहर कुर्सी डाले चाय पी रहा था तभी गोपाल की मां भी आकर बैठ गई। मैंने उसकी ओर देखा तो वह मंद–मंद मुस्कुरा रही थी तो मैंने भी मजाकिया लहजे में बोल दिया.... क्या बात है ! बड़ा मुस्कुरा रही हो.... कुछ खास बात है क्या? एक क्षण की खामोशी के बाद बोली! आप बाबा बनने वाले हैं। क्या ... क्या कहा तुमने, मैं बाबा बनने वाला हूँ .... अरे वाह ! क्या खबर दी है तुमने ... इस खबर से तो तुमने सुबह को और खुशनुमा बना दिया। पिता होने के नाते मुझसे संकोच वश कह न पाए होगें तो बहू ने यह खुशी अपनी सास से साझा की। मैंने तुरंत बहू को फोन करके खूब सारा प्यार और आशीर्वाद दिया। बहू बोली .... "पिताजी मां को हमारे पास भेज दीजिएगा अगले महीने।"

विवाह के बाद से अब तक मैंने सुधा को कभी अपने से दूर नहीं किया था। ससुराल भी जाता था तो साथ लेकर आ जाता था। शुरुआत में इसको लेकर आपस में खूब कहा–सुनी हुई लेकिन समय के साथ–साथ सुधा भी रम गई इन सब में और समझा लिया अपने आपको कि यह ऐसे ही हैं... लेकिन अब क्या... बहू ने पहली बार कुछ कहा है वह भी ऐसे समय में तो नहीं टाल सकते थे। गोरखपुर छोड़कर तो मैं जाने से रहा। सुधा को मैंने छः–आठ माह के हिसाब से सामान रख तैयारी करने के लिए कहा। प्रसव और उसके बाद छोटे बच्चे की देखभाल के लिए इतना समय काफी रहेगा। साथ ही अपने भतीजे मुकेश को अपनी चाची को मुंबई छोड़ने के लिए भी बोल दिया।

दो–तीन दिन के बाद मैंने गोपाल को फोन करके उसकी मां के ठीक–ठाक से पहुंचने का हाल ले लिया। अब सप्ताह में एक बार ही फोन आता था गोपाल का... सोचा... शायद मां से ज्यादा लगाव होगा, तभी पहले तो हर दूसरे दिन फोन आ जाता था और अब हफ्ते में एक दिन। करीब–करीब तीन माह बाद गोपाल की मां का शाम को गोपाल के नंबर से ही फोन आया और बोली! बधाई हो, आप बाबा बन गए हैं ... पोता हुआ है... सुनकर मानो मेरी बांछे खिल गई, बहुत खुश हुआ और तुरंत बाजार से मिठाई लाकर पड़ोसियों को मिठाई खिलाई क्योंकि तिवारी जी का घर शहर से दूर था सो पड़ोसी के बच्चे के हाथों उनके यहां मिठाई भिजवा कर संदेशा दिलवा दिया। पोते का नाम हर्ष रखा। इस खुशी के बाद अभी भी मैं मुंबई जाकर पोते का मुंह देखने की हिम्मत नहीं जुटा सका। दो महीने बाद अग्निहोत्री जी अपनी पत्नी के साथ बिटिया के पास मुंबई पहुंच गए। जब मुझे यह पता चला कि श्रीमती एवं श्री अग्निहोत्री गोपाल के घर पहुंच गए हैं तो मैंने तुरंत गोपाल को फोन कर मां को भेजने के लिए कहा... साथ ही बोला! मुकेश दो दिन बाद आ जाएगा। मुंबई से चलने से पहले जो मेरी सुधा से बात हुई उससे लगा की उसका कतई मन नहीं है वहां से आने का परंतु वह मुझे अच्छे से जानती थी, सो कुछ बोल ना सकी।

धीरे–धीरे दो–तीन साल निकल गए। बेटा–बहू मुझे बुलाते रहते थे लेकिन मैं हमेशा आऊंगा आऊंगा... कहकर टाल दिया करता। हर्ष अब बड़ा हो गया था जब भी गोपाल या बहू फोन पर बात करते उसकी किलकारियां पीछे से आती रहती थी, अब वह गोपाल से मुझसे बात करने की जिद करता। जब–जब उसकी आवाज सुनाई देती मन करुणा से भर जाता। कुछ दिन ऐसे ही निकल गए। एक दिन सुबह के शायद नौ बजे होंगे, गोपाल का फोन आया और बोला पिताजी हर्ष आपसे बात

करने की जिद करके रो रहा है, आप उससे बात करके जरा बहला दीजिये। मैंने बोला! फोन दो हर्ष को। जैसे ही हर्ष ने फोन लिया तो बोला बाबा–बाबा, आओ ना मेरे पास... आपके साथ खेलना है... मुझे जैसे ही मैंने यह शब्द सुने तो मुझसे रहा न गया और बोला! हां.. हां .. बेटा .. आऊंगा... जल्दी आऊंगा आपके पास। जैसे ही उससे बात हो चुकी तो मन भर आया और लगा सोचने ... अरे हमारा बेटा बहू और पोता वहां है और मैं यहां... जाने कब ऊपर वाले का बुलावा आ जाए... कब तक मैं यहां खूँटा गड़ाए बैठा रहूँगा.... आज तक मैंने गोरखपुर से बाहर पैर तब तक नही निकाला जब तक कोई इमरजेंसी न हो या फिर मेरे बिना जाये कोई काम ना बने। मैंने सुधा को आवाज दी और कहा चलो ... कुछ दिन के लिए बच्चों के पास चलें। सुनते ही सुधा मेरा मुंह देखने लगी मगर कुछ पूछ न सकी बस यह बोली... ठीक है तैयारी करती हूँ, कब चलना है यह बता दीजिए। मैंने बोला! परसों की टिकट करवा लेता हूँ।

इस तरह गोरखपुर रेलवे स्टेशन से मुंबई की ट्रेन पकड़ ली और रास्ते में से गोपाल को अपने पहुंचने की सूचना दे दी। स्टेशन आने पर प्लेटफार्म पर उतरते ही गोपाल दिखाई दे गया। वह बहू और हर्ष को भी साथ लाया था। हर्ष संकोच में गोपाल के पैर के पीछे छिप रहा था। बहू बोली! बेटा बाबा–दादी हैं जाकर पैर छुओ लेकिन वह तो बस अपने पापा के पैरों के पीछे छुप कर मुस्कुरा रहा था। मैंने ही हाथ बढ़ाकर गोदी में ले लिया तो आ गया। गोदी में चढ़े–चढ़े कान में बोला बाबा ... बाबा। स्टेशन से गोपाल का घर करीब चालीस मिनट की दूरी पर था तो रास्ते भर हर्ष शरारतें करता रहा। कभी अपनी दादी के बाल खींचता तो कभी मेरी जेब में रखे कागज निकालता। अब वह मेरे साथ रम गया था। रात का समय था तो बाहर रोशनी के अलावा कुछ और दिखाई न दे रहा था। गाड़ी से घर पहुंचकर खाना खाकर गोपाल से उसके कामकाज की बात की। रात का ग्यारह बज गया था तो बहू हर्ष को बोली! सोने चलो हर्ष ... कल स्कूल नहीं जाना क्या ... चलो सोने .. हर्ष का बिल्कुल मन नहीं था सोने का मगर अपनी मम्मी की घूरती आंखों के आगे उसकी एक न चली। थोड़ी देर में मैं भी दूसरे कमरे में जाकर सो गया जहां गोपाल की मां पहले से ही सोई हुई थी।

सुबह उठा तो सोचा घर से बाहर टहल आऊँ। घर से बाहर निकल सड़क पर आया तो परिदृश्य बदला हुआ था। रात जब स्टेशन से घर आया तो अंधेरा था और वैसे भी कार में हर्ष के साथ लगा हुआ था तो कुछ देखा ही नहीं था। कार के बाहर गोपाल पंद्रह मंजिला बनी इमारत में आठवीं मंजिल पर रहता था। चारो ओर सिर्फ ऊंची ऊंची इमारतें ही दिखाई दी। कॉलोनी के गेट से बाहर निकला तो देखा लोग अपनी–अपनी भागम–भाग में लगे हैं, यहां न तो कोई लोगों का झुंड था और न ही गरम–गरम जलेबी बनाती हुई कोई दुकान, जहां लोग गपशप कर रहे हों। लोग बस भागते ही जा रहे हैं। यह सब देखकर मेरा सिर घूम गया और मैं वापस आ गया। हर्ष स्कूल जा चुका था, नर्सरी कक्षा में जाता था वह और स्कूल से आते–आते दोपहर का एक बज जाता था। उसे हर्ष के स्कूल से आने के बाद तो समय पता ही नहीं चलता था, वह मेरे और मैं उसके पीछे, कब रात हो जाती थी पता ही नहीं चलता था। हफ्ता–दस दिन कट गए जैसे–तैसे, हर्ष के स्कूल से आने तक मैं बोर हो जाता था आखिर करने को भी तो कुछ नहीं था मेरे पास। उस समय को काटने के लिए मैं कभी कभार सब्जी लाने कॉलोनी से बाहर करीब आधा किलोमीटर पर लगी बाजार चला जाता था टहलते–टहलते। घर में भी तो लेटे–लेटे थक जाता था ... पता नहीं क्या–क्या सोचता रहता था लेटे–लेटे ... कभी गोरखपुर की बाजार का ख्याल आता, तो कभी तिवारी जी के पिता का, तो कभी किसी पड़ोसी का।

अगला दिन बाजार का दिन था तो हर्ष के स्कूल जाने के बाद झोला लेकर पहुंच गया भाजी तरकारी लेने। वापसी में आते–आते जाने कौन सी सोच में था कि सामने पड़ा पत्थर भी न दिखाई दिया, ठोकर लगते ही झोले के साथ आगे की ओर गिरने को हुआ कि अचानक एक लड़के ने मेरे कंधों को संभाल लिया और बोला ! बाबूजी ठीक तो हैं आप ? मैंने अपने को संभाला और बोला! हां बेटा, ठीक हूँ जाने कैसे न दिखाई दिया मुझे वह पत्थर। दिखने में बड़ा सज्जन सा लगा वह लड़का। करीब इक्कीस–बाइस साल का होगा वह, तो पूछ लिया बेटा! तुम तो मराठी हो न ... मतलब यही के होगे। साथ ही मेरी सांस भी बहुत तेजी से चल रही थी शायद उस धक्के का असर अभी तक था। लड़का बोला! बाबूजी आप सामने पड़ी मेज पर बैठ जाइए... मुझे बैठाने के बाद बोला, "बाबूजी मैं उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जिले का हूँ।" यह सुनकर मैं उसे आश्चर्य से देखने लगा साथ ही वह बोला मैं यहीं पास में ही एक मेडिकल स्टोर पर काम करता हूँ। मैंने सहसा उससे पूछा बेटा गोरखपुर में कहां ? बोला! पंचवटी कॉलोनी, नई यूनिवर्सिटी के पीछे। यह सुनते ही मेरे मन में तरह–तरह के विचार आने लगे... अगले ही पल मैंने उस लड़के को बोला.. किनके लड़के हो तुम ? लड़का बड़ी शांति से सारे जवाब दे रहा था...वह बोला! मनमोहन तिवारी मेरे पिता हैं... क्या मनमोहन तिवारी?

आश्चर्य से मेरी आंखें फटी की फटी रह गई। मन में बार–बार आता हुआ विचार जो मेरे न चाहते हुए भी सच था। मैं बोला! तिवारी जी के बेटे हो तुम... क्या नाम है तुम्हारा ? वह बोला... राकेश तिवारी ! लेकिन आप .... मेरा मतलब है क्या आप पिताजी को जानते हैं ? आप हैं कौन? यह सब सुन मैं पुराने समय में खो गया मुझे तिवारी जी और उनकी बातें याद आ रही थीं जो कहते थे कि बच्चे–बहू को साथ रखूंगा.... भले तिवारी जी ने खुद अपने पिता का घर सिर्फ इसलिए छोड़ा कि वह थोड़ा छोटा था। मन आशंकाओं से भर उठा मैंने तुरंत राकेश को बोला बेटा! तुम्हारे छोटे भाई–बहन तो पिताजी के साथ होंगे न। राकेश मायूस हो गया और मेरे बारे में पूछने लगा... एक अंजान आदमी जो उसके परिवार के बारे में सब कुछ जानता हो और वह उसे खुद न जानता हो और लगातार प्रश्न पूछ रहा हो तो उसे थोड़ा अजीब लगा। उसने मेरे बारे में पूछा तो मैंने उसे अपने और उसके पिताजी के सबंधों के बारे में बताया तो कहने लगा बाबूजी! मैंने पास में ही किराए का कमरा लिया है। मैं आपका थैला पकड़ लेता हूँ आप मेरे साथ चलिए।

सच कहूँ तो मैं उसके साथ जाना नहीं चाहता था लेकिन मेरे प्रश्न मुझे अंदर से जवाब के लिए झकझोर रहे थे। मैंने उसके साथ जाने की ठानी। रास्ते भर मैंने और राकेश ने कुछ बात नहीं की। पंद्रह मिनट पैदल चलकर उसका कमरा आ गया। उसका घर घुसने के साथ ही खत्म हो गया। घर में मात्र एक कमरा, कोने में किचन और बाहर की ओर बाथरूम था। घर में एक लड़की भी थी जिसने मुझे देख तुरंत अपनी चुन्नी से सिर ढक लिया और आकर मेरे पैर छुए। मन में प्रश्नों की बाढ़ सी आई

जा रही थी लेकिन दूसरे की हलक में हाथ डालकर जवाब भी तो नहीं ले सकता था। मैं शांत रहा। कमरे में सोफा, कुर्सी भी न थी सो बेड पर ही राकेश ने बैठाया। उसका चेहरा अभी भी मायूसी से लटका हुआ था। कुछ ही देर में वह लड़की चाय ले आई। चाय रखकर वह कमरे से बाहर चली गई। मेरे सब्र का बांध अब टूट रहा था। चाय की पहली चुस्की के साथ ही मैंने पूछ लिया... राकेश बेटा तिवारी जी ठीक तो हैं न ?

राकेश बोला, " बाबूजी! जीवन भी एक चक्र है कब क्या हो जाए कोई नहीं जानता। मैं उसकी ओर टकटकी लगाए देख रहा था कि वह मेरे सारे सवालों के जवाब को उड़ेल दे बस। वह बोला मोहित की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। एक बार स्कूल से वापस आते समय मूसलाधार बारिश हो रही थी। शहर के बाहर पंचवटी कॉलोनी में एक आधा मकान ही बना था। तब रिक्शेवाला सारे बच्चों को छोड़ अंत में मोहित को घर छोड़ता था। शहर का बाहरी हिस्सा होने के कारण नालों की ढलाई का काम भी चल रहा था। बारिश में रिक्शेवाला धीरे–धीरे रिक्शा ला रहा था, तेज बारिश में सड़क मुश्किल से ही दिख रही थी कि अचानक रिक्शे का पहिया एक खुले सीवर टैंक में जा फंसा और रिक्शा पलट गया। मोहित गिर गया। मूसलाधार बारिश में उसे ढूंढने की बहुत कोशिश की गई लेकिन वह न मिला और अगले दिन जब बारिश रूकी तो वह पास की नहर में मृत अवस्था में मिला। मां को मोहित से बहुत लगाव था, उसकी लाश देखकर वह अंदर से पूरी तरह टूट गई और तीन महीने बाद वह भी चल बसी। घर पूरी तरह बिखर चुका था। मां की मौत के बाद पिताजी अस्वस्थ रहने लगे। घर अंधकार में चला गया। वो तो सरला थी जिसने घर की पूरी जिम्मेदारी उठाई। सरला की बदौलत और उसकी सेवा से ही पिताजी की तबीयत सुधरने लगी। राकेश बोला," बाबू जी, पिताजी उसूलों के पक्के थे, मां के जाने के बाद मैं उनसे कुछ भी साझा न कर पाता था, डरता था उनसे वह कमरे के बाहर खड़ी लड़की की ओर इशारा करते हुए बोला," वह मेरी पत्नी पूनम है। बारहवीं में पढ़ता था मैं, जब मेरा उसकी ओर झुकाव हुआ। स्नातक होते–होते हमने विवाह की ठानी। मैं अपने पैरों पर खड़ा होकर पिताजी से और उसके घर वालों से बात करना चाहता था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। गोरखपुर जैसे छोटे शहर में ऐसी बात ज्यादा दिनों तक छिपी न रह सकी। एक दिन पूनम के पिताजी ने पिताजी को घर आकर खूब खरी–खोटी सुनाई और लज्जित किया। शाम को घर आते ही मेरे ऊपर उनका सारा गुस्सा फूट गया। मेरी एक भी बात सुने बिना ही उन्होंने मुझे घर में दोबारा न घुसने को कहा और बोले," आज तुझे अपना बेटा कहने में मुझे शर्म आती है ... सारे समाज के सामने लज्जित कर दिया तुमने मुझे .... आज से मेरा कोई बेटा नहीं ... चला जा यहां से दोबारा कभी मुंह न दिखाना अपना। पिताजी का कहा एक–एक शब्द तीर सा चुभ रहा था। पिताजी ने घर छोड़ने को कहा इसका दुख नहीं लेकिन बाबूजी! उन्होंने मुझे अपनी बात रखने का मौका भी नहीं दिया इसलिए मन आज भी दुखी है।

वह बोला," आज मैं गरीब जरूर हूँ लेकिन पूनम के साथ खुश हूँ। उसने मेरी हर छोटी–मोटी जरूरत को पूरा किया। घर को संभाला हुआ है, वह खुद भी नौकरी करती है। हम दोनों अलग–अलग नौकरी करते हैं और अपने जीवन को जैसे–तैसे जी रहे हैं। पिछले साल सरला ने अपनी शादी के बारे में बताया। बहुत मन था कि उसकी शादी में आऊं लेकिन पिताजी की ओर से कोई सूचना न पाकर मैं जाने की हिम्मत न जुटा सका। सरला से मेरी फोन पर अक्सर बात हो जाया करती है वह अपने ससुराल में खुश है। मैं राकेश की यह सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। मुझसे चाय का दूसरा घूँट न लिया गया। मैंने राकेश से कहा," तिवारी जी तो फिर अकेले ही गुजर बसर कर रहे होंगे तो उसने कोई जवाब नहीं दिया और सिर झुका लिया।

मैं गोपाल के घर वापस चलने को तैयार हुआ तो राकेश और उसकी बहू ने पैर छूकर दोबारा आने का न्योता दिया। रास्ते भर मैं तिवारी जी के बारे में ही सोचता रहा कि उनके साथ कब क्या हो गया और उन्होंने एक शहर में रहते हुए भी कभी बताया नहीं, शायद शर्म से कुछ न कहा गया होगा। रह–रहकर तिवारी जी का परिवार, बेटे–बहू के साथ रहने वाली बात याद आ रही थी परंतु अब की स्थिति देखकर उन पर तरस आ रहा था। चलते–चलते मैंने मन में दोनों परिवारों को मिलाने का दृढ़ निश्चय किया। सोचते–सोचते कब घर आ गया पता ही नहीं चला। घर पहुंचते ही मैंने गोपाल की मां को सिर्फ मेरा सामान बाधँने को बोला। उसके पूछने पर सिर्फ इतना ही कहा कि कुछ काम है गोरखपुर में जरुरी... जल्दी जाना है। गोपाल ने अगले दिन तत्काल कोटे में ट्रेन की टिकट करा दी।

गोरखपुर पहुंच कर मैं अगले दिन सुबह–सुबह तिवारी जी के घर जा पहुंचा। तिवारी जी अचानक इतने समय बाद मुझे देखकर चौंक गए ... सामने मैं खड़ा था तो घर के अंदर आने का न्योता दिया। घर के अंदर का रखरखाव फैला देख मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने पहले तो औपचारिक रूप से तिवारी जी के हाल–चाल लिये। वे बुझे–बुझे से बस हाँ–हूँ कर रहे थे, मुझसे उनकी यह हालत देखी न जा रही थी, मैंने तिवारी जी को मुंबई में राकेश से अपनी मुलाकात और आपस में हुई बातचीत बताई। मैं अपनी बात पूरी करने ही वाला था कि उससे पहले ही तिवारी जी फफक–फफक कर रोने लगे, जाने अपने मन में कब से आंसुओं का सैलाब दबाए बैठे थे।

मैंने तिवारी जी को समझाते हुये कहा," यदि आपने राकेश को अपनी बात रखने का अवसर दिया होता तो शायद आज बहू–बेटे आपके साथ होते। बच्चा जब जवान होता है तो उसे पुत्र के साथ–साथ दोस्त की नजर से भी देखना चाहिए जिससे वह अपनी बात आपसे निःसंकोच साझा कर सके। एक निर्णय से आपने अपने और राकेश दोनों के साथ अन्याय कर लिया।

ईश्वर भी व्यक्ति को अपनी भूल सुधारने का एक अवसर देता है शायद आपकी इस भूल को सुधारने के लिए ईश्वर ने मुझे चुना है। तिवारी जी की आंखों में आंसू थे, शायद उन्हें अपनी गलती का एहसास था। उन्होंने तुरंत सरला को फोन कर राकेश का फोन नंबर लिया। राकेश को फोन करते ही जैसे ही तिवारी जी ने उसे बेटा कहा मानो पिता–पुत्र का वहीं मिलन हो गया। उन दोनों की बातें सुन मैं भावुक हो गया और तिवारी जी के घर के आंगन में आकर खड़ा हो गया। राकेश से बातचीत कर तिवारी जी ने पीछे से आकर मेरे कंधे पर हाथ रख मुझे धन्यवाद दिया। मैं भी तिवारी जी को प्रणाम कर अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते

में चलते–चलते सोच रहा था ... ईश्वर की माया ईश्वर ही जानता है ... जीवन में पहली बार गोरखपुर से बाहर निकलना, मुंबई में राकेश से टकराना और पिता–पुत्र का यह मिलन रंगमंच के नाटक सा लगता है लेकिन नाटक के मुख्य पात्र होने पर मुझे अपने आप में बड़ा गर्व महसूस हो रहा है .... लगता है मानो जीवन सार्थक हो गया मेरा।

अब मैं भी दो–तीन माह में सुधा के साथ मुंबई आता–जाता रहता हूँ। तिवारी जी तो कभी उनका बेटा बहू घर आते–जाते रहते हैं। सुधा और गोपाल मेरे व्यवहार में यह बदलाव देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे लेकिन मुझसे कभी पूछने की हिम्मत नहीं जुटा सके लेकिन चलो अच्छा है जो न पूछ सके और इसी में तिवारी जी और मेरी खुशी है....

वरि. अभियंता (सतर्कता)
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

एक सीख जो जीवन बदल दे

अक्षय कुमार

जीवन में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो हमें हमेशा के लिए बदल देती हैं। मेरे जीवन में भी एक ऐसी घटना हुई जिसने मेरे सोचने और काम करने का तरीका बदल दिया।

अपने कार्य के प्रारंभिक दिनों में, मैं अपने काम को जल्दी समाप्त करने के प्रयास में कई बार छोटी–छोटी बातों को नजरअंदाज कर देता था।

एक दिन जल्दबाजी में मैंने एक प्रक्रिया को सही तरीके से नहीं अपनाया। परिणामस्वरूप कार्य में त्रुटि हो गई, जिसको सुधारने में काफी समय और प्रयास लगा।

उस दिन मेरे वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे डांटने के बजाय समझाया कि, "कार्य को जल्दी करना महत्वपूर्ण है लेकिन उससे अधिक महत्वपूर्ण उसे सही तरीके से करना है।"

वह बात मेरे मन में गहराई तक बैठ गई। उस दिन मैंने समझा कि गुणवत्ता और सावधानी ही किसी भी कार्य की सफलता की कुंजी है।

उसके बाद से मैंने हर कार्य को पूरी जिम्मेदारी और ध्यान से करना शुरू किया और आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो वह घटना मेरे लिए एक महत्वपूर्ण सीख के रूप में सामने आती है।

इस घटना ने मुझे न केवल एक बेहतर कर्मचारी बनाया बल्कि एक जिम्मेदार व्यक्ति भी बनाया।

प्रोजेक्ट सुपरवाइजर (एफटीए)
ईडीएन, बेंगलुरु

भेल – कर्मवीर चेतना

सचिन सैनी

हमने बिगुल बजाया है, तुम भी तो टंकार करो,
तुम्हीं हो श्रमवीर हमारे, तुम ही अंगीकार करो।
दीपों के रोशन को हमने, विद्युत से चमकाया है,
सिंचित कर भारत का मरुथल, गौरव से हर्षाया है।
उत्पादन, ऊर्जा, शक्ति के जाल बिछाये जल–थल में,
महारत्न का तब जाकर हमने परचम लहराया है।
शांत हुए इस श्रणिक वेग में, नया रक्त संचार करो... तुम्हीं हो श्रमवीर हमारे
देश भले ही बाधाओं के, विषधरों से घायल हो।
आंधी, तूफां, आपदा की, चारों ओर ही हलचल हो,
हमने बढ़कर विश्व में, सशक्त कदम बढ़ाये हैं,
याद रहे गर विद्युत हो, तो दुनिया भेल की कायल हो।
उठो सचेतन होकर के, नव–श्रेणी व्यापार करो ....
तुम्हीं हो श्रमवीर हमारे
नई योजना, तकनीकों, संसाधन के भण्डार हैं हम,
प्रतिस्पर्धा में गंगाजल, और गोमुख सी धार हैं हम,
हमने सिल्वर, कॉपर और फौलादों को पिघलाया है,
सारे ही उद्योग जगत में, स्पर्धा और संचार हैं हम।
आओ, भेल के मस्तक का नव दीपों से श्रृंगार करो ....
तुम्हीं हो श्रमवीर हमारे

वरिष्ठ ड्राफ्ट्समैन (ईएमई)
हीप, हरिद्वार

आलेख

भरतपुर की नाव

अरविन्द कुमार पाण्डेय

भरतपुर एक शांत और समृद्ध गाँव था। गाँव के बीचों-बीच रसवती नाम की एक सदानीरा नदी बहती थी, न बहुत चौड़ी, न बहुत संकरी, पर जीवन के दोनों किनारों को जोड़ने वाली। नदी के दोनों ओर बसी बस्तियों के लिए यह केवल जलधारा नहीं, बल्कि जीवन का आधार थी।

इस नदी को पार करने के लिए गाँव में एक अत्यंत प्राचीन, एवं अत्यंत सुदृढ़ लकड़ी की नाव थी। समय के साथ वह पुरानी अवश्य हो गई थी, पर उसकी दृढ़ता और विश्वसनीयता पर किसी को संदेह नहीं था। गाँव के कुछ बुद्धिमान और अनुभवी लोग समय-समय पर उस नाव की जाँच करते, उसके छोटे-छोटे छिद्रों को भरते और उसे सुदृढ़ बनाए रखते। इसी कारण वह नाव वर्षों से लोगों को सुरक्षित पार उतारती चली आ रही थी।

गाँव के लोग सरल, निडर और निष्कपट थे। उनका जीवन सहजता और आपसी विश्वास से भरा था। ये आगंतुकों का स्वागत करते, ज्ञानीजनों का बहुत आदर करते तथा प्रयोगधर्मी थे।

वसंत पंचमी का अवसर था। गाँव में उत्सव का वातावरण था। इसी दिन गाँव में कुछ बाहरी लोग आए। उन्होंने इससे पहले कभी इतनी सुदृढ़, सुंदर और बड़ी क्षमता वाली नाव नहीं देखी थी। उन्होंने बस बचपन से इस नाव की कथाएँ सुनी थी। जब उस नाव को साक्षात देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने विचार किया कि क्यों न इस नाव समेत इस पूरे गाँव पर ही अधिकार कर लिया जाए। परंतु इसके लिए आवश्यक था कि वे गाँव वालों का विश्वास जीते जिसके लिए उन्हें अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करनी पड़ेगी। उन्होंने एक युक्ति लगाई, गाँव वालों के समक्ष एक विकल्प प्रस्तुत किया-पत्तों से बनी एक बड़ी सी नई नाव।

वह नाव देखने में आकर्षक थी, परंतु थी कमजोर। पत्तों की नाव झटपट बन गई और उसका प्रचार भी प्रारम्भ हो गया पर उसके निर्माता दिन-रात उसकी सुरक्षा में ही लगे रहते, क्योंकि उसे धूप, हवा और नमी से भी भय था। अब उनको लगा कि ये निर्णय कुछ सही नहीं रहा परंतु फिर भी अब बात साख की थी तो वे उसकी प्रशंसा में कोई कमी नहीं रखते और गाँव वालों को उसके अद्भुत गुणों के किस्से सुनाते रहते।

गाँव के कुछ लोग कौतूहलवश इस नई वस्तु को देखने आते और कुछ उसके गुणगान सुनकर प्रभावित भी हो जाते। उन्हें लगता कदाचित यह कोई विशेष तकनीक से बना आधुनिक साधन है। जब भी कोई व्यक्ति उन आगंतुकों के पास इसके बारे में जिज्ञासा लेकर जाता कि वो इसकी सवारी करना चाहता है तो वे कहते- "यह एक अलौकिक नाव है और जब तक पूरे गाँव के लोग इस नाव पर एक साथ सवारी नहीं करेंगे, यह पानी में नहीं उतरेगी। आप अन्य लोगों को भी प्रेरित कीजिए जिससे यह कार्य अतिशीघ्र संभव हो सके।" इस प्रकार उस नाव का अत्यधिक बखान करते हुए उस व्यक्ति को भी नाव की सुरक्षा का दायित्व सौंप देते।

धीरे-धीरे और लोग इस दल से जुड़ने लगे। समय बीतता गया, पर नाव कभी पानी में नहीं उतर सकी क्योंकि लक्ष्य कठिन था।

कुछ समय पश्चात एक और समूह गाँव में नाव देखने आया। उन्होंने भी वो पुरानी लकड़ी की नाव देखी तो दाँतो तले उंगलिया दबा ली। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह बड़ी सी नाव कितनी सहजता से लोगों को उनके सामान और पशुओं सहित नदी पार करा रही है। उस दल को भी लोभ हुआ और उन्होंने भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने हेतु "नई" खोज प्रस्तुत की-कागज की नाव।

यह नाव आकार में और भी बड़ी थी और देखने में अत्यंत आकर्षक। उन्होंने भी उसी प्रकार उसका गुणगान प्रारम्भ कर दिया। गाँव के लोग कौतूहलवश उसे भी देखने जाने लगे और कई तो उसके प्रभाव में आकर उस दल का अंश भी बन जाते।

परंतु इस नाव के साथ भी वही नियम था-"जब तक पूरा गाँव तैयार नहीं होगा, यह नाव नहीं चलेगी।"

अब गाँव में दो नए दल बन गए-पत्तों वाली नाव के समर्थक और कागज की नाव के अनुयायी। दोनों ही अपनी-अपनी नाव की रक्षा में लगे रहते और दूसरों को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते। धीरे-धीरे यह प्रतिस्पर्धा विवाद में बदलने लगी।

गाँव के लोग, जो पहले एक-दूसरे के साथी थे, अब एक-दूसरे के विरोधी बनने लगे। भाई-बंधुओं में मतभेद और झगड़े होने लगे। कई बार ये दोनों दल आपस में भी भिड़ जाते, पर जैसे ही अन्य ग्रामीण सामने आते, वे बड़ी शांति का प्रदर्शन करते हुए अपनी-अपनी नाव का गुणगान करने लगते। वो ऐसा जताते कि वो सब परोपकार का कार्य कर रहे हैं, जिसमें उनका कुछ व्यक्तिगत लाभ नहीं बल्कि वे गाँव वालों का ही कल्याण चाहते हैं। उन सब को उस पुरानी नाव से सदा के लिए मुक्ति दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर चुके हैं।

गाँव के बड़े-बुजुर्ग, ज्ञानी-ध्यानी जन बार-बार समझाते, परंतु कुछ लोगों पर कौतूहल और भ्रम का जाल इतना गहरा था कि लोग उसमें फँसते चले गए।

इस बीच पुरानी लकड़ी की नाव बिना किसी दिखावे के, बिना किसी

प्रचार के, निरंतर अपना कार्य करती रही–लोगों को सुरक्षित पार उतारती रही।

जब पत्ते और कागज वाले दोनों दलों को लगा कि समय बहुत बीतता जा रहा है और इन नावों की सुरक्षा भी बहुत अधिक श्रमसाध्य है, जो अधिक समय तक खीचना संभव नहीं हो पाएगा। कुछ समय पश्चात हमारी श्रेष्ठता की पोल खुलने का भी डर है। तो ऐसे में दोनों दलों ने मिलकर तय किया कि हम अपने आपस के मतभेद भुलाकर एकजुट होकर कार्य करेंगे। पहले इस गाँव के लोगों का इस नाव से विश्वास–मुक्त करते हैं फिर हम आपस में तय कर लेंगे कि कौन श्रेष्ठ है। अब वे दोनों मिलकर पुरानी नाव में सौ–सौ कमियाँ निकालते और उसका उपहास उड़ाते। यद्यपि वे मन ही मन उसका गुणगान करते और लालसा रखते कि ये नाव हमारी हो जाए।

इस नई योजना से कुछ सफलता तो मिली पर लक्ष्य अभी भी दूर था। दोनों दलों ने चिंतन कर ये निष्कर्ष निकाला कि इसमें हमारी रणनीति की कमी नहीं बल्कि इस गाँव के ज्ञानी पुरुष दोषी हैं। उनका सम्मान गाँव वालों की दृष्टि में कम करना पड़ेगा। अब वो दोनों दल उन बूढ़े बुजुर्गों में दोष निकालकर गाँव में दुष्प्रचार करने लगे। इस कार्य में सबसे आगे गाँव के वे लोग होते जो अब इन दलों का अंग बन चुके हैं।

समय बीतने के साथ उनके अनुयायी भी थकने लगे। कई लोगों को यह अनुभव होने लगा कि वे एक व्यर्थ के कार्य में फँस गए हैं। ऐसे में कुछ लोग चुपचाप वापस लौटकर पुरानी नाव का सहारा लेने लगे। परंतु यह वापसी सरल नहीं थी–उन्हें धमकियाँ दी जातीं, रोका जाता, और कभी–कभी हिंसा भी होती। इस संघर्ष में कुछ लोगों ने अपने प्राण भी गँवा दिए।

ऋतु बदली। बसंत विदा हुआ और ग्रीष्म का आगमन हुआ। तेज हवाएँ चलने लगीं जो कभी–कभी आँधी जैसा रूप ले लेतीं। ऐसे समय में पत्ते और कागज की नाव के रक्षक भयभीत हो उठते, जबकि पुरानी नाव यथावत अपना कार्य करती रहती।

एक दिन भयंकर आँधी आई। वर्षा के साथ ओलों की वृष्टि होने लगी। गाँव वालों ने पुरानी नाव को किनारे बाँध दिया और अपने–अपने घरों को चले गए। उधर पत्ते और कागज की नावों की रक्षा में लोग पूरी शक्ति लगा रहे थे–छाते, कपड़े, हाथों से ढकने का प्रयास, पर हाय रे दैव! प्रकृति के प्रकोप के आगे किसकी चली है?

कुछ ही घंटों में सब समाप्त हो गया न पत्तों का नाम रहा, न कागज का कोई निशान। रात शोक और थकान में बीत गई।

अगली सुबह, जब सूरज की पहली किरण फैली तो गाँव का जीवन फिर उसी लय में लौट आया–बैलों की घंटियाँ, गायों का रंभाना, मुर्गों की बांग, बच्चों की किलकारियाँ और दैनिक गतिविधियों की चहल–पहल।

मल्लाह ने फिर पुरानी नाव की रस्सी खोली और लोगों को उसी सहजता से बैठा नदी में नाव उतार दी।

वह पुरानी लकड़ी की नाव आज भी वैसी ही थी– शांत, स्थिर और अपने कर्तव्य में अडिग।

उप प्रबंधक (एचएसई)
टीबीजी, नोएडा

बीएचईएल उत्पाद

डिजाइन की रेखाओं में छुपा विज्ञान,
मेटल में ढलता नव निर्माण।
CAD के नक्शों से निकलकर
हकीकत बनता हर उपकरण महान।।

टर्बाइन के रोटर का संतुलन सटीक,
RPM में छिपा शक्ति का संगीत।
भाप के दबाव से घूमता चक्र,
ऊर्जा बदलती–यांत्रिक से विद्युत।।

जनरेटर की वाइंडिंग में बहती धारा,
मैग्नेटिक फील्ड का अद्भुत इशारा।
फ्लक्स और वोल्टेज का संतुलन बनाकर
रोशन करता हर घर का नजारा।।

बॉयलर की भट्टी में ताप का खेल,
हीट ट्रांसफर का वैज्ञानिक मेल।
पानी से भाप, भाप से ऊर्जा
यही है प्रगति का असली खेल।।

अनिल कुमार मरकाम

ट्रांसफॉर्मर की कोर में लोहा गूँजे,
वोल्टेज ऊपर–नीचे सहज ही सूझे।
लॉस कम, दक्षता अधिक
तकनीक यहाँ हर सीमा को बूझे।।

क्वालिटी टेस्ट, इंस्पेक्शन कड़ा,
हर स्टेज पर नियंत्रण बड़ा।
मानकों पर खरा उतरे जो
वही उत्पाद बनता सबसे खरा।।

ये सिर्फ मशीन नहीं, विज्ञान का मान,
हर पुर्जे में छुपा देश का अभिमान।
तकनीकी शक्ति से बढ़ता भारत
यही है इंजीनियरिंग का सम्मान।।

अपर महाप्रबंधक (फैब्रिकेशन)
एचईपी, भोपाल

आलेख

आखिरी कॉल

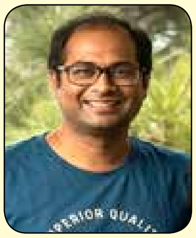

गौरव सिंह गंगवार

रवि एक छोटे शहर का लड़का था। सपने बड़े थे, लेकिन जेब हमेशा खाली रहती थी।

सुबह 5 बजे उठकर अखबार बाँटना, फिर दिन में नौकरी की तलाश और शाम को माँ की दवाइयों के लिए मेडिकल स्टोर के चक्कर – यही उसकी जिंदगी थी।

पिता का देहांत हुए 3 साल हो चुके थे। घर की पूरी जिम्मेदारी रवि के कंधों पर थी।

लेकिन हर इंटरव्यू के बाद वही जवाब मिलता – "We'll call you."

और वो कॉल कभी नहीं आता था....

सबके बीच उसकी जिंदगी में एक रोशनी थी – सिया।

कॉलेज के दिनों की दोस्ती और धीरे–धीरे उसकी दुनिया।

सिया हमेशा कहती,

'रवि, एक दिन सब ठीक होगा.... मैं हूँ ना तुम्हारे साथ।'

रवि मुस्कुरा देता, लेकिन अंदर से वो जानता था –

प्यार पेट नहीं भरता... और सपनों से दवाइयाँ नहीं खरीदी जाती।

एक दिन रवि को शहर की एक बड़ी कंपनी में इंटरव्यू का कॉल आया।

उस दिन उसने पहली बार खुद को आईने में देखा और कहा –

"आज अगर ये नौकरी मिल गई.... तो सब बदल जाएगा।"

इंटरव्यू अच्छा गया।

उसे लगा, इस बार शायद किस्मत साथ दे दे...

लेकिन उसी शाम घर पहुँचते ही उसे पता चला –

माँ की तबियत अचानक बिगड़ गई है।

हॉस्पिटल के बाहर बैठा रवि, फोन को बार–बार देख रहा था....

कंपनी का कॉल... अभी तक नहीं आया।

उसी वक्त सिया का मैसेज आया –

"रवि... मुझसे मिल सकते हो? जरूरी बात है।"

रवि भागते हुए उससे मिलने गया।

सिया की आँखों में आँसू थे....

"रवि, घर वाले मेरी शादी तय कर रहे हैं.... मैं अब और इंतजार नहीं कर सकती।"

रवि कुछ पल चुप रहा...

फिर हल्की मुस्कान के साथ बोला –

"तुम खुश रहना सिया... यही मेरे लिए काफी है।"

उस दिन उसने पहली बार अपने दिल को खुद ही तोड़ दिया...

रात को वापस हॉस्पिटल में,

माँ ICU में थीं... और फोन अभी भी खामोश।

थक कर वो कुर्सी पर ही सो गया...

सुबह नर्स ने आकर उसे जगाया –

'आपकी माँ अब नहीं रहीं...'

रवि की दुनिया वहीं खत्म हो गई...

उसी समय उसका फोन बजा।

स्क्रीन पर नाम था – "HR Department"

कांपते हाथों से उसने कॉल उठाया...

"Congratulations Ravi, you are selected..."

रवि हँस पड़ा...

इतना जोर से हँसा कि आसपास के लोग उसे देखने लगे...

उसने धीरे से कहा –

"अब किसके लिए...?"

लेकिन असली झटका अभी बाकी था...

कुछ दिनों बाद, रवि को सिया की शादी का कार्ड मिला।

वो कार्ड खोलते ही उसकी सांसें थम गईं...

दूल्हे का नाम था – "रवि शर्मा"

रवि चौंक गया...

तभी उसे याद आया –

सिया हमेशा उसे (होने वाले पति) को "रवि" कहती थी...

लेकिन उसका पूरा नाम कभी नहीं लिया...

वो शादी में गया... दूर खड़ा होकर सब देखता रहा...

मंडप में बैठा दूल्हा...

उसी कंपनी का HR मैनेजर था... जिसने उसे नौकरी दी थी।

शादी के बाद, सिया उसकी तरफ आई...

आँखों में आँसू थे...

रवि... मैंने तुम्हारे लिए ही ये फैसला लिया...

वो तुम्हें नौकरी दे सकता था... मैं नहीं...

रवि कुछ बोल नहीं पाया...

उसे उस दिन समझ आया –

कभी–कभी प्यार हारता नहीं...

बस खुद को कुर्बान कर देता है।

और सबसे बड़ा सच...

जिस "कॉल" का वो इंतजार कर रहा था....

वो उसकी जिंदगी बदलने नहीं...

उससे सब कुछ छीनने आया था।

कहानी खत्म... लेकिन दर्द नहीं।

वरिष्ठ प्रबंधक (स्टोर)
आईवीपी, गोइंदवाल

उत्पादकता

सुनील कुमार

सफलता और प्रगति का आधार:

आज 'उत्पादकता' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। अक्सर लोग उत्पादकता को 'व्यस्त रहने' के साथ मिला देते हैं, परन्तु वास्तव में उत्पादकता का अर्थ कम समय और कम संसाधनों में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करना है।

उत्पादकता का वास्तविक अर्थ:

उत्पादकता का अर्थ केवल अधिक काम करना नहीं है, बल्कि सही काम को सही तरीके से करना है। यदि आप दिन भर व्यस्त हैं लेकिन दिन के अंत में आपके पास दिखाने के लिए कोई ठोस परिणाम नहीं है, तो आप व्यस्त तो थे लेकिन उत्पादक नहीं। अर्थशास्त्र की दृष्टि में, यह इनपुट (समय, ऊर्जा, श्रम) और आउटपुट (परिणाम) के बीच का अनुपात है।

उत्पादकता=इनपुट/आउटपुट

उत्पादकता बढ़ाने के प्रमुख स्तंभ:

लक्ष्य निर्धारण: स्पष्ट लक्ष्यों के बिना ऊर्जा बिखर जाती है। जब हमें पता होता है कि हमें कहाँ पहुँचना है, तो हमारा मस्तिष्क उसी दिशा में कार्य करता है। इस प्रकार से वह काम बहुत ही सुगमता से होने लगता है। इसलिए उत्कृष्ट उत्पादकता के लिए लक्ष्य निर्धारण की अहम भूमिका होती है।

समय प्रबंधन: किसी भी काम को करने के लिए सबसे मुख्य बात यह होती है कि उस काम का सही से समय प्रबंधन हो। समय सबसे सीमित संसाधन है। 'पोमोडोरो तकनीक' या 'टाइम ब्लॉकिंग' जैसे तरीके कार्यों को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं। अन्य कई तरीकों से काम का समय प्रबंधन किया जा सकता है। यह किसी काम को करने के लिए महत्वपूर्ण होता है।

प्राथमिकता: 'पेरेटो सिद्धांत' (80/20 नियम) के अनुसार, हमारे 80% परिणाम केवल 20% महत्वपूर्ण कार्यों से आते हैं। उत्पादक व्यक्ति इन्हीं 20% कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। किसी भी कार्य के मुख्य घटक पर ध्यान केन्द्रित करने से बाकी के कार्यो में भी गति मिलती है। इसलिए कार्य की शैली में प्राथमिकता भी बहुत जरूरी है।

एकाग्रता: आज के डिजिटल युग में सूचनाओं की अधिकता सबसे बड़ी बाधा है। मल्टीटास्किंग के बजाय एक समय में एक ही काम करना उत्पादकता को 40% तक बढ़ा सकता है।

उत्पादकता में आने वाली बाधाएँ

टाल–मटोल: काम को कल पर टालना उत्पादकता का सबसे बड़ा शत्रु है। जब भी किसी कार्य में टाल–मटोल होता है तो निश्चय ही उस कार्य में आवश्यकता से अधिक बिलंब होना तय है। इसलिए काम में टाल–मटोल सबसे बड़ा बाधक है।

पूर्णतावाद: किसी काम को 'परफेक्ट' बनाने के चक्कर में उसे समय पर पूरा न कर पाना भी एक रुकावट है। संसार में कोई वस्तु हु–ब–हू बनाना मुश्किल है। इसलिए एकदम परफेक्ट के चक्कर में काम में देरी हो जाती है और कभी– कभी काम में त्रुटि भी हो जाती है। इस प्रकार से पूर्णतावाद भी किसी कार्य के लिए बाधक होता है।

तनाव और थकान: बिना आराम के लगातार काम करने से मस्तिष्क की कार्य क्षमता घट जाती है। जिसका प्रभाव काम पर दिखाई देता है। किसी काम में जब थकान महसूस हो तो उस काम के प्रति तनाव भी होने लगता है। जिससे काम पर बुरा असर देखने को मिलता है। इसलिए तनाव और थकान भी किसी कार्य के लिए बाधक है।

निष्कर्ष: उत्पादकता का अंतिम उद्देश्य केवल काम पूरा करना नहीं बल्कि समय बचाना है ताकि उस समय का उपयोग हम अपने परिवार, स्वास्थ्य और शौक आदि के लिए कर सकें। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें हमें हर दिन खुद को थोड़ा बेहतर बनाना होता है। जैसा कि कहा गया है– 'गुणवत्ता कभी इत्तेफाक नहीं होती, यह हमेशा बुद्धिमानी भरे प्रयासों का परिणाम होती है।'

आर्टिजन (टीयूएम– लाइट मशीन शॉप)
हीप, हरिद्वार

आलेख

विश्व शांति का मार्ग

डॉ. मधु सूदन व्यास

आज पूरी दुनिया में अशांति और अनिश्चितता का वातावरण है। रूस–यूक्रेन, इजराइल–फिलिस्तीन, चीन–अमेरिका इत्यादि लगभग इस विश्व का प्रत्येक देश किसी न किसी कारण से बाह्य या आंतरिक युद्ध से गुजर रहा है।

कहीं भुखमरी के कारण बुरा हाल है, तो कहीं महंगाई एवं अराजकता के कारण आम नागरिक का जीवन बहुत ही कष्टमय होता जा रहा है। आज के युग में जितनी भौतिक सुविधाएं बढ़ती जा रही हैं, उतने ही उसके गलत इस्तेमाल के कारण कठिनाइयाँ भी बढ़ती जा रही हैं।

अशांति का एक अन्य बड़ा कारण इस पूरे विश्व में धर्म को लेकर हमारी मान्यताएँ हैं। हमें बचपन से यही सिखाया जाता है कि हमारे धर्म में ये लिखा है और यही सही है, बाकी सब गलत है। और हम भी आँख मूंदकर लकीर के फकीर बनकर पूरी तरह पालन करते हैं, बिना जरा सा भी विचार किए कि जो हम कर रहे हैं क्या वह सही है और सत्य है तथा इसमें कुछ सुधार की गुंजाइश है या नहीं।

विज्ञान की प्रगति होने के नाते यह हमें भली–भांति ज्ञात है कि इस संसार में जीवन की शुरुआत कई करोड़ों वर्ष पहले हुई तथा मानव जाति को पूर्ण रूप से विकसित एवं अपने पूर्वज बंदरों से लेकर आज के इस रूप में आने में भी लाखों वर्ष लग गए एवं धर्मों को आए हुए अभी कुछ हजार वर्ष ही हुए हैं, पर हम अपने धर्म को ही सब कुछ मानते हैं, जबकि जिस परम शक्ति ने इस संसार में न सिर्फ मानव जाति बल्कि समस्त प्राणियों का सृजन किया एवं उनको पाला–पोसा, उसके बनाए हुए विधान एवं नियमों की अनदेखी कर रहे हैं, जिसके कारण आज यह अशांति छाई हुई है।

वास्तव में उस परम शक्ति के लिए सभी प्राणी एक समान हैं एवं सभी प्राणियों की कुछ न कुछ उपयोगिता है। अगर हम अपने स्वाद एवं स्वार्थ के लिए या कभी धर्म के नाम पर किसी निरीह प्राणी की बलि या कुर्बानी देते हैं, जिसे हमने नहीं बल्कि उस परमात्मा ने इस संसार में भेजा है, तो हम उस परम शक्ति की इच्छा के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं और उसी के परिणामस्वरूप मानव जाति का विनाश हो रहा है क्योंकि यह सिर्फ वह परम शक्ति ही है जो असंख्य तारों, सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा तथा जाने कितने ही ग्रहों को एक लय में चला रही है जिससे करोड़ों सितारे बिना एक–दूसरे से टकराए इस ब्रह्मांड में विचरण कर रहे हैं और वही परम शक्ति हमारे प्रत्येक कर्म का हिसाब–किताब रख रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है की हम अपने मन में विचार करें कि क्या हम जो कर रहे हैं वह सत्य है और यदि सत्य नहीं है तो अपनी संकीर्णताओं को छोड़कर जो सही है, वह करें। समस्त प्राणियों एवं मानव जाति को एक ही मानकर जन कल्याण की भावना से आगे बढ़ें। यह जीवन बहुत ही अनमोल है, इसको अच्छे कार्यों में लगाकर अपने मन में एवं इस पूरे विश्व में शंति को लाया जा सकता है।

अपर महाप्रबंधक (मेडिकल)
टीपी–झांसी

पिता की चादर

अस्मिता कुमारी

मेरे पिता ने मुझे नेह की चादर से ढाक रखा है,
मेरी उड़ानों के लिए अपने पंख काट रखे हैं,
गुड़िया, पतंगे और खिलौनों से मेरा घर सजा रखा है।
मेरे पिता ने मुझे नेह की चादर से ढाक रखा है।

जिम्मेदारियों का कितना भी हो बोझ,
मुझे अपने कंधों पे चढ़ा रखा है,
उन्हें लोभ नहीं मेरे पैसों से, बस मुझे काबिल बना रखा है।
मेरे पिता ने मुझे नेह की चादर से ढाक रखा है।

अपने आँगन की फुलवारी को, अंतिम देहरी पुजवा रहे जो
मेरे उमड़े आँसू पे, बदहवास से दौड़ पड़े जो;
देकर बिदाई मुझे अपने क्यों आँसू छिपाए रखे हैं।
मेरे पिता ने मुझे नेह की चादर से ढाक रखा है।

अब हो चली है उम्र, फिर भी बच्चा बना रखा है,
वह पुरानी कहानियाँ, कपड़े, गहनों और मिठाइयों से
मेरा बचपन बचाए रखा है।
जी नहीं करता उस दहलीज को पार करने का,
जिसने मेरी अस्मिता बचाए रखी है।

स्वयं रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है जो,
मेरे कर्मों को अपना स्वाभिमान बनाए रखा है।
मेरे जीवन के अंधेरों को खुद में समेट,
मुझे आसमां का सूरज–चाँद बना रखा है।
ये दुनिया मुझे कहती है सिरफिरी,
क्या करूँ मेरे पिता ने मुझे सरताज बना रखा है।।

पत्नी– श्री आशीष कुमार गुप्ता
प्रबंधक (ओएस वेंडर)
एचपीबीपी, त्रिची

प्रौद्योगिकी

तरुणेंद्र कुमार तिवारी

प्रौद्योगिकी ज्ञान और विज्ञान का एक संगम है जो मानवता के लिए व्यावहारिक उद्देश्यों, समस्याओं को हल करने या कार्यों को आसान बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

मानव द्वारा पहिए के निर्माण से लेकर आज के स्मार्ट फोन तक ये सब प्रौद्योगिकी की ही देन है इसमें उपकरण, मशीनें, सिस्टम और प्रक्रियाएं शमिल होती हैं जो मानव जीवन को तेज, सरल, प्रभावी एवं आधुनिक बनाती हैं।

आज इंटरनेट के समय में साइकिल से लेकर फाइटर जेट तक, रेल से लेकर बुलेट ट्रेन तक सब कुछ प्रौद्योगिकी की ही देन है। प्रौद्योगिकी की वजह से ही आज सम्पूर्ण विश्व में हर क्षेत्र में नित नई परिकल्पनाएं देखने को मिलती हैं।

प्रौद्योगिकी मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करती है जिसका वर्णन निम्नलिखित है, जैसेः–

मेडिकलः– आज मेडिकल साइंस में एम आर आई जांच से लेकर रोबोटिक सर्जरी एआई रोबोटिक्स, वियरेबल्स और टेलीमेडिसिन जैसे उपकरणों, सॉफ्टवेयर और प्रणालियों का उपयोग, 3–डी प्रिटिंग के माध्यम से कृत्रिम अंग, ये सब आज प्रौद्योगिकी की ही देन है।

शिक्षाः– शिक्षा में भी आज जितने भी स्मार्ट क्लासेस हो या ऑनलाइन क्लास हो ये सब प्रौद्योगिकी की वजह से ही सम्भव हो पाया है। आज स्मार्ट फोन से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक सब कुछ प्रौद्योगिकी की वजह से ही सम्भव हो पाया है। तकनीकी प्रगति जीवन को सुविधाजनक और कुशल बना देती है। डिजिटल साइन, लैपटॉप, टैबलेट, गूगल, क्लास रूम वर्चुअल रियालिटी, कोडिंग, ई–पुस्तकें आज ये सब कुछ प्रौद्योगिकी की ही देन है।

सुरक्षाः– आज जितने भी सुपरसोनिक, क्रूज, मिसाइलें, सटीक लक्ष्य, एटोमिक हथियार, ड्रोन, लेजर गाइडेड हथियार, बुलेट प्रूफ जैकेट, उन्नत टैंक, पनडुब्बी, एयर डिफेंस सिस्टम, सैटेलाइट जो भी देखने को मिल रहे हैं वो सब प्रौद्योगिकी की वजह से ही सम्भव हो पाया है।

इसरोः– एक समय वो भी था जब इसरो के वैज्ञानिकों ने उपकरणों को साइकिल पर ले जाकर अपनी मिसाइलों का परीक्षण किया था, आज वो भी समय है कि जब हमारे वैज्ञानिकों ने दिन–रात कड़ी मेहनत करके नये–नये प्रयोग करके नित नई तकनीकों की स्थापना की एवं आज हम अपने देश के साथ–साथ दूसरे देशों के सैटेलाइटों का प्रक्षेपण करने का कार्य करते हैं एवं अपनी कमियों को दूर करके चंद्रयान–3 जैसे कार्यों को पूरी सफलता के साथ कर रहे हैं।

आज बीएचईल के सभी कर्मचारियों को बहुत गर्व होता है कि हम जिस संस्थान में कार्य कर रहे हैं वो हमारा बीएचईल भी इसरो की कई परियोजनाओ में प्रमुख भागीदार रहा है, चाहे वो सोलर पैनल हो, लीथियम आयन बैटरी या पीएसएलवी टैंकों के लिये तकनीक हो। अन्य कई परियोजनाओं में भी प्रमुख भागीदार रहा है। ये सब प्रौद्योगिकी की वजह से ही सम्भव हो पाया है।

परिवहनः– परिवहन के क्षेत्र में पहिए की खोज से लेकर आज तक की बुलेट ट्रेनें ये सब प्रौद्योगिकी की ही देन हैं। "आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है" आने वाले समय में हाइपर लूप तकनीक पर काम चल रहा है जिसमें एक ट्यूब के अंदर चुम्बकीय रूप से ट्रेनों को दौड़ाया जायेगा, जिसकी स्पीड लगभग बारह सौ किलोमीटर प्रतिघंटा होगी, ये सब कुछ प्रौद्योगिकी से ही सम्भव है।

निष्कर्षः– पूरी दुनिया में प्रतिदिन नये–नये इनोवेशन हो रहे हैं। आने वाले समय में मंगल ग्रह या किन्ही अन्य ग्रहों में भी मानव जीवन को बसाया जायेगा। नई तकनीकों को जो नहीं अपनाते या समय के साथ नहीं बदलते समय उनको बदल देता है।

जैसेः– नोकिया का फोन पहले हर आदमी की पहली पसंद था लेकिन जब फोन का मार्केट एंड्रोयड सॉफ्टवेयर में शिफ्ट हुआ तब भी नोकिया विंडो फोन बना रहा था और आज नोकिया का हाल सबको पता है। इसलिए समय के साथ नई प्रौद्योगिकी को अपनाना जरुरी ही नहीं आज की आवश्यकता भी है।

उप अपर अभियंता (टीएसडी)
एचईपी, भोपाल

"हर अच्छे, श्रेष्ठ और महान कार्य में तीन चरण होते हैं, प्रथम – उसका उपहास उड़ाया जाता है, दूसरा चरण – उसे समाप्त या नष्ट करने की हद तक विरोध किया जाता है और तीसरा चरण है, स्वीकृति और मान्यता। जो इन तीनों चरणों में बिना विचलित हुए अडिग रहता है, वह श्रेष्ठ बन जाता है और उसका कार्य सर्वस्वीकृत होकर अनुकरणीय बन जाता है।"

सुरक्षा संबंधी आलेख

मन की सुरक्षाः हेलमेट की भूमिका

दिनेश कुमार

सुरक्षा का अर्थ केवल शारीरिक स्वास्थ्य से नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और सुरक्षा की भावना से भी जुड़ा होता है। आजकल, जब हम सड़कों पर चलते हैं या वाहन चलाते हैं, तो हेलमेट का उपयोग हमारे लिए सिर्फ एक वस्तु नहीं रह जाता बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच बन जाता है, जो हमें अनचाही दुर्घटनाओं से बचाने के साथ ही हमारे आत्मविश्वास और मानसिक शांति को भी बढ़ाता है।

हेलमेटः शारीरिक सुरक्षा का प्रतीक

हेलमेट सिर को चोटिल होने से बचाने का सबसे प्रभावी साधन है। सड़क पर बाइक या साइकिल चलाते समय, सिर पर लगने वाली चोटें सबसे खतरनाक होती हैं। एक छोटी सी गलती या अचानक से होने वाली दुर्घटना बड़े नुकसान का कारण बन सकती है। हेलमेट के उपयोग से सिर की सुरक्षा होती है, जिससे गंभीर चोटें और दुर्घटनाएं काफी हद तक रोकी जा सकती हैं। लेकिन यह सुरक्षा केवल शारीरिक सुरक्षा तक सीमित नहीं रहती, हेलमेट पहनने से मन में भी एक सुरक्षा की भावना पैदा होती है, जो हमें सड़क पर अधिक आत्म–निर्भर और आश्वस्त बनाती है।

मानसिक सुरक्षा और ध्यान

हेलमेट पहनने का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह हमारी मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। जब हम जानते हैं कि हमने सभी जरूरी सुरक्षा उपाय किए हैं, तो हमारा ध्यान बेहतर तरीके से कार्य करता है। हेलमेट की सुरक्षा से हमें एक मानसिक सुकून मिलता है, जिससे हम सड़क पर होने वाली घटनाओं के प्रति अधिक सजग और सतर्क रहते हैं। इसके विपरीत, बिना हेलमेट के सवारी करने पर अक्सर लोगों को चिंता और तनाव का सामना करना पड़ता है, खासकर जब सड़कों पर भीड़–भाड़ और खतरनाक स्थितियाँ हों। हेलमेट हमारी सुरक्षा को सुनिश्चित कर हमें मानसिक शांति और ध्यान देने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

हेलमेट पहनने में आने वाली चुनौतियाँ

हालांकि हेलमेट सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके साथ कुछ समस्याएँ भी जुड़ी होती हैं। एक आम समस्या यह है कि हेलमेट पहनने से आसपास की आवाजें कम सुनाई देती हैं। खासकर, पीछे से आने वाले वाहनों की आवाज़ सुनाई न देने के कारण सवारी को रास्ता देने में कठिनाई होती है। यह स्थिति न केवल सवारी के लिए परेशानी का कारण बनती है, बल्कि सड़क पर दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ा देती है। इस चुनौती का समाधान करने के लिए आवश्यक है कि हेलमेट के डिजाइन में सुधार किया जाए।

हेलमेट में संशोधन हेतु सुझाव

इस समस्या का एक संभावित समाधान यह हो सकता है कि हेलमेट के दोनों कानों के पास के आवरण को पूरी तरह से पैक न किया जाए। इसके बजाय, वहां जालीदार संरचना बनाई जा सकती है, जो बाहरी आवाज़ों को स्पष्ट रूप से सुनने में मदद कर सके। ऐसी जालीदार संरचना, जो सुरक्षा को प्रभावित किए बिना आवाज़ें सुनने में सक्षम हो, सवार को आसपास के परिवेश से जोड़कर रखेगी और सड़क पर सुरक्षा को बेहतर बनाएगी। यह सुधार न केवल दुर्घटनाओं के खतरे को कम करेगा बल्कि सड़क पर अन्य वाहनों के साथ बेहतर समन्वय की सुविधा भी प्रदान करेगा।

व्यक्तिगत अनुभवः मेरी दुर्घटना

मैं खुद एक दुर्घटना का शिकार हो चुका हूं, और यह अनुभव मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा सबक था। उस समय मैंने हेलमेट नहीं पहना था, और आज मैं यह सोचता हूं कि यदि मैंने हेलमेट पहना होता, तो शायद मैं गंभीर चोटों से बच सकता था। इस दुर्घटना ने मुझे हेलमेट की महत्ता का गहराई से एहसास कराया। एक छोटा सा सुरक्षा कदम, जो शायद कुछ लोगों को असुविधाजनक लगता हो, वास्तव में जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर साबित हो सकता है। यह अनुभव मुझे हर दिन याद दिलाता है कि सुरक्षा के मामले में कभी कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

मानसिक सुरक्षा का महत्व

सड़क पर दुर्घटनाएँ अक्सर शारीरिक चोटों के साथ मानसिक आघात भी लेकर आती हैं। कई लोग दुर्घटनाओं के बाद मानसिक रूप से असुरक्षित और चिंतित महसूस करते हैं। यदि व्यक्ति हेलमेट पहनकर दुर्घटनाओं से बच जाता है, तो मानसिक धक्का कम होता है और आत्मविश्वास बनाए रहता है। एक अच्छा हेलमेट केवल शारीरिक सुरक्षा ही नहीं बल्कि मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है, जिससे व्यक्ति खुद को और अपने परिवार को सुरक्षित महसूस करता है।

हेलमेट पहनना : खुद से प्रेम का प्रतीक

हेलमेट केवल एक सुरक्षा उपकरण ही नहीं है बल्कि यह हमारी स्वयं की देखभाल और जिम्मेदारी का प्रतीक भी है। हेलमेट पहनना न केवल हमारी सुरक्षा को सुनिश्चित करता है बल्कि यह हमारे परिवार और प्रियजनों के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी दर्शाता है, जो हमारी सलामती के लिए चिंतित रहते हैं।

इसलिए हेलमेट न केवल शारीरिक सुरक्षा का साधन है बल्कि यह मानसिक सुरक्षा और आत्म–संवेदनशीलता का भी प्रतीक है। हेलमेट के डिज़ाइन में छोटे–छोटे सुधार जैसे जालीदार संरचना जोड़कर इसे और अधिक उपयोगी और सुरक्षित बनाया जा सकता है। इस प्रकार, हम सभी मिलकर हेलमेट पहनने को एक आदत बना सकते हैं और अपने जीवन के साथ–साथ अपनी मानसिक सुरक्षा को भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

उप अपर अभियन्ता (टीआरपी)
टीपी, झांसी

समय के साथ जीवन का अनुभव

रोहित मिश्रा

समय और जीवनः

जीवन किसी पूर्व–निर्धारित पटकथा की तरह नहीं है बल्कि यह एक कोरे कागज की तरह है जिस पर हमारे अनुभव हर दिन अपनी कहानी लिखते हैं। अक्सर हम दूसरों की सफलता देखते हैं लेकिन उस सफलता के पीछे छिपे व्यक्तिगत अनुभवों के कड़वे और मीठे स्वाद को केवल वही व्यक्ति समझ सकता हैं जिसने उसे जीया है।

जीवन का अनुभव हमें सिखाता हैं कि कठिनाइयाँ केवल हमें मज़बूत बनाने के लिए आती हैं, न कि हराने के लिए। जब मैं अपने जीवन के सबसे कठिन दौर से गुजर रहा था, तब मैंने सीखा कि हार मानना आसान है, लेकिन संघर्ष करके जीत हासिल करना बहुत मुश्किल है। लेकिन व्यक्तिगत विकास के लिए, हमेशा सकारात्मक रहना, नई चीजें सीखना और अपने कमियों पर काम करना जरूरी है जिससे जीवन सभी कठिनाइयों में अपने अनुभवों के सहारे दिन प्रतिदिन प्रगति की राह पर निरन्तर आगे बढ़ सकें।

"जीवन में अनुभव किताबों से नहीं,
बल्कि हालातों से मिलता है।"

असफलता–सबसे बड़ी शिक्षक है:

मेरे जीवन का एक सबसे महत्वपूर्ण अनुभव मेरी विफलता थी। उस समय लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया लेकिन आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो समझ आता है कि उस हार ने मुझे धैर्य और लचीलापन सिखाया। अनुभव एक कठोर शिक्षक है क्योंकि पहले वह परीक्षा लेता है और बाद में पाठ सिखाता है।

असफलता के प्रति दृष्टिकोण कैसे बदलें?

जीवन के सफर में हर व्यक्ति सफलता का सपना देखता है लेकिन इस मार्ग में असफलता एक अनिवार्य पड़ाव है। अक्सर लोग असफलता को अंत मान लेते हैं जबकि वास्तव में यह एक नई शुरुआत और सीखने का सबसे प्रभावी माध्यम है।

असफलता वह कड़वी दवा है जो भविष्य की जीत के लिए हमें स्वस्थ और मजबूत बनाती है। यह हमें जीवन के वास्तविक मूल्यों, रिश्तों और संघर्षों की गहराई समझाती है। यदि हम असफलता से सीखने का साहस रखते हैं, तो दुनिया की कोई भी ताकत हमें शिखर तक पहुँचने से नहीं रोक सकती।

"याद रखें, असफल होना शर्मनाक नहीं है,
परन्तु असफलता से न सीखना हार की असली निशानी है।"

मौन की शक्तिः

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में हमने खुद से बात करना बंद कर दिया है। एक बार मुझे उत्तराखंड की चार धाम यात्रा के दौरान खुद को समझने का मौका मिला और मौन की शक्ति का अनुभव भी हुआ। उस शांति ने मुझे अहसास कराया कि हमारे भीतर के शोर को शांत करने के लिए बाहरी शोर को बंद करना कितना जरूरी है।

मौन का अर्थ और स्वरूपः

मौन दो प्रकार के होते हैं–शारीरिक और मानसिक। शारीरिक मौन का अर्थ है चुप रहना जबकि मानसिक मौन का अर्थ है विचारों की लहरों को शांत करना। असली शक्ति "आंतरिक मौन" में छिपी है। जिसे कठोर साधना के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

"जितना अधिक अनुभव,
उतनी अधिक समझ और उतनी ही बेहतर जीवन जीने की कला।"

रिश्तों की गहराईः

अनुभव सिखाता है कि रिश्ते समय मांगने से नहीं बल्कि समय देने से गहरे होते हैं। जब हम किसी के बुरे वक्त में उसके साथ खड़े होते हैं, तो वह अनुभव हमें ''मानवता'' का वास्तविक अर्थ समझाता है।

किसी भी गहरे रिश्ते की नींव विश्वास और सम्मान पर टिकी होती है। विश्वास वह कांच है, जो एक बार टूट जाए तो दरारें हमेशा के लिए रह जाती हैं। वहीं, सम्मान का अर्थ केवल शब्दों में आदर नहीं, बल्कि एक-दूसरे की सीमाओं और व्यक्तिगत विचारों को महत्व देना है। जब हम किसी का सम्मान करते हैं, तो हम उनके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, न कि उन्हें बदलने की कोशिश करते हैं।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर रिश्तों को भूला देते हैं। केवल साथ रहना काफी नहीं है। संवाद की कमी रिश्तों में दूरियां पैदा कर देती हैं। अपनी भावनाओं को ईमानदारी से व्यक्त करना और दूसरे की बातों को निष्पक्ष सुनना ही गहरे जुड़ाव का माध्यम है।

अनमोल विचारः

यहाँ कुछ ऐसे विचार हैं जिन्होने मेरे जीवन के दृष्टिकोण को बदला हैः–

समय – 'वक्त सबको मिलता है जिंदगी बदलने के लिए, पर जिंदगी दोबारा नहीं मिलती वक्त बदलने के लिए।'

परिस्थितियों का निर्माता – मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं बल्कि उनका स्वामी होता है, यह सोच ही हमें आगे बढ़ाती है।

स्वयं पर विश्वास – "खुद पर विश्वास रखें क्योंकि दुनिया आप पर विश्वास करें या न करें, यह आपका जीवन है आपको खुद ही आगे बढ़ाना है।"

कर्म का महत्व – जिस प्रकार हीरे को लगातार घिसने पर ही निखार आता है उसी प्रकार लगातार अभ्यास और मेहनत ही सफलता का मार्ग बनता है।

अहंकार का पतन – अहंकार ही इंसान का सबसे बड़ा शत्रु है, जो उसे सफलता से विमुख करता है।

"हर समस्या में एक अवसर छिपा होता है,
बस उसे देखने का नज़रिया होना चाहिए।"

निष्कर्ष : अनुभव ही जीवन का सार हैः

जीवन के सभी छोटे-बड़े अनुभव चाहे वह किसी अजनबी की मदद करना हो या किसी कठिन निर्णय का सामना करना; हमें परिपक्व बनाते हैं। ज्ञान किताबों से मिल सकता है, लेकिन बोध केवल अनुभवों से ही आता है।

जीवन के इन अनुभवों से मैंने सीखा है कि हर स्थिति में, चाहे वह सुख हो या दुःख, हमें मुस्कुराते हुए जीना चाहिए। सकारात्मक जीवन जीने की कला खुद हमारे हाथों में होती है। जरूरत केवल हमें हर स्थिति में खुद को सत्य मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ाते रहना होगा।

"आप अपने जीवन में सही समय को खोजिए,
अन्यथा आपको जीवन का सही मार्ग नहीं मिलेगा।"

आर्टीजन (एम एण्ड एस इंटरनल ट्रांसपोर्ट)
एचपीईपी, हैदराबाद

सतत ऊर्जा समाधान

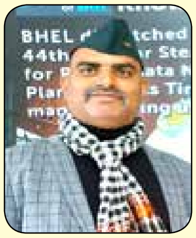

लोकेन्द्र प्रकाश बिजल्वाण

सतत ऊर्जा समाधान, एक स्थायी भविष्य बनाने के लिए संयुक्त सामाजिक प्रयास या यूं कहें कि अब एक वांछनीय आवश्यकता है जो कि ऊर्जा दक्षता, संसाधन संरक्षण और लचीलेपन को प्राथमिकता देने वाले अभिनव समाधानों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। ये समाधान नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन और जलविद्युत, हाइड्रोजन आदि पर निर्भर करते हैं जो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और प्राकृतिक रूप से पुनः पूर्ति होते रहते हैं जिससे टिकाऊ ऊर्जा का लक्ष्य जैसे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना, जलवायु परिवर्तन से निपटना और ऊर्जा के सतत उपयोग को बढ़ावा देना है और आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित कल का निर्माण करने में मदद करती हैं।

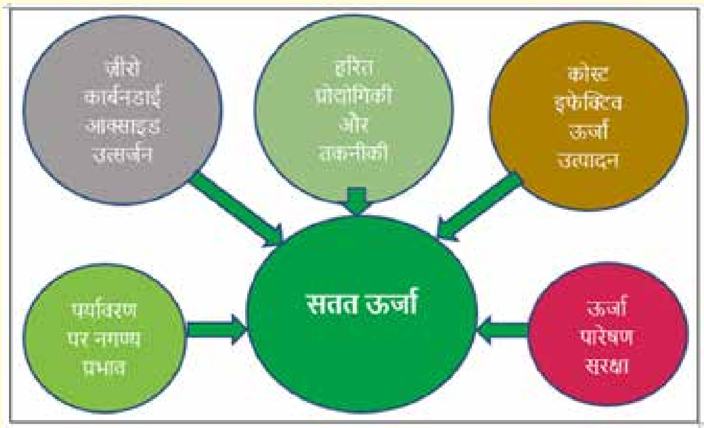

सतत ऊर्जा समाधान के प्रमुख पहलू:

सतत ऊर्जा समाधान, एक बहुआयामी सोच या विचार है जिसमें विभिन्न तरीकों से ऊर्जा के सतत उपभोग, उपयोग को इस प्रकार बढ़ाने की दिशा में कार्य करना है जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना, आर्थिक और सामाजिक समानता को ध्यान में रखते हुए ऊर्जा की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा किया जा सके। यह एक लगातार चलने और विकसित होने वाली प्रक्रिया है। इसके कुछ पहलुओं का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

1. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का व्यापक, समुचित और जिम्मेदार उपयोगः

सौर, पवन और जलविद्युत ऊर्जा जैसे स्रोत जो कभी खत्म नहीं होते और प्राकृतिक रूप से फिर से भर जाते हैं उनका अधिकाधिक प्रयोग करना और कोयला और पेट्रोलियम जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करना जिससे भावी पीढियों के लिए भी आधारभूत ऊर्जा स्रोतों के रूप में इनकी उपलब्धता रहे। भारत इस दिशा में बहुत तेजी से विकास कर रहा है। वर्ष 2014 में जहाँ कोयला आधारित ऊर्जा करीब 65 प्रतिशत के आस पास थी वहीं आज 2025 में यह करीब 50 प्रतिशत रह गयी है। वहीं 2014 में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी करीब 30 प्रतिशत थी जिसमें जल विद्युत ऊर्जा की हिस्सेदारी ही अधिक थी (करीब 80%) आज सौर और पवन ऊर्जा के साथ तकरीबन 50% की हिस्सेदारी रखती है, जो भारत की सतत ऊर्जा के क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर ज्यादा निर्भरता की ओर शिफ्ट को रेखांकित करता है।

2. ऊर्जा दक्षता को बढ़ाने पर जोरः

नई और ज्यादा कुशल तकनीकों का प्रयोग, ऊर्जा की खपत को कम करना और ऊर्जा के उपयोग को अधिक कुशल बनाना, जिससे कि ऊर्जा उत्पादन पर दबाव को घटाया जा सके अथवा अतिरिक्त ऊर्जा को अन्यत्र उपयोग में लाया जाय। उच्च प्रदर्शन (हाई परफॉर्मेंस) इंसुलेटर, ऊर्जा क्षय को बचाने के लिए एचवीडीसी (HVDC) पारेषण, इमारतों को ठंडा और गर्म करने के लिए आवश्यक ऊर्जा को कम करने के लिए उन्नत इन्सुलेशन सामग्री और ऊर्जा–कुशल खिड़कियों का उपयोग किया जाता है।

इमारतों को बिजली देने के लिए सौर पैनलों का उपयोग किया जा सकता है जिससे ग्रिड बिजली पर निर्भरता कम होती है। इमारतों को पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ बनाने के लिए जैव जलवायु डिज़ाइन तकनीकों और प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग किया जा सकता है जिससे कुछ मामलों में शीतलन की आवश्यकता भी समाप्त अथवा कम हो जाती है। ऊर्जा–कुशल, इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) उपकरणों का उपयोग, ऊर्जा प्रबंधन का उपयोग करते हैं और मांग के आधार पर ऊर्जा के उपयोग को समायोजित करते हैं, जिससे ऊर्जा की बर्बादी कम होती है। पारंपरिक लाइटों की तुलना में एलईडी (LED) लाइटें बहुत कम ऊर्जा खपत करती हैं और लंबे समय तक चलती हैं, जिससे बिजली की खपत में काफी बचत होती है। वहीं ऊर्जा–कुशल उपकरण जैसे एनर्जी स्टार–रेटेड उपकरण ऊर्जा की खपत को कम करते हैं जबकि उत्पादकता बनाए रखते हैं जिससे लागत में बचत होती है। भारत में एकीकृत आवास मूल्यांकन के लिए हरित रेटिंग (GRIHA), ऊर्जा दक्षता, जल उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन और आंतरिक पर्यावरण गुणवत्ता का मूल्यांकन करती है और भारत की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अपने मानदंड बनाती है। IGBC, विभिन्न प्रकार की इमारतों के लिए रेटिंग प्रदान करता है, जो भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सतत विकास को बढ़ावा देती है।

3. स्मार्ट ग्रिडः

पारंपरिक पावर ग्रिड में डिजिटल तकनीक शामिल करना, जिससे ऊर्जा उपयोग/उपभोग अथवा ग्रिड की वास्तविक समय (रियल–टाइम) पर निगरानी, प्रबंधन और नियंत्रण किया जा सके। स्मार्ट ग्रिड में स्मार्ट मीटर, सेंसर और उन्नत संचार नेटवर्क शामिल होते हैं जो हर लोकेशन के हिसाब से ऊर्जा की जरूरत, उपलब्धता और आउटेज को देखता और बिग डेटा बनाता है, जिससे ऊर्जा आपूर्ति और मांग को बेहतर ढंग से योजित और प्रबंधित किया जाता है। इस कार्य के लिए डिजिटल

तकनीकों, सेंसरों और सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है, स्मार्ट मीटर्स नेशनल प्रोग्राम (SMNP) और उजाला (UJALA) योजनाएं इन सभी तकनीकों को उपयोग के अंतिम बिन्दु से डाटा देने का कार्य करती हैं। यह पारंपरिक, एकतरफ़ा ग्रिड से भिन्न है, क्योंकि यह दो–तरफ़ा संचार और डेटा प्रवाह को सक्षम बनाता है जिससे लागत कम होती है, विश्वसनीयता बढ़ती है और नवीकरणीय ऊर्जा के एकीकरण को बढ़ावा मिलता है।

4. ऊर्जा संरक्षण, एक अनिवार्य आवश्यकता:

ऊर्जा संरक्षण सतत् ऊर्जा समाधान का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि हम चाहे कितनी ही ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करें ऊर्जा संरक्षण न होगा तो ऊर्जा की कमी लगातार बनी रहेगी और भावी पीढ़ियों के लिए हम कुछ नहीं बचा पाएंगे। इस संरक्षण में उपयोग न होने पर उपकरणों को बंद करना, धूल साफ करना, ऊर्जा–कुशल उपकरणों का उपयोग करना, पैदल अथवा साइकिल पर चलना, सार्वजनिक परिवहन के साधनों का प्रयोग करना जैसे सरल कार्य शामिल होते हैं जिनसे हर कोई व्यक्ति किसी न किसी रूप में ऊर्जा संरक्षण में सहभागी हो सकता है।

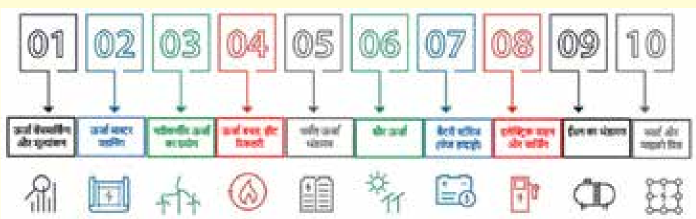

सतत ऊर्जा समाधान के चरण

5. कार्बन उत्सर्जन में कमी, तभी तो बचेगी जमीं:

जैसा की हम अब तक जान गए हैं कि सतत ऊर्जा समाधान का हर एक पहलू आपस में एक दूसरे के साथ बड़ी घनिष्टता से जुड़ा हुआ है और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना भी इसी लंबी श्रृंखला की एक और महत्वपूर्ण कड़ी है। कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लिए सर्वप्रथम हमारा ऊर्जा स्रोत जीवाश्म ईंधनों से हट कर नवीनीकृत ऊर्जा स्रोतों की तरफ शिफ्ट होना चाहिए। इसके अलावा सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करना, उत्सर्जन के नए और कड़े मानकों को लागू करना, पैदल चलना और साइकिल चलाना, कम कार्बन वाला आहार अपनाना, खाने की बर्बादी रोकना, ई वेस्ट को कम करना, केवल जरूरत की और अच्छी गुणवत्ता की खरीददारी करना और पुनर्चक्रण जैसी चक्रीय अर्थव्यवस्था की आदतों को अपनाना आवश्यक है। कार्बन को सोखने के लिए अधिक वृक्षारोपण, कार्बन ऑफसेटिंग जैसे नए माध्यमों से नेट कार्बन उत्सर्जन को शून्य की तरफ ले जाना आदि कुछ महत्वपूर्ण तरीके हो सकते हैं।

6. ऊर्जा भंडारण:

ऊर्जा भंडारण का अर्थ है– "भविष्य में उपयोग के लिए ऊर्जा को संग्रहित करना" जैसे कि ऊर्जा स्रोतों से उत्पन्न बिजली को बाद में उपयोग के लिए बैटरी में संग्रहित करना और आवश्यकता अनुसार वापस प्रयोग के लिए उपलब्ध करवाना। जैसे–सौर ऊर्जा मुख्यतः दिन में उपलब्ध होती है और पवन ऊर्जा संयंत्रों को ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों में स्थापित किया जाता है जहाँ तेज हवाएँ चलती हैं, जैसे कि पहाड़ियों पर या तटीय इलाकों में। ऊर्जा भंडारण इन स्रोतों के उपलब्ध होने पर ऊर्जा को संग्रहित करके उन अवधियों में भी ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है जब ये स्रोत उपलब्ध नहीं होते हैं। पंप–हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्लांट (PSP), लिथियम–आयन बैटरियां, संपीड़ित–वायु ऊर्जा भंडारण (CAES) और हाइड्रोजन भंडारण, ऊर्जा भंडारण, इसके कुछ उदाहरण हैं।

बदलाव की कोशिशें:

सरकारी स्तर पर, सरकारें छोटे उपभोक्ताओं को नवीकरणीय ऊर्जा खरीदने की अनुमति देने और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने जैसी नीतियों को लागू कर रही हैं। सोलर रूफ टॉप बिजली सयंत्र, सोलर कुकर, सोलर वॉटर, सोलर चलित पंप सेट, हीटर आदि को खरीदने के लिए अनुदान भी सरकारों द्वारा दिया जाता है। नेट शून्य कार्बन उत्सर्जन की तरफ बढ़ने की कोशिश के लिए नई नीतियाँ (जैसे– पेट्रोल में एथेनोल ब्लेंडिंग), नए मानक (भारत–VI उत्सर्जन मानक) और प्रोत्साहन (ग्रीन बोनस) दिये जाते हैं।

व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर: उपयोग में न होने पर लाइट और उपकरणों को बंद करें। परिवहन के टिकाऊ तरीके जैसे– साइकिल चलाना, पैदल चलना या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, ISI प्रमाणित और ऊर्जा कुशल उपकरणों का उपयोग करें। जागरूकता; सतत ऊर्जा समाधान के लिए एक बहुत बड़ा हथियार है, "लाइफ स्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (Life)" जैसे मिशनों के माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाने को बढ़ावा देना, जैसे कार्य हम व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर कर सकते हैं। इनके अलावा ऊर्जा संरक्षण पर कर्मचारियों को शिक्षित करने से वे ऊर्जा दक्षता लक्ष्यों में योगदान करने के लिए सशक्त होते हैं जिससे अधिक टिकाऊ और लागत–प्रभावी संचालन संभव होता है। इको–औद्योगिक पार्क जैसे नए विचार जिनमें एक उद्योग का अपशिष्ट दूसरे के लिए कच्चा माल बन सकता है जिससे सामग्री और ऊर्जा दक्षता में सुधार होता है।

सतत् ऊर्जा समाधान के लाभ:

सतत् ऊर्जा समाधान यद्यपि आज मुश्किल, महंगे और अनिश्चित जरूर लगते हैं, परंतु ये भविष्य के लिए आवश्यक हैं। इन समाधानों के माध्यम से व्यक्ति, संस्थान, देश और समस्त विश्व निम्नलिखित लाभ प्राप्त करता है अथवा कर सकता है:

1. **लागत बचत:** ऊर्जा की खपत कम करने से ऊर्जा लागत में कमी आती है जिससे उपभोक्ताओं और व्यवसायों दोनों के लिए वित्तीय बचत होती है। सतत टिकाऊ ऊर्जा सेवाओं में निवेश और हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

2. **पर्यावरणीय स्थिरता:** कोयला और पेट्रोलियम जैसे ऊर्जा स्रोतों के कम प्रयोग से और ऊर्जा दक्षता में सुधार से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम होता है और प्रदूषण का स्तर भी घटता है जिससे अधिक टिकाऊ भविष्य को बढ़ावा मिलता है। यह जलवायु

परिवर्तन के प्रभावों (बढ़ता तापमान, हीट वेव, पानी की कमी, स्वास्थ्य प्रभाव) को कम करता है और पर्यावरण की रक्षा होती है।

3. **ऊर्जा सुरक्षाः** नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग और ऊर्जा दक्षता में सुधार जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करता है जिससे ऊर्जा सुरक्षा और ग्रिड की विश्सनीयता बढ़ती है।

4. **सामाजिक समानताः** सतत ऊर्जा समाधानों तक सभी लोगों की पहुंच सुनिश्चित करना, सतत विकास लक्ष्य 7 (SDG7) का हिस्सा है जिसकी तरफ हम तेजी से अग्रसर हैं।

बीएचईएल सतत् ऊर्जा समाधान उपलब्ध करवाने हेतु सदा प्रतिबद्ध है। हम सोलर और रूफ टॉप सोलर, जलविद्युत और पंप स्टोरेज हाइड्रो मशीनों के लिए एंड टु एंड सॉल्युशन उपलब्ध कराते हैं। प्रदूषण और उत्सर्जन नियंत्रण के लिए नई और बेहतर तकनीक अपने कोयला आधारित संयंत्रों में प्रयोग करते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन के माध्यम से हमने चार वर्षों (2014–15 से 2017–18) के दौरान लगभग 43500 मीट्रिक टन CO_2 के समतुल्य कार्बन फुटप्रिंट को हटाया। वर्तमान में हम ग्रीन हाइड्रोजन, अपशिष्ट प्रबंधन और वाटर ट्रीटमेंट जैसे क्षेत्रों में कार्य करके अपने मिशन में उल्लिखित "ऊर्जा, उद्योग और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में टिकाऊ व्यावसायिक समाधान प्रदान करना" अर्थात "Providing sustainable business solution in the field of energy, industry and infrastructure" को चरितार्थ कर रहे हैं।

"अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर ऊर्जा के स्थायी समाधान को अपनाएं–न केवल एक आवश्यकता के रूप में बल्कि एक जिम्मेदारी के रूप में। आज लिया गया एक छोटा कदम, कल के लिए हरित भविष्य की नींव बन सकता है।"

अपर अभियंता (हाइड्रो व्यापार समूह)
पीएसबीजी–II, नोएडा

कुसुमाकर

ओस नहाये ठिठुरन ओढ़े, जाने को है शिशिर लजाकर
नवरंग पहने, नवपल्लव संग, नवकुसुमित आया कुसुमाकर
बहके चहके पंख पखेरू, बौराई सी पवन चले
चीर कुहासा, बाल किरण लो झांके फिर से गगन तले
स्वर्णिम आस करें गलबहियाँ, आलिंगन अनजाने ही
स्मित मंद अधर पर लेकर स्वागतमय हो नयन ढले
राह तके ऋतुराज मदन का, आँगन बंदनवार सजाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर
ठिठक गई तन की अंगड़ाई, अभिवादन की आहट से
मन की जकड़न हुई दूर फिर मौसम की गरमाहट से
खुले द्वार, परदे, वातायन नूतन पवन बुलाने को
फेंक रजाई, मफलर, स्वेटर, मुक्त हुई अकुलाहट से
चलो चलें, घूमें मनचाहे, मनपतंग के पंख लगाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर

दिनेश कुमार परते

संबंधों की चादर झीनी, लगता साथी मीत नया सा
वही पुरातन अमराई पर, कूजनिका का गीत नया सा
कहां बदलते सरगम के स्वर, राग–वाद्य–संवाद पुराने
हृदय तारसप्तक है झंकृत, रोम रोम संगीत नया सा
मनभाये मधुमास मनोहर, रागबसंती तान सुनाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर
ताशे, ढोल, पखावज, डमरू, बाजे चंग–मृदंग कहीं
पुंगव पुष्ट मुष्टिका भींचे, खींचे डोर तुरंग कहीं
कलरव तांडव धरा–गगन में, दिग दिग नाद–निनाद भरा
झूमे मोर चकोर कहीं पर, नाचे मस्त मलंग कहीं
छटा देख विस्मित हैं सारे, नभ तारागण चंद्र दिवाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर

अपर महाप्रबंधक (टीएनसी एवं टीएनएफ)
टीपी, झांसी

तकनीकी आलेख

बीएचईएल में क्वालिटी सर्कल्सः औद्योगिक उत्कृष्टता की एक विरासत

विनय कुमार सविता

बीएचईएल को आज भी भारत में क्वालिटी सर्कल'' (QC) अभियान के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है। देश की सबसे बड़ी बिजली उपकरण निर्माता कंपनी के रूप में बीएचईएल ने इस जापानी प्रबंधन अवधारणा को अपनी औद्योगिक संस्कृति का एक मौलिक हिस्सा बना दिया है।

उत्कृष्टता का सफरः नींव से शिखर तक :–

भारत में QC अभियान की शुरुआत 1980 में हैदराबाद स्थित बीएचईएल की रामचंद्रपुरम इकाई से हुई थी। **तत्कालीन महाप्रबंधक–ऑपरेशंस श्री एस. आर. उदपा के नेतृत्व और तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के. एल. पुरी** के सक्रिय समर्थन के साथ, बीएचईएल जापानी क्वालिटी सर्कल मॉडल को लागू करने वाला पहला भारतीय संगठन बना।

इस सफल पायलट प्रोजेक्ट के कारण 1982 में **क्वालिटी सर्कल फोरम ऑफ इंडिया (QCFI)** की स्थापना हुई। चार दशकों से अधिक समय तक इस अवधारणा को जीवंत बनाए रखने के लिए बीएचईएल की सराहना की जाती है। यह कुछ पायलट प्रोजेक्ट्स से बढ़कर 1,200 से अधिक सक्रिय सर्कल्स तक पहुँच चुका है, जिसमें हजारों कर्मचारी शामिल हैं। वर्ष 2026 तक, QCFI एक वैश्विक शक्ति बन चुका है, जिसने हाल ही में 12,000 से अधिक प्रतिभागियों के साथ सम्मेलनों की मेजबानी कर विश्व रिकॉर्ड बनाया है।

क्वालिटी सर्कल क्या है?

क्वालिटी सर्कल (QC) एक ही कार्य क्षेत्र के कर्मचारियों का एक छोटा समूह (आमतौर पर 3 से 6 सदस्य) होता है, जो स्वेच्छा से और नियमित रूप से काम से संबंधित समस्याओं की पहचान करने, विश्लेषण करने और उन्हें हल करने के लिए मिलते हैं। 1960 के दशक की शुरुआत में जापान में जन्मी यह अवधारणा इस दर्शन पर आधारित है कि फ्रंटलाइन कर्मचारी अपने विशिष्ट कार्यों के बारे में सबसे अधिक जानकार होते हैं और सुधार के सुझाव देने के लिए सबसे उपयुक्त स्थिति में होते हैं।

विस्तृत उद्देश्य और लक्ष्य :–

क्वालिटी सर्कल का मुख्य लक्ष्य कर्मचारी भागीदारी के माध्यम से संगठनात्मक उत्कृष्टता प्राप्त करना है।

- **गुणवत्ता और उत्पादकताः** त्रुटि और बाधाओं को दूर कर उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना और परिचालन दक्षता बढ़ाना।
- **लागत में कमीः** अपव्यय (waste) और दोबारा काम (rework) से जुड़ी समस्याओं को हल कर परिचालन लागत को कम करना।
- **कर्मचारी विकासः** नेतृत्व, समस्या–समाधान और संचार कौशल विकसित कर कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और आत्म–बोध को संतुष्ट करना।
- **ग्राहक संतुष्टिः** उत्पाद, डिजाइन और विश्वसनीयता में सुधार करके बीएचईएल के प्रति विश्वास और ग्राहकों का भरोसा जीतना।

उद्योगों में क्वालिटी सर्कल कैसे काम करते हैं?

क्वालिटी सर्कल एक व्यवस्थित संगठनात्मक संरचना के माध्यम से संचालित होते हैं:

- **संचालन समितिः** वरिष्ठ अधिकारी जो नीति निर्धारण और प्रमुख सिफारिशों को मंजूरी देते हैं।
- **सुविधादाताः** अधिकारी जो समूहों और प्रबंधन के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।
- **सर्कल लीडरः** सदस्यों द्वारा चुना गया व्यक्ति जो बैठकों का नेतृत्व करता है और यह सुनिश्चित करता है कि चर्चाएँ कार्य–केंद्रित और उत्पादक बनी रहें। सर्कल सदस्यों के बीच एक प्रभावी कड़ी।
- **सर्कल उप–लीडरः** बैठकों के सफल आयोजन, कार्य–सूची तैयार करने और टीम को एकजुट रखने में लीडर की पूरी मदद करना। लीडर की अनुपस्थिति में समूह का नेतृत्व करना और यह सुनिश्चित करना कि समस्या–समाधान की प्रक्रिया या बैठकें रुकने न पाएं।
- **सदस्यः** कर्मचारी जो तकनीकी या प्रक्रियात्मक मुद्दों को हल करने के लिए अपने दैनिक अनुभव का उपयोग करते हैं।

क्वालिटी सर्कल की 12–चरणीय समस्या समाधान प्रक्रियाः–

ये 12 चरण क्वालिटी सर्कल द्वारा कार्यस्थल की समस्याओं को सुलझाने के लिए उपयोग की जाने वाली एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। यह डॉ. जोसेफ जुरान के सिद्धांतों और PDCA (Plan-Do-Check-Act) चक्र पर आधारित है।

यहाँ इन 12 चरणों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

1. **समस्या की पहचानः** टीम के सदस्य अपने कार्यक्षेत्र से जुड़ी सभी संभावित समस्याओं (जैसे– खराबी, देरी या बर्बादी) की एक सूची बनाते हैं।

2. **समस्या का चयनः**'पेरेटो चार्ट' जैसे टूल का उपयोग करके, टीम सबसे महत्वपूर्ण समस्या को चुनती है जिसे पहले हल करने की आवश्यकता है।

3. **समस्या की परिभाषाः** समस्या को स्पष्ट और मापने योग्य शब्दों में लिखा जाता है।

4. **समस्या का विश्लेषणः** समस्या कितनी बार और कहाँ हो रही है, इसे समझने के लिए वर्तमान डेटा और तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है।

5. **कारणों का पता लगानाः** फिशबोन डायग्राम का उपयोग करके उन सभी संभावित कारणों पर विचार किया जाता है जिनकी वजह से समस्या हो सकती है।

6. **मूल कारण विश्लेषणः** तकनीक का उपयोग करके समस्या की गहराई तक पहुँचा जाता है ताकि असली जड़ (Root Cause) का पता चल सके।

7. **कारण–वार डेटा विश्लेषणः** पहचाने गए कारणों की पुष्टि करने के लिए डेटा का विश्लेषण किया जाता है कि कौन सा कारण समस्या के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है।

8. **समाधान का विकासः** टीम समस्या को दूर करने के लिए विभिन्न उपाय सोचती है और सबसे प्रभावी व किफायती समाधान चुनती है।

9. **संभावित प्रतिरोध का अनुमानः** यह देखा जाता है कि नए बदलाव को लागू करने में क्या मुश्किलें या विरोध आ सकते हैं और उन्हें दूर करने की योजना बनाई जाती है।

10. **परीक्षण कार्यान्वयन और जांचः** समाधान को छोटे स्तर पर लागू करके देखा जाता है कि वह सही ढंग से काम कर रहा है या नहीं।

11. **नियमित कार्यान्वयनः** परीक्षण सफल होने के बाद, प्रबंधन की अनुमति से इसे पूरी तरह लागू किया जाता है और नए नियम (SOP) बनाए जाते हैं।

12. **अनुवर्ती कार्रवाई/समीक्षाः** समाधान लागू होने के बाद समय–समय पर उसकी जांच की जाती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि समस्या दोबारा पैदा न हो।

बीएचईएल क्वालिटी सर्कल की 2025–2026 की उपलब्धियांः –

- **वैश्विक मान्यता (2025):** नवंबर 2025 में ताइपे (ताइवान) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (ICQCC-2025) में हरिद्वार, भोपाल, त्रिची और हैदराबाद सहित बीएचईएल की आठ इकाइयों ने स्वर्ण पुरस्कार (Gold Awards) जीते।
- **राष्ट्रीय उत्कृष्टताः** दिसंबर 2025 में नोएडा में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन (NCQC) में, बीएचईएल भोपाल के 'STM क्वालिटी सर्कल नंबर 631, CIM क्वालिटी सर्कल नंबर 685, PRM क्वालिटी सर्कल नंबर 713", को प्रतिष्ठित **'पार एक्सीलेंस अवार्ड'** से सम्मानित किया गया।

सहायक अभियंता (डिजाइन)
एचईपी, भोपाल

हाथी की बारात

हाथी की बारात है आई, पूड़ी साग बना है।
ढ़ोल नगाड़ो की मस्ती से, जंगल जाग गया है।।
चूहे आज बाराती बनकर, उछल–उछल कर नाचे।
शेर–सियारों ने भी लगाए, मिलकर खूब ठहाके।।
गिलहरी ने हलवे में से, चुन–चुन काजू खाए।
सींग उठाकर गेंडे ने भी, ठुमके खूब लगाए।।
दरयाई घोड़ा जा सोया, लड्डू–बर्फी खाकर।
बंदर–बिल्ली के चमके चेहरे, नान तंदूरी पाकर।।
भैंसा बैठा कुर्सी पर काफी की लेता चुस्की।
नाच–नाचते भालू की पतलून थोड़ी सी खिसकी।।

दीपा कुमारी

जिम जाते जिराफ ने केवल दो फुल्के ही खाए।
वो देखो पतलून को पकड़े भालू भागा जाए।।
विदा हुई हथिनी ने जो मम्मी का नाम लिया है।
हाथी ने आगे बढ़कर हथिनी को थाम लिया है।।
खुशी के आँसू लिए आँख में हथिनी चल दी पीछे।
सोच रही चींटी हाथी के रथ को कैसे खींचे।।
पैदल ही चल दिये खुशी से हँसते–हँसते गाते।
जीवन की शुरुआत नयी ले, घर के रस्ते जाते।।

पत्नी–श्री भगत सिंह
अभियंता (वाणिज्य एफबी)
एचपीबीपी, त्रिची

अरुणिमा के 38वें अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कृत कर्मचारी

अरुणिमा के प्रत्येक अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट 15 रचनाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने वाले रचनाकारों का चयन निर्णायक मंडल द्वारा किया जाता है। अरुणिमा के 38 वें अंक में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखकों का विवरण इस प्रकार है:–

अरुण सक्सेना
अभियंता
सीएफपी, रुद्रपुर
मणि कैलाश यात्रा : एक संस्मरण
प्रथम

अरविन्द कुमार पांडे
उप प्रबंधक
टीबीजी, नोएडा
कच्चा घर और इकोसिस्टम
द्वितीय

दीपक कुमार पांडे
वरिष्ठ अभियंता
टीपी, झांसी
मिट्टी और अपशिष्टः एक अदृश्य पारिस्थितिक संघर्ष
द्वितीय

दिनेश कुमार सोनी
सहा. अधिकारी
एचईपी, भोपाल
भाषाई उदारता आखिर किस सीमा तक
तृतीय

आशुतोष कुमार वर्मा
अभियंता
पी.एस.बी.जी.–I, नई दिल्ली
विकसित भारत / 2047 में नागरिकों की भूमिका
तृतीय

आँचल चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक
पीईएम, नोएडा
ग्रीन हाइड्रोजनः कैसे पर्यावरण को स्वच्छ करेगा
तृतीय

मनीष कुमार देव
वरिष्ठ प्रबंधक
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली
बचपन की मस्ती
प्रशंसा

रोशन आरा
उप अभियंता
आरओडी लखनऊ
नारी–खुद का सम्मान हो तुम
प्रशंसा

दीप्ति सिंह
पत्नी–श्री विजय प्रताप सिंह चौहान
अपर इंजीनियर
पीईएम, नोएडा
जीवन की खुशी
प्रशंसा

सानिया
पुत्री–श्री रामदेव प्रसाद यादव
प्रशासनिक अधिकारी कॉर्पोरेट कार्यालय
क्यों?
प्रशंसा

अभिषेक कुमार सिंह
प्रबंधक
एसएसटीपी, तिरुची
गजल
प्रशंसा

विशाखा जैन
वरिष्ठ प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
मन, कर्म, और समर्पणः मेरी आत्मयात्रा
प्रशंसा

डॉ. उमाशंकर शिल्पी
वरिष्ठ सलाहकार (चिकित्सा)
हीप, हरिद्वार
प्री–डायबिटीज क्या है
प्रशंसा

रमेश कुमार बहल
प्रबंधक, कॉर्पोरेट कार्यालय
हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर में बीएचईएल की इंजीनिरिंग उत्कृष्टता
प्रशंसा

शशि रंजन
वरि. अभियंता
कॉर्पोरेट कार्यालय
समुद्र मंथन
प्रशंसा

नौ इंजीनियर, दो फोल्डर और एक मेट्रो – दिल्ली विजय की हास्यगाथा

संजीव कुमार भारद्वाज

वर्ष 2009... जब न स्मार्टफोन थे, न गूगल मैप और हमारी "इंजीनियरिंग इंटेलिजेंस" सिर्फ किताबों तक सीमित थी! मैं अलीगढ के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ रहा था। तभी एक प्रतिष्ठित कंपनी ने हमें – कुल 9 होनहार (और थोडे भोले) छात्रों को–दिल्ली में लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के लिए बुलाया।

हम सब पहली बार "दिल्ली विजय" पर निकले थे

सुबह 5 बजे हम लोकल ट्रेन में चढ़े। ट्रेन में भीड़ ऐसी थी कि अगर कोई छींक भी दे तो तीन लोग "ब्लेस यू" कह दें! दूध वालों का साम्राज्य अलग ही था–उनके दूध के टैंक ऐसे रखे थे जैसे वो ट्रेन नहीं, डेयरी प्लांट हो। हमें बैठने की जगह नहीं मिली।

तभी मेरे अंदर का कलाकार जाग गया। मैंने फिल्मी अभिनेताओं की मिमिक्री शुरू की–कभी अमिताभ बच्चन, कभी धर्मेंद्र, और बीच–बीच में अपने कॉलेज के प्रोफेसरों की भी नकल कर दी (जो कि सबसे ज्यादा हिट रही।)

डिब्बे में ठहाके गूंजने लगे। एक दूध वाले ने कहा–"भाई, तू इंजीनियरिंग छोड़, फिल्म लाइन में जा।" और फिर हमें बैठने की जगह भी मिल गई। उस दिन समझ आया–"टैलेंट कहीं भी काम आ सकता है।"

दिल्ली पहुँचते ही अगली परीक्षा–मेट्रो में–

हम सब मेट्रो स्टेशन पर ऐसे खड़े थे जैसे कोई स्पेसशिप पकड़ने आए हों। टिकट मशीन को देखकर लगा कि ये एटीएम का चचेरा भाई है।

हमारे एक मित्र, जिन्होंने जीवन में एक बार मेट्रो देखी थी, अचानक हमारे "नेता" बन गए। उन्होंने बड़े आत्मविश्वास से कहा– "मेरे पीछे आइए!"

हम सब उनके पीछे ऐसे चल पड़े जैसे बारात में बैंड के पीछे लोग चलते हैं।

मेट्रो में चढ़े, सीट मिली नहीं, लेकिन एसी की ठंडी हवा ने दिल खुश कर दिया। हम सब इधर–उधर देखकर ऐसे मुस्कुरा रहे थे जैसे विदेश यात्रा पर हों।

थोड़ी देर बाद हमारे "लीडर" ने धीरे से कहा–"यार... लगता है हम गलत दिशा में जा रहे हैं।"

हम सबका चेहरा एक साथ ऐसा हो गया जैसे परीक्षा में "आउट ऑफ सिलेबस" सवाल आ गया हो।

अगले स्टेशन पर उतरकर, उल्टी दिशा की मेट्रो पकड़ी। इस बार हमने स्टेशन का नाम तीन बार चेक किया–"कन्फर्म है ना?"

आखिरकार हम कंपनी पहुँचे–

अब बारी थी रिसेप्शन पर बात करने की। रिसेप्शनिस्ट मैडम फर्राटेदार अंग्रेजी में बात कर रही थीं और हम... "यस–नो–ओके" के आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।

फिर से मुझे आगे कर दिया गया–"तू ही कर ले।"

मैंने पूरी हिम्मत जुटाकर कहा–"मैडम... वी आर फ्रॉम अलीगढ़... इंटरव्यू... व्हेयर?"

उन्होंने मुस्कुराकर कहा–" कृपया प्रतीक्षा कक्ष में बैठिए"

हमने एक–दूसरे को देखा–"लगता है पास हो गए, समझ गईं।"

वेटिंग एरिया में कुछ छात्र बैठे थे–सूट–बूट में, आत्मविश्वास से भरे। जब पूछा तो पता चला–"IIT Delhi" और अन्य बड़े कॉलेजों से थे।

हमने मन ही मन सोचा–"चलो भाई, दिल्ली घूमने का अनुभव तो मिल ही गया!"

हम साधारण कपड़ों में थे, और इंटरव्यू के लिए अच्छे कपड़े बैग में थे। तो सभी 9 लोग वॉशरूम में घुस गए कपड़े बदलने।

अंदर का दृश्य ऐसा था जैसे "ग्रुप चेंजिंग रूम" हो।

तभी दो–तीन कंपनी के कर्मचारी अंदर आ गए... और हमें आधे कपड़ों में देखकर ठिठक गए। एक ने तो धीरे से कहा–"लगता है ये लोग इंटरव्यू नहीं, फैशन शो में आए हैं।"

खैर, हमने जल्दी–जल्दी कपड़े बदले और बाहर आए।

अब आया असली ट्विस्ट–लिखित परीक्षा का रिजल्ट।

घोषणा हुई... और हम सभी 9 के 9 चयनित!

अब इंटरव्यू की बारी और एक नई समस्या–फोल्डर केवल दो!

फिर शुरू हुआ "ऑपरेशन फोल्डर मैनेजमेंट"–

एक अंदर जाता, दूसरा बाहर फोल्डर में अपने कागज लगाकर तैयार। जैसे ही पहला बाहर आया–फोल्डर हैंडओवर!

यह प्रक्रिया इतनी स्मूथ थी कि अगर कोई देख ले तो समझे–"ये लोग पहले से प्रैक्टिस करके आए हैं।"

एक बार तो ऐसा हुआ कि इंटरव्यूअर ने पूछा–"आपका फोल्डर वही है ना जो पिछले कैंडिडेट का था?"

हमारे दोस्त ने मुस्कुराकर कहा–"सर, कंपनी में रिसोर्स शेयरिंग सीख रहे हैं।"

इंटरव्यूअर भी हँस पड़े।

यह पूरा सफर किसी कॉमेडी फिल्म से कम नहीं था–

थोड़ी घबराहट, थोड़ा आत्मविश्वास, ढेर सारी दोस्ती और भरपूर जुगाड़!

आज भी जब हम उस दिन को याद करते हैं तो हँसी अपने आप आ जाती है।

इंजीनियरिंग सिर्फ किताबों से नहीं, जिंदगी के ऐसे "प्रैक्टिकल्स" से पूरी होती है।

प्रबंधक (गुणवत्ता सामग्री)
हीप, हरिद्वार

आलेख

रफ्तार का शोर और एक माँ का अंतहीन इंतजार

तेजराम देशमुख

वह आज भी रोजाना अपने बच्चों के लिए मुंह में भोजन लिए ऑफिस के दरवाजे पर आती है। उसकी आँखों में एक उम्मीद होती है और गले में एक करुण पुकार... उसे नहीं पता कि जिन बच्चों के लिए वह भोजन लाई है, उन्हें 'इंसानी रफ्तार' ने मिट्टी में मिला दिया है। वह माँ आज भी पुकारती है, पर उत्तर देने वाला सन्नाटा अब गहरा चुका है।

दोस्तों, जीवन जीने का हक सबको है और सबमें एक ही आत्मा बसती है, ऐसा लगता है। जैसे यह दर्शन अब केवल किताबों तक ही सीमित रह गया है बीएचईएल भोपाल में विगत 15 वर्षों के अपने कार्यकाल के दौरान मैंने न जाने कितनी ही बार चमचमाती चौड़ी सड़कों पर गिलहरियों, कुत्ते–बिल्लियों, पक्षियों और उनके मासूम बच्चों को कुचली हुई (मृत) अवस्था में पाया है। यह सब हमारी अनियमित जीवनशैली और समय–प्रबंधन की लापरवाही का परिणाम है। ड्यूटी पर पहुँचने के अंतिम क्षणों में "पंच" छूट जाने का डर और घर जल्दी पहुँचने की हमारी बेतहाशा होड़, बेजुबानों के लिए काल बन जाती है। यह केवल 'सड़क दुर्घटनाएँ' नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक संवेदनहीनता का जीवंत प्रमाण हैं।

हमारे विभाग में 'मीना' (एक बिल्ली) पिछले कुछ वर्षों से रह रही है। ऑफिस का दरवाजा खुलते ही वह अंदर आती और दिन भर हमारे साथ रहती है। उसके डिपार्टमेंट में आने से अब चूहों का आतंक समाप्त हो चुका है। उसने गत अक्टूबर 2025 में पाँच बच्चों को जन्म दिया था। उसके लिए पूरी दुनिया उसके वो पांच बच्चे ही थे। वह कुछ दिनों तक उन्हें असुरक्षा के डर से अपने मुंह में उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती रही। आखिर वह भी एक माँ है! उसका वह हर कदम उन नन्हे पंजों को बचाने की एक जद्दोजहद थी। किन्तु जब उसे भरोसा हो गया कि उसके बच्चे यहाँ सीईई विभाग में महफूज हैं तब वो निश्चिंत होकर बाहर जाने लगी। वे नन्हें मेहमान दो महीनों तक पूरे विभाग की जान बने रहे! कभी कुर्सी पर चढ़ते, तो कभी टेबल के नीचे लुका–छिपी खेलते। इन नन्हें मेहमानों की वजह से विभाग के गलियारों में पिछले दो महीनों से एक अनोखा दृश्य देखने को मिलता था।

हमारे विभाग में महिला कल्याण समिति से श्रीमती शिवानी बैनर्जी जी कार्यरत हैं। उनके और इस बिल्ली के परिवार के बीच का लगाव देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे इनका पिछले जन्मों का कोई गहरा और रूहानी रिश्ता हो।

पिछले दो महीनों से शिवानी मैडम का एक नियम था–अपने घर की पाली हुई बिल्ली की तरह ही वे रोज घर से एक बोतल में दूध भरकर लातीं और इन पाँच नन्हें बच्चों और उनकी माँ के लिए पौष्टिक भोजन का प्रबंध करतीं। दफ्तर की व्यस्तताओं के बीच भी उन बेजुबानों के लिए उनका यह वात्सल्य किसी 'ईश्वरीय दूत' से कम नहीं था। साथ ही डिपार्टमेंट के लोग भी उन बेजुबानों को हर प्रकार से अपना प्यार बाँट रहे थे।

बच्चे अब बड़े हो रहे थे, और बाहर की दुनिया देखने हेतु खिड़की से झाँकने की कोशिश करने लगे थे। देखते ही देखते वह दिन भी आया जब वे खिड़की से कूदकर बाहर जाने लगे। सभी बच्चे एक साथ बाहर जाते थोड़े समय तक खेलते और फिर उनकी माँ उन्हे डांट–फटकार कर वापस अंदर ले आती। समय यूं ही बीतता गया। लेकिन अब वे सड़क पार कर अनेक्सी के आसपास यहाँ वहाँ घूमकर मस्ती करने लगे थे। एक शाम, जब माँ शिकार की तलाश में बाहर गई हुई थी, बच्चे एक–एक कर सड़क पार कर रहे थे। तभी एक तेज रफ्तार कार ने एक बच्चे को कुचल दिया। उसने मौके पर ही बिना चीखे–चिल्लाए दम तोड़ दिया! माँ लौटी, तो एक बच्चे की अनुपस्थिति ने उसे विचलित कर दिया। वह जोर–जोर से उसे पुकारने लगी किन्तु उसे नहीं पता था कि वो नन्हीं जान इस दुनिया से कोसों दूर जा चुकी है। वह चिंतित थी। माँ तो माँ होती है, अब वह अपनी पूरी ममता व समर्पण के साथ शेष चार बच्चों को बचाने की जद्दोजहद करने लगी।

किन्तु, वह नहीं जानती थी कि जिस 'सभ्य' प्रजाति के बीच उसने शरण ली है, उनकी मशीनी रफ्तार उसकी ममता से कहीं ज्यादा बेरहम है। कुछ दिनों में ही एक–एक कर, उन सभी मासूमों को सड़क पर दौड़ती कारों ने कुचल दिया। सड़क पर बिखरा वह खून सिर्फ उन बिल्लियों का नहीं था, बल्कि उस 'मानवता' का था जो हम अक्सर भाषणों में बघारते हैं। क्या उन कार चालकों को एक पल के लिए भी महसूस नहीं हुआ

कि उनके टायर के नीचे किसी का पूरा संसार उजड़ रहा है?

मैं देखता हूँ कि आज भी वह मां, जो अब केवल यादों के बोझ तले दबी है, कहीं से अपने मुंह में भोजन लेकर आती है और ऑफिस के दरवाजे से अंदर आते हुये अपने बच्चों को पुकारती है। कुछ समय बाद वह परेशान होकर बैठ जाती है। शायद उसे नहीं पता कि जिन बच्चों के लिए वह भोजन लाई है, वे उससे कोसों दूर जा चुके हैं। वह आज भी इसी उम्मीद में है कि शायद कोई नन्हा पंजा उसकी ओर बढ़ेगा। उसे माँ कहकर पुकारेगा और वो उसे पुचकारते हुये गले लगा लेगी। उसकी आँखों में बेतहाशा उम्मीदे हैं और एक अनकहा दर्द भी।

श्रीमती शिवानी बनर्जी जैसे लोग, जिनका हृदय आज भी उन मासूमों के लिए व्यथित है, हमें याद दिलाते हैं कि सुरक्षा का असली अर्थ 'संरक्षण' है।

'उस मां की पुकार में वह सवाल छिपा है, जिसका उत्तर किसी भी ''शिक्षित'' इंसान के पास नहीं है– आखिर उन मासूमों का कसूर क्या था?'

हम अक्सर कहते हैं कि मनुष्य दुनिया की सबसे समझदार प्रजाति है। लेकिन क्या समझदारी का अर्थ केवल मशीनें बनाना और रफ्तार बढ़ाना है? यदि हम अपने आसपास के बेजुबान जीवों के प्रति संवेदनाएं खो चुके हैं तो हम केवल एक ''चलती–फिरती मशीन'' बनकर रह गए हैं। क्या हम इतने संवेदनहीन हो गए हैं कि हमें नन्हें बेजुबान जानवरों की पुकार भी सुनाई नहीं देती?'

कभी–कभी मैं सोचता हूँ कि यदि यही हादसा किसी इंसान के बच्चों के साथ होता, तो क्या तब भी इसे महज एक 'दुर्घटना' कहकर भुला दिया जाता? आत्मा तो सबमें एक ही है, फिर दर्द का पैमाना अलग–अलग क्यों?

जरा इस तस्वीर पर गौर कीजिये, एक मां का अपने बच्चों के साथ इस तरह बेफिक्र होकर सोना, उस सुरक्षा और प्रेम को दर्शाता है जिसे बाहरी दुनिया की क्रूरता ने छीन लिया। यह तस्वीर अब उस बेजुबान मां के 'अपार दर्द' और 'अंतहीन पुकार' की एक मूक गवाह बनकर रह गई है।

'कल तक जो बाहें ममता से भरी थीं, आज वो सूनी हैं। रफ्तार की सनक ने एक मां का संसार उजाड़ दिया। उनकी यह तस्वीर अब सिर्फ एक याद है।

आपको नहीं लगता कि जब हम अपनी हाई–स्पीड कारों और गाड़ियों के नीचे इन मासूमों को कुचलकर बिना रुके आगे बढ़ जाते हैं, तो हम केवल एक जीव को नहीं मारते, बल्कि प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का गला घोंट देते हैं। क्या हम इतने गैर–जिम्मेदार हो गए हैं कि हमें अपने अलावा किसी और के अस्तित्व से कोई सरोकार नहीं रह गया? प्रगति का अर्थ विनाश नहीं होना चाहिए।

अब सवाल यह उठता है कि क्या सड़क पर चलते हुए इन नन्ही जानों के लिए हमारी कारों में कोई ब्रेक नहीं है? क्या ''तरक्की'' ने हमें इतना अंधा कर दिया है कि हमें किसी माँ का विलाप सुनाई नहीं देता? यह घटना हमें चेतावनी देती है कि विकास की इस अंधी दौड़ में अपनी 'इंसानियत' को पीछे न छोड़ें। अगली बार जब आप स्टीयरिंग थामें, तो याद रखिए कि सड़क के उस पार कोई मां अपने बच्चों का इंतजार कर रही हो सकती है।

हम 'सतत् और संधारणीय विकास' की बातें करते हैं लेकिन वास्तविक विकास वही है जहाँ प्रकृति और प्रगति साथ–साथ चलें। यदि हमारी मशीनें और गाड़ियाँ प्रकृति के छोटे–से–छोटे अंश (जीव–जंतुओं) का सम्मान नहीं कर सकतीं तो यह विकास नहीं, बल्कि विनाश की ओर बढ़ता कदम है। प्रकृति के प्रति हमारी यह गैर–जिम्मेदाराना प्रवृत्ति हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जा रही है जहाँ संवेदनाओं का कोई स्थान नहीं है।

समय है आत्म–मंथन का! आइए सुरक्षा को केवल एक 'इवेंट' न मानकर उसे अपनी 'जीवनशैली' बनाएँ। अगली बार जब आप स्टीयरिंग थामें, तो याद रखिएगा कि सड़क पर कोई नन्हीं जान हो सकती है या किसी की 'ममता' खेल रही हो सकती है। अपनी रफ्तार पर लगाम लगाइए, ताकि किसी माँ की पुकार यूँ ही सन्नाटे में न खो जाए। आपकी थोड़ी सी सावधानी किसी का पूरा संसार उजड़ने से बचा सकती है। प्रकृति के प्रति अपनी जवाबदेही निभाएं। विकास की इस अंधी दौड़ में अपनी 'इंसानियत' को पीछे न छोड़ें।

अभियंता (सीईई)
एचईपी, भोपाल

"आपको मानवता पर से विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता सागर के समान है; यदि सागर की कुछ बूँदें गंदी हों, तो सागर गंदा नहीं हो जाता।"

– महात्मा गांधी

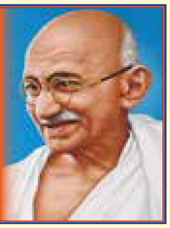

विश्व हिन्दी दिवस–2026 का हर्षोल्लास के साथ आयोजन

कॉर्पोरेट कार्यालय सहित बीएचईएल की सभी इकाइयों/प्रभागों में विश्व हिन्दी दिवस 2026 का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस उपलक्ष्य में दिल्ली–एनसीआर स्थित कार्यालयों में पदस्थ कर्मचारियों के लिए 04 हिन्दी प्रतियोगिताओं–आशुभाषण, स्वरचित काव्यपाठ, ऑनलाइन प्रश्नमंच एवं टीम अभिनय का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 363 कर्मचारियों ने भाग लिया।

विश्व हिन्दी दिवस 2026 के उपलक्ष्य में काव्य गोष्ठी का आयोजन

विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 09 जनवरी को बीएचईएल सदन, नोएडा में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री विनय विनम्र एवं सुश्री कल्पना शुक्ला ने अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। काव्य गोष्ठी में कार्यपालक निदेशक (पीईएम, आईएसजी एवं सीपीसी) श्री अजय कुमार, कार्यपालक निदेशक (सीडीटी) श्री अरविन्द गुप्ता, महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन, मा.सं.–संस्थापना एवं डीएजी) श्री आर के श्रीवास्तव सहित 100 से अधिक अधिकारी/कर्मचारी श्रोता के रूप में शामिल हुए। आयोजन संबंधी उत्तरदायित्व का निर्वहन पीईएम, नोएडा इकाई ने किया।

माननीय सीएमडी महोदय एवं निदेशक मंडल द्वारा अरुणिमा के 38वें अंक का विमोचन

माननीय सीएमडी महोदय एवं निदेशकगण द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह 2026 के दौरान बीएचईएल की अर्द्ध वार्षिक हिन्दी पत्रिका **'अरुणिमा'** के 38वें अंक का विमोचन किया गया। समारोह का आयोजन नोएडा स्थित बीएचईएल उपनगरी में किया गया था जिसमें कंपनी के वरिष्ठ अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं उपनगरी निवासी सम्मिलित हुए।

विश्व हिन्दी दिवस 2026–पुरस्कार वितरण समारोह एवं विशेष व्याख्यान

विश्व हिन्दी दिवस 2026 के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए 11 फरवरी, 2026 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में दिल्ली–एनसीआर स्थित बीएचईएल कार्यालयों के 32 विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर हिन्दी के प्रखर विद्वान एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. पूरन चंद टंडन जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर प्रोफेसर टंडन ने 'आधुनिक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप' विषय पर एक अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित व्याख्यान दिया।

कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा इकाइयों का निरीक्षण

एचपीबीपी त्रिची

पीपीपीयू तिरुमयम

उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

आरओडी मुख्यालय, नई दिल्ली

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार, कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा नियमित रूप से अधीनस्थ इकाइयों/प्रभागों का राजभाषा निरीक्षण किया जाता है। इसी क्रम में जनवरी–जून 2026 की अवधि में, कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा चार इकाइयों–एचपीबीपी त्रिची, पीपीपीयू तिरुमयम, उद्योग क्षेत्र तथा आरओडी मुख्यालय, नई दिल्ली का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा संबंधित इकाइयों के साथ राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर विचार–विमर्श किया गया तथा हिन्दी में काम काज को बढ़ाने पर जोर दिया गया।

जनवरी –जून 2026 के दौरान चार कार्यशालाओं का आयोजन

संसदीय राजभाषा समिति एवं भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार कर्मचारियों को हिन्दी में प्रवीण बनाने के उद्देश्य से जनवरी–जून 2026 के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा चार पूर्ण दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में दिल्ली–एनसीआर स्थित कार्यालयों के कुल 115 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यशालाओं में कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन, अंग्रेजी से हिन्दी एवं विलोमतः अनुवाद, मशीन अनुवाद एवं कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने हेतु आवश्यक सॉफ्टवेयर इत्यादि विषयों पर जानकारी दी गई।

कॉर्पोरेट कार्यालय की अंतर -विभागीय राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत पाँच विभागों को पुरस्कार

कॉर्पोरेट कार्यालय की अंतर–विभागीय राजभाषा शील्ड योजना 2024–25 के अंतर्गत 05 विजेता विभागों को माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, श्री के सदाशिव मूर्ति के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। ये पुरस्कार 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान दिए गए।

पुरस्कार दो श्रेणियों (तकनीकी विभाग एवं गैर–तकनीकी विभाग) के अंतर्गत दिए गए। तकनीकी विभागों में कॉर्पोरेट एचएसई एवं सीडीटी ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गैर–तकनीकी विभागों में कॉर्पोरेट सतर्कता, कॉर्पोरेट संचार एवं सीएलडी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा ऑनलाइन राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा दिनांक 29 अप्रैल, 2026 को ऑनलाइन राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालय के अधीनस्थ सभी सीपीएसई एवं स्वायत्त निकायों ने भाग लिया। बीएचईएल की ओर से महाप्रबंधक (प्रशासन, डीएजी, स्थापना एवं राजभाषा) श्री आर के श्रीवास्तव सहित कॉर्पोरेट राजभाषा के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस सम्मेलन में प्रतिभागिता की। सम्मेलन के दौरान बीएचईएल की ओर से वर्ष 2025–26 की प्रमुख राजभाषा गतिविधियों/उपलब्धियों पर एक पीपीटी प्रस्तुतीकरण भी दिया गया जिसकी माननीय संयुक्त सचिव (भारी उद्योग) महोदय ने सराहना की।

भारी उद्योग मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की 8वीं बैठक का आयोजन

भारी उद्योग मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की 8वीं बैठक माननीय भारी उद्योग राज्यमंत्री, श्री भूपतिराजू श्रीनिवास वर्मा जी की अध्यक्षता में 06 मई, 2026 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक में संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित माननीय संसद सदस्यों श्रीमती सीमा द्विवेदी (राज्यसभा–जौनपुर, उ.प्र.), सुश्री बाँसुरी स्वराज (लोक सभा– नई दिल्ली), डॉ भोला सिंह (लोकसभा–बुलंदशहर, उ.प्र.), संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नामित सदस्य श्री सतीश कुमार गौतम (लोक सभा – अलीगढ़, उ.प्र.), विश्व हिन्दी परिषद द्वारा नामित सदस्य डॉ. काशी प्रसाद मिश्र, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा नामित सदस्या डॉ मैथिली पी राव, माननीय भारी उद्योग मंत्री जी द्वारा नामित सदस्यों डॉ अश्वत नारायण के पी, श्री गड्डे सतीश बाबू, डॉ शशि कुमार एच सी और राजभाषा विभाग द्वारा नामित सदस्यों डॉ संजीवरायप्पा एन सी और सुश्री नीलाक्षी महर्षि तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों एवं मंत्रालय के अधीनस्थ सभी सीपीएसई एवं स्वायत्त निकायों के प्रमुखों ने भाग लिया।

बीएचईएल ने इस बैठक में प्रतिभागिता करने के साथ–साथ आयोजन संबंधी समस्त उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। निदेशक (पावर) एवं अतिरिक्त प्रभार (मानव संसाधन), श्री तजिंदर गुप्ता ने बैठक में बीएचईएल का प्रतिनिधित्व किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय भारी उद्योग राज्यमंत्री जी ने सोशल मीडिया एवं डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हिन्दी सामग्री के उपयोग को और प्रोत्साहित करने, कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रशिक्षण हेतु नियमित तौर पर कार्यशालाओं के आयोजन एवं हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण अनुवाद एवं लेखन को प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पीईएम, नोएडा का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा 20 अप्रैल, 2026 को पीईएम, नोएडा का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में माननीय सदस्य श्री नीरज डांगी एवं श्री ओमराजे निम्बालकर ने संसदीय समिति का प्रतिनिधित्व किया। श्री विजय मित्तल, संयुक्त सचिव ने बैठक में भारी उद्योग मंत्रालय का प्रतिनिधित्व किया। बीएचईएल की ओर से श्रीमती बानी वर्मा, निदेशक (आईएस एण्ड पी), श्री अजय कुमार, कार्यपालक निदेशक (पीईएम, आईएसजी एवं सीपीसी), महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन, मा.सं.–संस्थापना एवं डीएजी) श्री आर के श्रीवास्तव सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया।

समिति के माननीय सदस्यों ने भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नियमों, विनियमों को लागू करने में इकाई द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा इकाई को सफल निरीक्षण का प्रमाण–पत्र प्रदान किया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सीएफपी, रुद्रपुर एवं पीएसडब्ल्यूआर, नागपुर का सफल निरीक्षण

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा बीएचईएल की दो इकाइयों–पावर सेक्टर पश्चिमी क्षेत्र, नागपुर एवं सीएफपी, रुद्रपुर का राजभाषा निरीक्षण किया गया। सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई श्री प्रमोद एस सांगोले ने 23 मई, 2026 को पावर सेक्टर–पश्चिमी क्षेत्र, नागपुर का राजभाषा निरीक्षण किया। श्री छबील कुमार मेहर, उप निदेशक, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–।।, गाजियाबाद ने 18 जून, 2026 को सीएफपी, रुद्रपुर इकाई का राजभाषा निरीक्षण किया। निरीक्षण अधिकारियों ने दोनों ही इकाइयों में चल रहे राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रयासों की सराहना की।

नराकास द्वारा राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास को राजभाषा ट्रॉफी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद–सिकंदराबाद द्वारा राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास, हैदराबाद को वर्ष 2025–26 के लिए राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री पी वी रामगोपाल, महाप्रबंधक (सीआरडी2) ने ईसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से दिनांक 22.05.2026 को ग्रहण किया।

नराकास द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए आरसीपुरम, हैदराबाद को राजभाषा कप

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद–सिकंदराबाद द्वारा बड़े कार्यालय वर्ग में आरसीपुरम, हैदराबाद इकाई को वर्ष 2025–26 के लिए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु 'राजभाषा कप' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री एम. पी. वी. रमणा, महाप्रबंधक (डीटीजी एवं एसएम) ने ईसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री टेकी सूर्य चंद्र राव, मुख्य महाप्रबंधक, पावर ग्रिड तथा श्री प्रकाश राम, उप निदेशक (अनुसंधान), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दक्षिण क्षेत्र, बेंगलूरु भी उपस्थित थे।

नराकास द्वारा एचपीबीपी तिरुची को राजभाषा शील्ड व कार्यपालक निदेशक को राजभाषा रत्न

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुच्चिराप्पल्लि द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए एचपीबीपी तिरुची को वर्ष 2025–26 के लिए उपक्रम श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री एन. शाजी, अपर महाप्रबंधक एवं प्रमुख (मा. सं.) ने श्री बालक राम नेगी (नराकास अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक), तिरुच्चि से प्राप्त किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुच्चिराप्पल्लि द्वारा श्री एस. प्रभाकर (कार्यपालक निदेशक), एचपीबीपी तिरुची को राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयासों के लिए 'राजभाषा रत्न' से सम्मानित किया गया। उन्होंने यह पुरस्कार श्री बालक राम नेगी (नराकास अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक) एवं श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक (क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि) से प्राप्त किया। तत्पश्चात् श्री एन. शाजी, अपर महाप्रबंधक एवं प्रमुख (मा. सं.) को राजभाषा के प्रति उनके सफल प्रयासों हेतु 'राजभाषा स्तंभ' एवं राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए श्री एस. आनंद, वरिष्ठ प्रबंधक (मा. सं.) को 'राजभाषा कर्मवीर' से सम्मानित किया गया।

गरीबी

पुष्पेंद्र मणि

जन्मे हम बिकट गरीबी में,
दिन रोते–रोते बीते हैं,
रोजी रोटी की चिंता में,
तन मन ही फीके–फीके हैं,
अच्छे जीवन की आस लिए,
बस सपनों में ही जीते हैं।

तोड़ी है कमर गरीबी ने,
हालत भी ढीली–ढाली है,
जोरों की भूख लगी लेकिन,
थाली तो खाली–खाली है,
गायब है दाल कटोरी से,
पानी ही पानी पीते हैं।

थोड़ा यू ही हम बड़े हुए,
जीवन गाड़ी को संग लिए,
रुक–रुक कर ही आगे बढ़ते,
पहिये हैं, नाजुक जंग लिए,
केवल धीरज के धागों से,
किस्मत की चादर सीते हैं।

पढ़ने लिखने का बोध कहाँ,
हम खुद ही खुद से लड़ते हैं,
अपना हक पाने की खातिर,
पैरों में नाक रगड़ते हैं,
दिल रोकर ही रह जाता है,
जब बर्तन–बर्तन रीते हैं।

दयनीय बहुत हालात हुए,
बेबस उस बूढ़ी अम्मा के,
गीले ईंधन को फूँक–फूँक,
गल रहे फेफड़े भी माँ के,
हर पल इतना श्रम करके भी,
दो पल न चैन के बीते हैं।

ये कैसा दुष्चक्र है भाई,
नहीं किसी को भली सुझाई,
बदलावों की सनसनी है,
देश की हालत वही बनी है,
वही है आँसू वही है धोती,
पेट भरने को नहीं है रोटी।

न भाषण न आश्वासन,
जनता को दे पाते राशन,
वीरानी खेतों में छाई,
फंदों में हैं किसान भाई,
कैसे सबका काम चलेगा,
सोचा जो क्या कभी मिलेगा?

बड़े रसूक की आह जो भरते,
जो गुजरोगे कभी इधर से,
अकल ठिकाने आ जाएगी,
मौत भी थर–थर थर्राएगी,
कुछ अपने दिल को पिघला लो,
दुख दर्दों को तुम अपना लो,
सही दिशा में शक्ति जुटा लो,
देश गरीबी मुक्त बना लो।
देश गरीबी मुक्त बना लो।।

वरिष्ठ प्रबन्धक (एच.टी.ई.)
एचईपी, भोपाल

हर की दून यात्रा– प्रकृति की गोद में पाँच अविस्मरणीय दिन

अनुराग कुमार सिंह

"पर्वत केवल पत्थर नहीं होते, वे साक्षात् शांति, शक्ति और सौंदर्य का प्रतीक होते हैं।"

हरिद्वार से देवभूमि की ओर

05 मई की सुनहरी सुबह हरिद्वार के घाटों पर जब गंगा आरती की गूंज उठी, उसी समय हमारे छः सदस्यीय दल ने हर की दून यात्रा की शुरुआत की। उत्साह, जिज्ञासा और रोमांच का मिश्रण लिए हम प्रकृति की उस अनछुई घाटी की ओर बढ़ रहे थे, जो हिमालय की गोद में छिपा हुआ एक अद्भुत रत्न है।

हर की दून, उत्तरकाशी जनपद के गोविंद वन्यजीव अभयारण्य में लगभग 3,500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसे "देवताओं की घाटी" भी कहा जाता है–जहाँ सौंदर्य, शांति और पवित्रता एक साथ निवास करते हैं।

पहला दिन (05 मई)–हरिद्वार से सांकरी तक का सफर

सुबह हरिद्वार से प्रस्थान करते हुए बस ने पहाड़ों की ओर चढ़ाई प्रारंभ की। जैसे–जैसे हम ऊँचाई की ओर बढ़ते गए, प्रकृति का रंग–रूप भी बदलता गया। मसूरी की हरियाली, नैनीबाग के घुमावदार मोड़, और यमुना घाटी के दृश्य मन मोह लेने वाले थे।

रास्ते में पहाड़ी झरनों की फुहारें, ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों की खुशबू ने वातावरण को और भी जीवंत बना दिया। शाम तक हम सांकरी पहुँचे; यह छोटा–सा गाँव हर की दून ट्रैक का आधार स्थल है। यहाँ का शांत वातावरण और बर्फ से ढके शिखरों की झलक हमारे स्वागत में खड़ी प्रतीत हुई।

दूसरा दिन (06 मई) – सांकरी से ओसला की ओर

प्रातः पर्वतीय ताजगी से भरपूर हवा में हमने ट्रैकिंग की शुरुआत की। पगडंडी कभी घने जंगलों के बीच से गुजरती, तो कभी खुली घाटी में बहती रूपिन नदी के साथ–साथ चलती। पेड़ों की शाखाओं से छनती धूप और पक्षियों की चहचहाहट पूरे मार्ग को संगीत से भर देती।

लगभग आठ घंटे की चढ़ाई के बाद हम ओसला गाँव पहुँचे। यह गाँव अपनी लकड़ी की पारंपरिक वास्तुकला और लोक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। गाँव के बीचों–बीच स्थित प्राचीन मंदिर स्थानीय लोगों की श्रद्धा और परंपरा का प्रतीक है। वहाँ के निवासियों की सादगी और आतिथ्य ने मन को छू लिया। रात ओसला के एक छोटे से गेस्टहाउस में तारों भरे आकाश के नीचे बिताई– जहाँ शांति ही सबसे बड़ा संगीत थी।

तीसरा दिन (07 मई) – हर की दून की ओर आरोहण

यह यात्रा का सबसे रोमांचक दिन था। ओसला से हर की दून की दूरी लगभग 12 किलोमीटर है, पर रास्ते की कठिनाई इसे चुनौतीपूर्ण बना देती है। ऊँचाई बढ़ने के साथ हवा और ठंडी होती चली गई।

घुमावदार पगडंडियाँ, बर्फ से ढकी ढलानें और चमचमाती जलधाराएँ – हर दृश्य चित्र की तरह सुंदर था। दोपहर बाद जब हम हर की दून घाटी पहुँचे, तो सामने का दृश्य देखकर हम कुछ पल के लिए मौन रह गए। दूर तक फैले बर्फ से ढके पर्वत, नीले आकाश में तैरते बादल, और नीचे हरी घाटी में बहती चमकदार नदी – यह दृश्य शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

घाटी की ताजी हवा में सांस लेते हुए ऐसा लगा मानो जीवन का प्रत्येक क्षण नया अर्थ पा गया हो।

चौथा दिन (08 मई) – प्रकृति के सान्निध्य में

सुबह जब पहली किरण बर्फीली चोटियों पर पड़ी, तो घाटी सोने की आभा में नहा उठी। यह दिन विश्राम और अनुभव का था। हम घाटी के आसपास भ्रमण करते रहे – छोटे झरनों, फूलों से सजी ढलानों और

हिमनदों के नजदीक पहुँचकर हमने प्रकृति की निस्तब्धता को अनुभव किया।

दोपहर को घाटी के मध्य बैठकर जब हवा की सरसराहट और पक्षियों का कलरव सुनाई देता, तो लगता कि प्रकृति स्वयं संवाद कर रही है। कुछ समय हम सबने ध्यान मुद्रा में बिताया – वहाँ की शांति ने भीतर तक सुकून भर दिया।

रात को आकाश असंख्य तारों से भरा था और दूर पर्वतों पर झिलमिलाती बर्फ उस तारामंडल की प्रतिछाया–सी लग रही थी।

पाँचवाँ दिन (09 मई) – वापसी की ओर, पर मन वहीं रह गया

प्रातः जब हम हर की दून से वापस लौटने लगे, तो पीछे मुड़कर देखने पर ऐसा लगा मानो स्वयं पर्वत हमें आशीर्वाद दे रहे हों। ओसला और सांकरी से गुजरते हुए हम पुनः हरिद्वार की ओर लौटे।

यात्रा समाप्त हुई, पर हर की दून की निस्तब्ध घाटी, बर्फ की चादर और ताजी हवा का अनुभव अब भी मन में बसा हुआ है। इस यात्रा ने न केवल प्रकृति से बल्कि स्वयं से भी हमारा परिचय कराया।

समापनः आत्मा और प्रकृति का संवाद

हर की दून यात्रा केवल ट्रैकिंग नहीं थी बल्कि यह प्रकृति के साथ आत्मा की यात्रा थी – जहाँ हर कदम पर प्रकृति ने जीवन के नए अर्थ सिखाए।

यहाँ के पर्वतों ने धैर्य सिखाया, नदियों ने निरंतरता का पाठ पढ़ाया और घाटी ने सादगी में सौंदर्य खोजने का संदेश दिया। जब मनुष्य प्रकृति के साथ एकाकार होता है, तभी जीवन का वास्तविक सौंदर्य प्रकट होता है।

"प्रकृति के साथ बिताए पल क्षणिक होते हैं,

पर उनकी स्मृतियाँ जीवनभर साथ चलती हैं।"

प्रबंधक (वैक्स डब्ल्यूसीएस)

हीप, हरिद्वार

बारिश

जब नजरें खिड़की से बाहर उछलती–कूदती हैं,
तो कभी धूप, कभी कोहरे, कभी बारिश में खो जाती हैं।

पर ये आँखें ढूँढती हैं हर दिन सिर्फ बारिश को,
हर पल पानी बरसे बस यही ख्वाहिश हो।

जाने बरखा में क्या जादू है, जो एहसास नया भर जाता है,
रोता ऊपर से वो बादल है, और नीचे ये मन मुस्काता है।

ये कदम रोके न रुकते हैं, ये मन थामे न थमता है,
रोते हुए को हँसा दे जाने बादल में ये कैसी क्षमता है।

काले गहरे बादल घनघोर घटा से छाते हैं,
और अपने आँसुओं की बारिश से हमको नहलाते हैं।

स्वाति जैन

हम रोएं तो चारों ओर सिर्फ गम ही गम होते हैं, सबकी आँखों में।
इतनी हिम्मत कहाँ हममें, कि आँसुओं से मन रोशन कर दें लाखों के।

बारिश दे रही मौका मुस्कुराने का – इन्हें न बनने दो यादें,
जिओ हर पल इस मौसम को और खोल दो अपनी बाँहें।

वरिष्ठ प्रबंधक (गुणवत्ता)

हीप, हरिद्वार

मधुमेह के लक्षण और निदान

डॉ. यू एस शिल्पी

शुरुआत में ज्यादातर मधुमेह से पीड़ित मरीजों में कोई लक्षण नहीं दिखते हैं। ज्यादातर लोगों में इसका अचानक ही पता चलता है जब किसी अन्य बीमारी के लिए खून की जांच करवाई जाती है जैसे कि किसी ऑपरेशन से पहले।

आमतौर पर मधुमेह में पाए जाने वाले लक्षण:

- अत्यधिक प्यास (Excessive Thirst)
- बिना कारण वजन कम होना (Unexplained Weight Loss)
- भूख बढ़ना (Increased Hunger)
- थकान (Fatigue)
- घावों का धीरे–धीरे भरना (Slow Healing of Wounds)
- धुंधली दृष्टि (Blurry Vision)
- हाथ–पैरों में सुन्नपन या झुनझुनी (Numbness or Tingling)
- बार–बार संक्रमण (Frequent Infections)
- त्वचा का सूखापन और खुजली (Dry Skin and Itching)
- मूड में बदलाव (Mood Swings)
- बार–बार मूत्र मार्ग संक्रमण (Recurring UTIs)
- धीमी प्रतिक्रिया (Slow Reflexes)
- यौन अक्षमता (Erectile Dysfunction)

मधुमेह के जोखिम कारक (Risk Factors for Diabetes Mellitus)

ऐसे कई कारण हैं जिनसे मधुमेह होने का खतरा बढ़ जाता है। इनमें से कुछ को बदला जा सकता है जबकि कुछ को नहीं। एक व्यक्ति में एक साथ कई जोखिम और कारक भी हो सकते हैं और अधिक कारक होने से मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है।

मुख्य जोखिम कारक:

- पारिवारिक इतिहास (Genetic History):

  यदि परिवार में माता–पिता या भाई–बहन को मधुमेह है, तो अन्य सदस्यों में भी इसका खतरा अधिक होता है।

- लिंग (Sex/Gender):

  युवा आयु के लड़कों व लड़कियों में मधुमेह की संभावना लगभग समान होती है। परंतु इसके बाद 30 वर्ष की आयु तक महिलाओं में मधुमेह होने की संभावना अधिक हो जाती है। 45 से 65 वर्ष के बीच की आयु में यह संभावना महिलाओं में, पुरुषों की तुलना में लगभग दोगुना हो जाती है।

- शारीरिक वजन/मोटापा (Obesity):

  आवश्यकता से अधिक शारीरिक वजन होने पर टाइप 2 (वयस्क) मधुमेह की संभावना अधिक होती है। लगभग 75 प्रतिशत रोगियों का वजन 9 से 14 किलोग्राम अधिक पाया जाता है। पेट के आसपास की चर्बी ज्यादा होने से पुरुषों में 90 प्रतिशत संभावना ज्यादा होती है।

- **शारीरिक निष्क्रियता (Physical Inactivity):**

  जो व्यक्ति शारीरिक परिश्रम अधिक करते हैं, उनमें मधुमेह की बीमारी कम होती है और जो व्यक्ति कम शारीरिक गतिविधि करते हैं या आरामदायक जीवनशैली अपनाते हैं, उनमें मधुमेह होने की संभावना अधिक होती है।

- **तनाव (Stress):**

  तनाव की स्थिति में मधुमेह की बीमारी की शुरुआत हो सकती है।

- **अस्वस्थ आहार (Unhealthy Diet):**

  पौष्टिक व संतुलित आहार न खाना भी मधुमेह का एक कारण है। ज्यादा तला–भुना, घी–तेल युक्त भोजन और असंतुलित आहार लेने से भी मधुमेह का खतरा बढ़ता है।

जिन कारकों में बदलाव लाया जा सकता है वे हैं (Modifiable Risk Factors):

- मोटापा, विशेषकर कमर का
- निष्क्रिय जीवनशैली
- तंबाकू का सेवन करना
- अधिक वसा और तैलीय भोजन
- रक्त में वसा (लिपिड) की अधिक मात्रा

जैसे कि Trilyceride की मात्रा 250 ml/dl से अधिक होना और HDL Cholesterol की मात्रा 35 mg/dl से कम होना।

डायबिटीज का निदान

डायबिटीज की जाँच (Diagnosis of Diabetes Mellitus):

डायबिटीज का निदान विभिन्न तरीकों से किया जाता है और इसमें चिकित्सक आपको निम्नलिखित टेस्ट करवाने की सलाह दे सकते हैं और टेस्ट की रिपोर्ट के अनुसार आपका इलाज किया जाता है। चिकित्सक द्वारा सुझाए गए कुछ टेस्ट इस प्रकार हो सकते हैं:

- ग्लाइकेटेड हीमोग्लोबिन (HbA1c) टेस्ट: यह टेस्ट रक्त शर्करा के स्तर को लंबे समय (2–3 महीनों) तक मापने का एक माध्यम है। यह बताता है कि पिछले 2–3 महीनों में रक्त शर्करा का स्तर कैसा रहा है।
- फास्टिंग ब्लड शुगर टेस्ट (Fasting Blood Sugar Test): यह टेस्ट रात के भोजन के बाद 8 घंटे तक कुछ न खाने के बाद किया जाता है। यह बताता है कि खाली पेट आपके रक्त में शर्करा की मात्रा कितनी है।
- पोस्ट–प्रांडियल ब्लड शुगर टेस्ट (Post & Prandial Blood

Sugar Test): यह टेस्ट भोजन के 2 घंटे बाद किया जाता है और यह दर्शाता है कि भोजन के बाद शरीर शर्करा को कैसे नियंत्रित कर रहा है।

- स्व–निगरानी (Self-Monitoring of Blood Glucose – SMBG): यह आपको स्वयं अपने रक्त शर्करा स्तर की जांच करने की अनुमति देता है और डायबिटीज के प्रबंधन में मदद करता है।
- इंसुलिन टेस्ट (Insulin Test): इस टेस्ट के माध्यम से शरीर में इंसुलिन की मात्रा और उसके कार्य का आकलन किया जाता है, जिससे इंसुलिन से संबंधित समस्याओं का पता चलता है।
- लिपिड प्रोफाइल टेस्ट (Lipid Profile Test): यह टेस्ट रक्त में विभिन्न प्रकार के लिपिड (वसा) के स्तर को मापता है और डायबिटीज से संबंधित हृदय रोगों के जोखिम का पता लगाने में मदद करता है।

डायबिटीज की मुख्य जाँच के प्रकार

1. फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज टेस्ट (Fasting Plasma Glucose Test – FPGT)

   खाली पेट खून की जांचः इस प्रकार की जांच खाना खाने के 8 घंटे के पश्चात खून के द्वारा की जाती है। खून में ग्लूकोज का स्तर 126 mg/dl या उससे अधिक होता है, तो इसे मधुमेह माना जाता है।

2. ओरल ग्लूकोज टॉलरेंस टेस्ट (Oral Glucose Tolerance Test – OGTT)

   इस जांच को करने के लिए पहले फास्टिंग प्लाज्मा ग्लूकोज टेस्ट किया जाता है। इसके बाद व्यक्ति को 75 ग्राम ग्लूकोज पिलाया जाता है और 2 घंटे बाद पुनः खून की जांच की जाती है। यदि 2 घंटे बाद रक्त में ग्लूकोज का स्तर 200 mg/dl या उससे अधिक होता है, तो मधुमेह की पुष्टि होती है।

3. ग्लाइकेटेड हीमोग्लोबिन टेस्ट (HbA1c Test)

- यह जांच पिछले 3 महीनों के दौरान रक्त शर्करा के औसत स्तर को दर्शाती है। यह डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत उपयोगी होती है क्योंकि इससे यह पता चलता है कि दवाएं कितनी प्रभावी हैं। यह टेस्ट किसी भी समय किया जा सकता है, इसके लिए खाली पेट रहने की आवश्यकता नहीं होती।
- HbA1c का सामान्य स्तरः 5.7% तक माना जाता है।

वरिष्ठ सलाहकार (चिकित्सा)
हीप हरिद्वार

पतरातु की घाटी

पुराने मुकाम और घरौंदों की यादें जल्दी नहीं मिट पाती।
अब आया हूं नये मुकाम पे आई होकर, ये पतरातु की घाटी।।

अब सुबह जल्दी उठकर, नींद भी पूरी नहीं हो पाती।
रोज नये मुसाफिरों से मिलवाती, ये पतरातु की घाटी।।

लाईव लोकेशन देखकर, रोजाना नाश्ता ये करवाती।
कभी अपनों से रूठ कर मंद मंद मुस्काती, ये पतरातु की घाटी।।

योग का पता नहीं, पर कमर, गरदन और तशरीफ ये घुमवाती ।
तुझसे दुखी होकर भी खुश हूँ, नादान ये पतरातु की घाटी।।

हरी भरी वादियां दिखाकर, सैल्फी पाईंट यह बन जाती।
बसों की छतों पर कितनों की रोजी रोटी कराती, ये पतरातु की घाटी।।

खुद से कभी रुक न पाऐ, तो ईंजन को खराब करवाती।
कीर्तिमान से देख लो नजारों को कहकर, आवाज देती, ये पतरातु की घाटी।।

सतीश कुमार

सर्दी में कोहरे को चीरकर, कछुए की चाल से निकल जाती।
चालक के अहम को दबाती, ये पतरातु की घाटी।।

उतार पर, मक्खन सी फिसल कर, रास्ता ये आसान बनाती।
कल की राह कठिन है, चढ़ाव पे समझाती, ये पतरातु की घाटी।।

सुबह का सफर न चाह कर भी, जल्दी पहुंचा जाती।
शाम को अपनो से मिलने, देर कराती ये पतरातु की घाटी।।

काम में थके को अपने रास्तों से और थकवाती,
नये मील के पत्थर का सुकुन दिखाकर, थकान मिटाती, ये पतरातु की घाटी।।

जिंदगी के उतार चढ़ाव को रोजाना ये समझाती।
एक जगह रहकर भी सब कुछ सिखाती, ये पतरातु की घाटी।।

उप महाप्रबंधक (इलेक्ट्रिकल कमीशनिंग)
पतरातु साइट, पीएसडब्ल्यूआर

प्रकृति का बदलता स्वरूप और मानव जीवन पर प्रभाव

नीरज कुमार सिंह

प्रकृति मानव जीवन का आधार है। यह हमें वायु, जल, भोजन और जीवन के लिए आवश्यक सभी संसाधन प्रदान करती है। प्राचीन काल से ही प्रकृति का एक निश्चित संतुलन और क्रम रहा है, जिसके अनुसार ऋतुएँ समय पर आती–जाती थीं। गर्मी, सर्दी और वर्षा–इन तीनों ऋतुओं का एक निश्चित समय और प्रभाव हुआ करता था। किंतु वर्तमान समय में यह संतुलन तेजी से बिगड़ता जा रहा है। प्रकृति के स्वरूप में जो परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, वे सामान्य नहीं हैं। बेमौसम वर्षा, सर्दी का जल्दी समाप्त हो जाना, वर्षा की कमी, अत्यधिक गर्मी और अचानक मौसम परिवर्तन जैसी घटनाएँ अब आम होती जा रही हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सबसे पहले यदि बेमौसम वर्षा की बात करें, तो यह कृषि के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध हो रही है। जब फसलें पककर तैयार होती हैं, उसी समय अचानक वर्षा होने से वे नष्ट हो जाती हैं। गेहूँ, सरसों, दालें और अन्य फसलों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है और कई बार उन्हें कर्ज में डूबना पड़ता है। इसके अलावा, खाद्यान्न उत्पादन में कमी आने से महंगाई बढ़ती है, जिसका सीधा असर आम जनता पर पड़ता है। बेमौसम वर्षा केवल खेती को ही नहीं, बल्कि यातायात और दैनिक जीवन को भी प्रभावित करती है। अचानक होने वाली बारिश से सड़कों पर जलभराव हो जाता है, जिससे आवागमन बाधित होता है और दुर्घटनाओं की संभावनाएं बढ़ जाती है।

दूसरी ओर, सर्दी का समय से पहले समाप्त हो जाना भी एक गंभीर चिंता का विषय है। पहले जहाँ सर्दियाँ लंबे समय तक रहती थीं, वहीं अब उनका समय छोटा होता जा रहा है। इसका प्रभाव न केवल कृषि पर, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। कई फसलें जैसे गेहूँ, मटर और आलू ठंडे वातावरण में बेहतर विकसित होती हैं, लेकिन तापमान के जल्दी बढ़ने से उनकी उपज प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, सर्दी के कम होने से कई कीट और जीवाणु नष्ट नहीं हो पाते, जिससे बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। मौसम में अचानक बदलाव के कारण लोगों को सर्दी–जुकाम, बुखार, एलर्जी और अन्य मौसमी रोगों का सामना करना पड़ता है।

वर्षा की कमी भी एक अत्यंत गंभीर समस्या बनती जा रही है। जल ही जीवन है, और वर्षा इसका मुख्य स्रोत है। जब वर्षा कम होती है, तो नदियों, तालाबों और झीलों का जलस्तर घटने लगता है। भूजल स्तर भी नीचे चला जाता है, जिससे पीने के पानी की कमी हो जाती है। कई क्षेत्रों में लोग पानी के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। कृषि कार्य पूरी तरह वर्षा पर निर्भर होता है, इसलिए वर्षा की कमी से फसलें सूख जाती हैं और किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इसके अलावा, जल की कमी से उद्योगों पर भी प्रभाव पड़ता है, जिससे उत्पादन घटता है और आर्थिक विकास धीमा हो जाता है।

प्रकृति में हो रहे इन परिवर्तनों का एक अन्य पहलू अत्यधिक गर्मी का बढ़ना है। तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे गर्मी के मौसम में लोगों का जीवन कठिन हो गया है। हीटवेव (लू) जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं, जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं। इससे बुजुर्गों और बच्चों पर विशेष रूप से बुरा प्रभाव पड़ता है। अत्यधिक गर्मी के कारण बिजली की मांग बढ़ जाती है क्योंकि लोग कूलर, पंखे और एयर कंडीशनर का अधिक उपयोग करते हैं। इससे ऊर्जा संसाधनों पर दबाव बढ़ता है।

इन सभी समस्याओं का मुख्य कारण मानव द्वारा प्रकृति के साथ किया जा रहा अत्यधिक हस्तक्षेप है। वनों की अंधाधुंध कटाई, औद्योगिक विकास के नाम पर प्रदूषण, वाहनों की बढ़ती संख्या और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन–ये सभी कारण प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसों की मात्रा वायुमंडल में बढ़ रही है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया को ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है, जो इन सभी असामान्य परिवर्तनों का मूल कारण है।

मानव जीवन पर इन परिवर्तनों का प्रभाव केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक भी है। किसानों की आय में कमी, जल संकट, स्वास्थ्य समस्याएँ और महंगाई–ये सभी समस्याएँ समाज में असंतुलन पैदा कर रही हैं। गरीब वर्ग इन परिवर्तनों से सबसे अधिक प्रभावित होता है क्योंकि उनके पास संसाधनों की कमी होती है।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि हम प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें। हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए, जल का संरक्षण करना चाहिए और प्रदूषण को कम करने के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए। इसके साथ ही, हमें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना चाहिए। सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस दिशा में प्रयास करने होंगे।

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रकृति में हो रहे असामान्य परिवर्तन मानव जीवन के लिए एक गंभीर चेतावनी हैं। यदि हम समय रहते इन संकेतों को नहीं समझेंगे तो भविष्य में इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं। इसलिए, हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलना होगा और उसके संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करना होगा। तभी हम एक सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की कल्पना कर सकते हैं।

सहायक अधिकारी (अनुवाद)
कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

पर्यावरण आलेख

क्यों रुठ गई है कुदरत?

रोमिला वी रॉय

देहरादून में सुबह आँख खुली तो बाहर कड़कड़ाती ठंड थी। बर्फीली हवाओं ने एहसास करा दिया था कि इस बार कुदरत दिसम्बर और मार्च में बडी मेहरबान हो रही है। देर रात मसूरी में हुई बर्फबारी का ही नतीजा था कि देहरादून की फिजाओं में बर्फीली ठंडक घुल गई थी। छत पर जाकर देखा तो नजारा मन को मोह लेने वाला था। मसूरी की ऊंची चोटियां बर्फ की सफेद चादर से ढकी हुई थी और सूर्य की किरणें सुनहरी चमक बिखेर रही थी। मसूरी से बह रही ठंडी हवाएं दिसम्बर की शुरूआत में ही जनवरी की कड़कड़ाती ठंड का एहसास करा रही थी।

सुना है दशकों पहले सर्दियों में कभी देहरादून में भी बर्फ के दीदार हो जाया करते थे। लेकिन मसूरी को जाने वाले राजपुर रोड इलाके के लिए ये बात ज्यादा पुरानी नहीं है और कुछ साल पहले तक राजपुर रोड भी मामूली बर्फबारी के लिए जाना जाता था। लेकिन बढ़ते शहरीकरण के बाद न सिर्फ कुदरत देहरादून से रुठ गई बल्कि राजपुर रोड के क्षेत्र को भी बर्फ के दीदार के लिए तरसा दिया। कम होती हरियाली और खत्म होते जंगलों के बीच तेजी से फैलते कंक्रीट के जगंल का ही असर है कि मसूरी में भी बर्फबारी का मौसम खिसक कर जनवरी तक पहुंच गया और अक्सर जनवरी या फरवरी में बर्फ के दीदार होते हैं। लेकिन इस बार दिसम्बर की शुरूआत में मसूरी में बर्फबारी ने मसूरी जिसके लिए जाना जाता था उस की याद फिर से ताजा कर दी। खुद मसूरी में रहने वाले लोगों के लिए दिसम्बर में बर्फबारी किसी चमत्कार से कम नहीं थी। हालांकि ये बर्फबारी हल्की ही थी लेकिन दिसंबर और अप्रैल में बर्फ, फिर भी यहां के पुराने दिनों की याद ताजा करा देती है।

कंक्रीट का फैलता जगंल और कटते वनों के साथ ही बढ़ता प्रदूषण निश्चित ही बदलते मौसम का मुख्य कारक है। देहरादून की ही अगर बात करें तो इस क्षेत्र की हरियाली विकास की अंधी दौड़ की भेंट चढ़ गयी है। बेतरतीब होते विकास ने जहां न सिर्फ एक खूबसूरत शहर से उसकी सुंदरता यानि कि हरियाली छीन ली बल्कि यहां का सदाबहार मौसम भी पहले जैसा नहीं रहा।

देहरादून से मसूरी को जाने वाले रास्ते पर जहां पहले हरे–भरे पहाड़ सीना तान कर खड़े रहते थे। वहां अब हरियाली के बीच में तेजी से फैलता कंक्रीट का जाल आसानी से देखा जा सकता है और ये बेतरतीब तरीके से जारी है। ये हाल सिर्फ देहरादून का ही नहीं है बल्कि पूरे उत्तराखण्ड में लगभग ऐसे ही हालात है। फिर चाहे हल्द्वानी हो या उत्तरकाशी या फिर उत्तराखण्ड का कोई और शहर ..... कंक्रीट का फैलता जाल धीरे–धीरे हरियाली को चट करता जा रहा है। आंकड़े कहते हैं कि देश में हर साल 30 से 35 हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र विकास की भेंट चढ़ता जा रहा है लेकिन इसका सिर्फ एक तिहाई हिस्से की ही भरपाई हो पाती है।

1980 में बना देश का वन संरक्षण कानून भी कहता है कि एक पेड़ काटने पर उसके बदले तीन पेड़ लगाने पड़ते हैं। लेकिन आपने अपने आस–पास ही इस को महसूस किया होगा कि वाकई में क्या ऐसा हो पाता है? पर्यावरण मंत्रालय का अध्ययन कहता है कि देश में उत्सर्जित होने वाली ग्रीन हाउस गैसों को वन सोखते हैं।

वन तो कम हो रहे हैं लेकिन ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है। आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि अगर ये सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो जलवायु में कितना परिवर्तन आएगा। राष्ट्रीय वन नीति कहती है की देश के भू–भाग के 33 फीसदी हिस्से पर वन होने चाहिए लेकिन हिंदुस्तान में लगभग 21.02 फीसदी भू–भाग पर पेड़ हैं। यानि कि वननीति के मुताबिक अभी और वनों को विकसित करने की जरुरत है न कि विकास के लिए पेड़ों की बलि लेने की। दिसंबर से अप्रैल में बर्फबारी के बहाने बात निकली है तो आइए, एक संकल्प लें, वनों को बचाने का।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मेडिकल)
हीप, हरिद्वार

सैन्य जीवन से नागरिक और कॉर्पोरेट दुनिया की प्रेरक यात्रा

विनोद कुमार सिंह

सैन्य जीवन से नागरिक और कॉर्पोरेट दुनिया में कदम रखना केवल नौकरी बदलना नहीं, बल्कि पूरी जीवनशैली, सोच और पहचान का परिवर्तन है। वर्षों तक अनुशासन, समर्पण और मिशन–आधारित वातावरण में देश की सेवा करने के बाद जब कोई पूर्व सैनिक नागरिक जीवन में प्रवेश करता है, तो उसके सामने नई चुनौतियाँ और अनगिनत अवसर एक साथ खड़े होते हैं। यह परिवर्तन जितना कठिन है, उतना ही संभावनाओं से भरा हुआ भी है।

सैन्य जीवन अपने आप में एक अद्वितीय संस्कृति है। यहाँ हर कार्य का स्पष्ट उद्देश्य होता है और हर व्यक्ति अपनी भूमिका को पूरी निष्ठा से निभाता है। अनुशासन, समय की पाबंदी, आदेशों का पालन और टीम भावना इसकी नींव हैं। सैनिकों के लिए "देश पहले" केवल एक नारा नहीं बल्कि जीवन का मूल मंत्र होता है।

सैन्य जीवन में व्यक्ति अपने व्यक्तिगत सुख–सुविधाओं से ऊपर उठकर सामूहिक लक्ष्य के लिए कार्य करता है। कठिन परिस्थितियों में साथ काम करने से सैनिकों के बीच एक अटूट भाईचारा बनता है, जो उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाता है। यही कारण है कि वर्दी केवल कपड़ा नहीं बल्कि सम्मान, जिम्मेदारी और पहचान का प्रतीक बन जाती है।

नागरिक और कॉर्पोरेट जीवनः स्वतंत्रता और प्रतिस्पर्धा का संसार

जब कोई सैनिक नागरिक जीवन में आता है तो वह एक बिल्कुल अलग वातावरण में प्रवेश करता है। यहाँ कार्य संस्कृति अधिक लचीली होती है। निर्णय प्रक्रिया में बातचीत और व्यक्तिगत विचारों का महत्व होता है। परिणामों को मुनाफे, उत्पादकता और नवाचार के आधार पर मापा जाता है।

कॉर्पोरेट दुनिया में रचनात्मकता, व्यक्तिगत पहल और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया जाता है। यहाँ हर व्यक्ति को अपनी पहचान खुद बनानी होती है। यह स्वतंत्रता कई बार पूर्व सैनिकों के लिए चुनौती बन जाती है, क्योंकि वे एक संरचित और स्पष्ट आदेश–आधारित प्रणाली के आदी होते हैं।

बदलाव की चुनौतियाँः मानसिक, सामाजिक और व्यावसायिक संघर्ष

सैन्य जीवन से बाहर आना कई प्रकार की चुनौतियाँ लेकर आता है। सबसे पहली चुनौती है नई कार्य संस्कृति को समझना और उसमें ढलना। जहाँ सेना में हर चीज़ स्पष्ट और व्यवस्थित होती है, वहीं नागरिक जीवन में कई बार अस्पष्टता और लचीलापन होता है।

दूसरी बड़ी चुनौती है अपने कौशलों को सही तरीके से प्रस्तुत करना। सैन्य अनुभव जैसे नेतृत्व, संकट प्रबंधन, लॉजिस्टिक्स और रणनीति निर्माण, अक्सर कॉर्पोरेट भाषा में सीधे समझ नहीं आते। इस कारण कई पूर्व सैनिक अपनी वास्तविक क्षमता से कम अवसरों में सीमित हो जाते हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह परिवर्तन आसान नहीं होता। एक मजबूत सैन्य समुदाय से निकलकर व्यक्तिगत जीवन में आना कई बार अकेलापन और उद्देश्यहीनता का एहसास कराता है। इसके साथ ही उम्र, वेतन में अंतर और कॉर्पोरेट अनुभव की कमी भी इस बदलाव को जटिल बना देते हैं।

पूर्व सैनिकों की ताकत– जो उन्हें अलग बनाती है

इन चुनौतियों के बावजूद पूर्व सैनिकों के पास ऐसी अनमोल खूबियाँ होती हैं जो उन्हें भीड़ से अलग बनाती हैं। अनुशासन, ईमानदारी, समय की पाबंदी, नेतृत्व क्षमता और दबाव में काम करने की योग्यता और ये सभी गुण कॉर्पोरेट दुनिया में अत्यधिक मूल्यवान हैं। पूर्व सैनिक संकट की परिस्थितियों में शांत रहकर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे टीम को साथ लेकर चलना जानते हैं और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं। उनकी कार्यशैली भरोसेमंद और परिणाम–उन्मुख होती है जो किसी भी संगठन के लिए एक बड़ी संपत्ति है।

अवसरों का विशाल संसार

आज के समय में कॉर्पोरेट और नागरिक क्षेत्र पूर्व सैनिकों के महत्व को तेजी से समझ रहे हैं। मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक्स, सुरक्षा सेवाएँ, एविएशन, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन जैसे क्षेत्रों में उनके लिए व्यापक अवसर मौजूद हैं।

उनका अनुभव उन्हें सुपरवाइजर, मैनेजर और लीडरशिप रोल्स के लिए आदर्श बनाता है। कई कंपनियाँ अब विशेष रूप से पूर्व सैनिकों की भर्ती के लिए कार्यक्रम चला रही हैं, जिससे उन्हें सही मंच और पहचान मिल सके। इसके अलावा, सरकारी योजनाएँ, स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम और उद्यमिता के अवसर भी पूर्व सैनिकों को आत्मनिर्भर बनने में मदद कर रहे हैं।

सैन्य मूल्यों की निरंतरता

सैन्य जीवन से सीखे गए मूल्य जीवनभर साथ रहते हैं। अनुशासन, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा केवल वर्दी तक सीमित नहीं रहते, बल्कि नागरिक जीवन में भी व्यक्ति का मार्गदर्शन करते हैं। पूर्व सैनिक जहाँ भी जाते हैं, वहाँ एक सकारात्मक कार्य संस्कृति का निर्माण करते हैं। वे अपने व्यवहार से दूसरों को प्रेरित करते हैं और संस्थानों को मजबूत बनाते हैं। उनकी देशभक्ति वर्दी के बाद भी जारी रहती है – अब वह राष्ट्र निर्माण के रूप में दिखाई देती है। इस परिवर्तन को सफल बनाने के लिए पूर्व सैनिकों और संगठनों दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। पूर्व सैनिकों को चाहिए कि वे अपने कौशलों को कॉर्पोरेट भाषा में प्रस्तुत करना सीखें, नई तकनीकों और संचार शैली को अपनाएँ और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। दूसरी ओर, कंपनियों को भी सैन्य पृष्ठभूमि को समझते हुए एक सहयोगी वातावरण बनाना चाहिए। मेंटरशिप, प्रशिक्षण और समावेशी नीतियाँ इस अंतर को कम कर सकती हैं।

निष्कर्षः

सैन्य जीवन से नागरिक और कॉर्पोरेट दुनिया की यात्रा चुनौतियों से भरी जरूर है लेकिन यह नई संभावनाओं के द्वार भी खोलती है। पूर्व सैनिक अपने अनुभव, मूल्यों और नेतृत्व क्षमता के साथ किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर सकते हैं।

यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। जब पूर्व सैनिक अपने ज्ञान और अनुभव को नागरिक जीवन में उपयोग करते हैं, तो वे राष्ट्र निर्माण में एक नई भूमिका निभाते हैं। जब उचित नीतियों और समझने वाले नियोक्ता का साथ मिलता है, तो पूर्व सैनिक सफलतापूर्वक अपनी भूमिकाओं को फिर से परिभाषित कर सकते हैं और वर्दी के बाहर भी राष्ट्र की सेवा करना जारी रख सकते हैं। उनकी यात्रा इस बात का एक शक्तिशाली उदाहरण है कि कैसे मिलिट्री मूल्य सिविल और कॉर्पोरेट संस्थानों को मजबूत कर सकते हैं और स्थायी राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकते हैं। उनका अनुशासन, समय की पाबंदी, ईमानदारी, नेतृत्व और देशभक्ति उन्हें संगठनों और समाज के लिए अनमोल संपत्ति बनाता है।

वास्तव में यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि एक सैनिक केवल वर्दी में ही नहीं बल्कि हर परिस्थिति में देश की सेवा करता है – बस उसका तरीका बदल जाता है, लक्ष्य नहीं।

अपर अभियंता (स्टोर गैस टर्बाइन)
एचपीईपी, हैदराबाद

बीएचईएल के कर्मचारी

भारत मां का गौरव हैं हम, स्वर्णिम हमारा हर पल है,

हम उस संस्थान के कर्मचारी हैं, जिसका नाम बीएचईएल है।

अंधेरों में जीकर हमने, सारा जग दमकाया है,

कांटो पर चलकर के हमने, रौशन जग को बनाया है

मिटा धरा से सारा अंधेरा, विकास सुगम बनाया है,

भारत भूमि को उज्जवल करते, हम जुगनुओं के दल हैं;

हम उस संस्थान के कर्मचारी हैं, जिसका नाम बीएचईएल है।

विद्युत उत्पादन सुगम किया है, खुद को साँचो में ढाला है,

भारत भूमि को जगमग करने, सब बाधाओं को टाला है।

रहे ना धरा पर कहीं अंधेरा, यही संकल्प उठाया है,

अपने हौंसलों की गर्मी से, हमने लोहे को पिघलाया है।।

नित नूतन तकनीक पे चलते, हम में सूरज का बल है,

पंकज कुमार

हम उस संस्थान के कर्मचारी हैं, जिसका नाम बीएचईएल है।

अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, यूरोप में जाकर हमने ज्योति जलायी है,

भूटान, ईरान, ईराक, कोरिया, सिंगापुर, बांग्लादेश में ध्वजा लहराई है।

छः महाद्वीपों के 90 देशों में पदचिन्ह हमने बनाए हैं,

मुश्किलों से हम ऐसे भिड़ते जैसे सिंहो का दल है,

हम उस संस्थान के कर्मचारी हैं, जिसका नाम बीएचईएल है।

वरिष्ठ कार्यपालक (मा. सं.)
आईवीपी, गोइंदवाल

जीवन की तीन खामोशियां

योगेश कुमार धीमान

मनुष्य का जीवन केवल बोलने, खाने और कमाने तक सीमित नहीं होना चाहिए। जीवन की सच्ची सुगंध उन खामोश कामों में है जो बिना दिखावे के समाज और प्रकृति के लिए लाभकारी होते हैं। कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो भले ही हम चुपचाप करें पर उनका प्रभाव हमारे जीवन और समाज दोनों पर गहराई से पड़ता है।

ऐसे ही तीन मौन कार्य हैं – पेड़ लगाना, खेल या व्यायाम से जुड़ना और अपने धर्म का ज्ञान रखना।

1. पेड़ लगाना–जीवन मृत्यु का संतुलन और आगामी पीढ़ी के सुख का बीजारोपण

पेड़ लगाना एक ऐसी खामोश सेवा है जिसका महत्व हम तब भी महसूस करते हैं जब हम नहीं होते। जीवन में लगाया गया एक पेड़ न केवल धरती को हरियाली देता है, बल्कि पर्यावरण को शुद्ध करता है, ऑक्सीजन प्रदान करता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन का आधार बनता है। कहा जाता है कि मृत्यु के समय एक व्यक्ति के दाह संस्कार में लगभग पाँच क्विंटल लकड़ी लगती है। यदि हम जीवन में समय–समय पर पेड़ लगाते रहें, तो यह हमारे जाने के बाद भी दूसरों की जरूरत पूरी करने वाली विरासत बन जाती है। यह कर्तव्य न केवल पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक है बल्कि आत्मा की शुद्धता और कृतज्ञता का प्रतीक भी है। पेड़ से हमें ऑक्सीजन, छाया, फल और ठंडक मिलती है। इसीलिए कहा गया है कि जो व्यक्ति पेड़ लगाता है, वह आगामी पीढी के लिए सुख का बीजारोपण करता है।

2. पढ़ाई के साथ खेल या व्यायाम से जुड़ना – शरीर और मन का संतुलन

शिक्षा जीवन का आधार है लेकिन केवल पढ़ाई से ही मनुष्य पूर्ण नहीं बनता। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी या डिग्री प्राप्त करना नहीं है बल्कि एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है। पढ़ाई के साथ अगर मनुष्य खेल या किसी व्यायाम से जुड़ा रहे तो उसका शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा का निवास होता है। यह मनुष्य की सोच को व्यावहारिक बनाता है और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा भरता है। यह मनुष्य को हार–जीत दोनों को स्वीकार करना सिखाता है और जीवन की वास्तविक चुनौतियों से जूझने का हौसला देता है। खामोशी से किया गया यह योगदान मनुष्य को स्वस्थ, ऊर्जावान और संतुलित रखता है।

3. अपने धर्म का ज्ञान–आत्मा का आलोक

धर्म का वास्तविक अर्थ केवल पूजा–पाठ नहीं बल्कि जीवन के शाश्वत सत्य, आचारिक सिद्धांतों और कर्तव्यों की समझ है। धर्म का सही ज्ञान मनुष्य को संयम, करुणा और न्यायप्रियता की राह दिखाता है जिससे उसका आचरण सुसंस्कृत बनता है। धर्म हमें यह सिखाता है कि हम दूसरों का भला सोचें, सत्य का पालन करें और दूसरों की भावनाओं का आदर करें। यह ज्ञान हमें आत्मसंयम, सहिष्णुता और दूसरों के प्रति करुणा सिखाता है। धर्म का अध्ययन या पालन भले मौन कार्य हो परंतु इसका प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर स्थायी होता है।

निष्कर्ष

इन तीनों खामोश कक्षों का उद्देश्य जीवन में समरसता लाना है – पेड़ लगाना हमारे पर्यावरण से जुड़ाव का प्रतीक है, खेल से जुड़ना हमारे शरीर और जीवन के उत्साह का प्रतीक है और धर्म का ज्ञान हमारी आत्मा को अलोकित करता है। ये तीनों बातें भले खामोशी से निभाई जाएं, पर वास्तव में यही हमारी जिंदगी के सबसे बड़े योगदान हैं। यदि हर व्यक्ति इन तीन बातों को अपनाए तो उसका जीवन संतुलित, सार्थक और प्रेरणादायक बन सकता है।

यह विषय जीवन के तीन महत्वपूर्ण "खामोश योगदानों" पर आधारित है – पेड़ लगाना, किसी खेल या सामाजिक कार्य से जुड़ना और धर्म का ज्ञान प्राप्त करना। इन तीनों का संयोजन व्यक्ति के जीवन को न केवल संतुलित बनाता है बल्कि समाज के विकास में भी मौन योगदान देता है।

वरि. प्रबंधक (आंतरिक लेखा–परीक्षा)
हीप, हरिद्वार

आलेख

कार्यस्थल पर अकेलापनः कर्मचारियों के लिये उभरता खतरा

नेहा

आपने "अकेलेपन की महामारी" के बारे में सुना होगा। बड़ी संख्या में लोग दूसरों से जुड़ाव की कमी के कारण खुद को दूर, अलग–थलग और उदास महसूस करते हैं। संभव है कि आप भी उनमें से एक हों।

कोविड महामारी ने इस अकेलेपन को और बढ़ा दिया है लेकिन इसके अलावा और भी कई कारण हैं। तकनीक ने रिमोट और हाइब्रिड काम को संभव बनाया है–जिससे काम और जीवन का संतुलन तो बेहतर हुआ है लेकिन हमारे सहकर्मियों से सीधा संपर्क कम हो गया है। अब हम कॉफी से लेकर कार तक सब कुछ बिना मानवीय संपर्क के मंगा सकते हैं। हमने सुविधा को रिश्तों से ऊपर रख दिया है और आस–पास के लोगों से हमारा संपर्क पहले जितना नहीं रहा है। ये सभी कारक मिलकर अलगाव और अकेलेपन को बढ़ाते हैं।

कार्यस्थल पर अकेलापन (Workplace loneliness) उस लगातार महसूस होने वाली सामाजिक दूरी की भावना को दर्शाता है, जो काम पर लोगों के बीच रहने के बावजूद भी बनी रहती है। Cigna द्वारा किए गए एक हालिया सर्वे के अनुसार, अकेलापन कर्मचारियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण और उभरता हुआ खतरा है। लगभग 52% कर्मचारियों का खुद को अकेला महसूस करने की बात सामने आई है, जिससे यह समस्या कार्यस्थलों पर व्यापक प्रभाव डाल सकती है।

कार्यस्थल पर अकेलेपन के दो मुख्य कारण होते हैं:

1. भावनात्मक बनाम परिस्थितिजन्य अकेलापन

भावनात्मक अकेलापन (Emotional loneliness) तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति को लंबे समय तक यह महसूस होता है कि उसे समझा या महत्व नहीं दिया जा रहा है।

वहीं, परिस्थितिजन्य अकेलापन (Situational loneliness) अस्थायी होता है और खास कामकाजी परिस्थितियों के कारण पैदा होता है, जैसे नौकरी में बदलाव या रिमोट वर्क, घर से काम आदि।

2. ऑफिस, रिमोट या हाइब्रिड–कोई भी अछूता नहीं

चाहे कोई व्यक्ति घर से काम कर रहा हो, मुख्य कार्यालय में हो या दोनों के बीच काम कर रहा हो, अकेलापन किसी को भी प्रभावित कर सकता है। हाइब्रिड कर्मचारी अक्सर दोनों कार्य–संस्कृतियों से कटे हुए महसूस करते हैं। ऑफिस में काम करने वाले भी भीड़ में खुद को अनदेखा महसूस कर सकते हैं।

इसका मूल कारण भौतिक रूप से उपस्थिति की कमी नहीं, बल्कि सार्थक सामाजिक जुड़ाव की कमी है।

सोशल मीडिया भी एक अहम कारण है। लोग बहुत "कनेक्टेड" तो हैं, लेकिन यह जुड़ाव अक्सर सतही या बनावटी होता है (जैसे एडिट की गई पोस्ट्स)। इसलिए भले ही आपके हजारों फॉलोअर्स हों लेकिन मुश्किल समय में फोन करने के लिए कोई करीबी दोस्त नहीं होता।

कार्यस्थल पर अकेलापन कई तरह से महसूस हो सकता है:

- सहकर्मियों से दूरी–जैसे बात करने के लिए शब्द न मिलना
- अपने काम का बड़े उद्देश्य से जुड़ाव महसूस न होना
- अपने काम के लिए सराहना या पहचान की कमी
- मदद मांगने या देने में असहजता

अकेलेपन के प्रभाव

अकेलापन आपके मानसिक स्वास्थ्य और जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है:

- अधिक चिंता, तनाव और थकान
- डिप्रेशन और मानसिक समस्याओं का जोखिम
- काम में असंतुष्टि और खुशी की कमी

इनके अलावा:

- प्रेरणा की कमी
- काम में जुड़ाव (engagement) घट जाना
- नई चीजें सीखने या आगे बढ़ने की इच्छा कम होना
- भविष्य के प्रति आशा कम होना
- काम का प्रदर्शन गिरना
- रिश्तों में दूरी आना

यह एक दुष्चक्र बन जाता है—आप अकेले महसूस करते हैं, फिर लोगों से जुड़ने की इच्छा कम होती है, जिससे अकेलापन और बढ़ता है।

आधुनिक कार्यस्थल में अकेलेपन के कारण

कार्यस्थल पर अकेलेपन को समझना और उसके कारणों को पहचानना, उन्हें दूर करने की दिशा में पहला कदम है। आधुनिक कार्य व्यवस्था के कई कारक इस समस्या को बढ़ाते हैं और इनमें से कई ऐसे हैं जो मूल रूप से उपयोगी प्रणालियों और संरचनाओं के अनचाहे परिणाम हैं।

सच्चे जुड़ाव के बिना तकनीक

हम पहले से कहीं ज्यादा डिजिटल रूप से जुड़े हुए हैं लेकिन वर्चुअल मीटिंग्स और Slack जैसे संदेश हमेशा वास्तविक जुड़ाव नहीं बना पाते। संवाद अलग–अलग स्थानों से जुड़कर होने वाला वर्चुअल संवाद सुविधाजनक तो है लेकिन यह मानवीय संवाद की गहराई, भाव और सहानुभूति को कम कर देता है। समय के साथ, डिजिटल दक्षता भावनात्मक दूरी पैदा कर सकती है। कर्मचारी यह तो जान सकते हैं कि क्या हो रहा है लेकिन यह नहीं समझ पाते कि उनके सहकर्मी इसके बारे में या उनके बारे में कैसा महसूस करते हैं।

संस्कृति और सहकर्मियों से दूरी

चाहे इसका कारण रिमोट काम हो, अलग–अलग टीमों (silos) में बटा होना हो या संगठन में तेज बदलाव—कई कर्मचारी कंपनी की संस्कृति से जुड़ाव महसूस नहीं करते।

उदाहरण के लिए, कोई नया कर्मचारी जो रिमोट तरीके से जुड़ा है, वह टीम के अनकहे नियम, मूल्य या साझा हास्य को अनुभव ही नहीं कर पाता। इसी तरह, जो कर्मचारी अलग शाखाओं या विभक्त टीमों में काम करते हैं, वे खुद को बाहरी (outsider) महसूस कर सकते हैं।

जब साझा अनुभव, मूल्य या संबंध नहीं होते तो कर्मचारी खुद को अलग–थलग महसूस करने लगते हैं।

अनौपचारिक बातचीत का खत्म होना

कॉफी पर बातचीत, गलियारे में अचानक मुलाकात या अचानक होने वाली ब्रेनस्टॉर्मिंग—ये छोटे–छोटे मानवीय पल अब धीरे–धीरे खत्म हो रहे हैं।

काम अब ज्यादा "टास्क–ओरिएंटेड" हो गया है, जिससे वे अनौपचारिक आदतें और रिवाज खत्म हो रहे हैं, जो पहले रिश्तों को मजबूत बनाते थे।

- रिमोट कर्मचारी अचानक मिलने वाले लंच निमंत्रण से वंचित रह जाते हैं;
- हाइब्रिड कार्य प्रणाली में लोगों के ऑफिस आने के दिन मेल नहीं खाते;
- और ऑफिस में भी लगातार बैठकों के कारण सामाजिक बातचीत के लिए समय नहीं मिलता।

ये छोटे–छोटे पल भले मामूली लगें लेकिन यहीं पर भरोसा बनता है, नए विचार पैदा होते हैं और अपनेपन (belonging) की भावना विकसित होती है।

कार्यस्थल पर अकेलापन कम करने के तरीके

1. आत्म–चिंतन करें:

समझें कि आपको वास्तव में कितने सामाजिक जुड़ाव की जरूरत है। दूसरों से तुलना न करें। अगर आप अकेले रहकर भी संतुष्ट हैं, तो खुद पर अनावश्यक दबाव न डालें।

2. रिश्तों में निवेश करें:

सहकर्मियों से बात करें, सवाल पूछें, साथ में चाय या लंच पर समय बिताएं। कभी–कभी पहला कदम आपको ही उठाना पड़ता है।

3. चुनिंदा बनें:

हर किसी के साथ समय बिताना जरूरी नहीं है। सिर्फ उन लोगों के साथ रहें जो आपको प्रेरित करते हों और सकारात्मक ऊर्जा देते हों।

4. काम के बाहर भी जुड़ें:

कार्यस्थल के बाहर के रिश्तों का असर भी कार्यस्थल पर पड़ता है। काम के बाहर मजबूत रिश्ते बनाने से आपके काम का अनुभव भी बेहतर होता है। नये विचार व नई ऊर्जा का संचार होता है। सिर्फ ऑफिस की बातें करने के अलावा और भी कई विषय होते हैं जो जीवन में नयापन लाते हैं। यह काफी लाभकारी उपाय है। विचारने का नया दृष्टिकोण भी प्राप्त होता है।

5. समय को सार्थक बनाएं:

जिस प्रकार यदि पानी लम्बे समय तक एक स्थान पर ठहरा रहे तो वह सड़ जाता है, उसमें कीड़े पड़ जाते हैं उसी प्रकार मानव भी बिना किसी नई ऊर्जा, विषय व स्त्रोत के सड़ने लग जाता है। इसीलिये कुछ न कुछ नई गतिविधियों में शामिल हों – तैराकी सीखें, संगीत से जुड़ें, फिटनेस क्लब जॉइन करें, बागबानी करें या अपने शौक पूरे करें। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है, आप अपनी कोई पुरानी आदत को भी पुनः शुरू कर सकते हैं।

6. दूसरों की मदद करें:

अकेलेपन का सबसे प्रभावी इलाज है–दूसरों के लिए कुछ करना। सेवा करें, किसी की मदद करें, शिक्षा दें या समाज में योगदान दें। ऐसा करने से "मानव होने का महत्व" आत्मसात होता है। आपके अंदर कृतज्ञता का भाव उत्पन्न होता है जो सभी दृष्टि से आपके भीतर संतुष्टि की भावना को जगाता है और आप लोगों से जुडाव का अनुभव करते हैं ना कि दूरी/अकेलेपन का।

निष्कर्ष

अकेलापन कोई छोटी समस्या नहीं है। अच्छे रिश्ते न सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य और लंबी उम्र से भी जुड़े हैं।

अगर आप अभी अकेलापन महसूस कर रहे हैं, तो छोटे–छोटे कदम उठाना शुरू करें।

सजग रहें, रिश्तों में निवेश करें और इस प्रकार आप धीरे–धीरे अपने जीवन और काम में बेहतर जुड़ाव महसूस करेंगे।

उप अधिकारी (मा.सं)
हीप, हरिद्वार

सकारात्मक उत्पादकता और हमारा बीएचईएल

मुकेश कुमार

"किसी भी राष्ट्र की समृद्धि में उसके उद्योगों का योगदान और उसके कर्मचारियों की मेहनत बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"

भारत के औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रमुख उपक्रमों में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड (बीएचईएल) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह भारत की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग और विनिर्माण कंपनियों में से एक है, जो बिजली उत्पादन, ट्रांसमिशन और औद्योगिक मशीनों के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाती है। किसी भी बड़े उद्योग की सफलता केवल आधुनिक मशीनों और तकनीक पर निर्भर नहीं होती बल्कि कर्मचारियों की कार्यक्षमता, अनुशासन और सकारात्मक सोच पर भी निर्भर करती है। इसलिए **सकारात्मक उत्पादकता** (Positive Productivity) किसी भी संगठन के विकास का महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है।

सकारात्मक उत्पादकता का अर्थ है– कर्मचारियों द्वारा उत्साह, समर्पण और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना, जिससे कम समय और कम संसाधनों में अधिक गुणवत्ता वाला उत्पादन प्राप्त हो सके। यह केवल उत्पादन की मात्रा बढ़ाने तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें कार्य की गुणवत्ता, कर्मचारियों का संतोष, कार्यस्थल का वातावरण और संगठन की समग्र प्रगति भी शामिल होती है। बीएचईएल जैसे बड़े संगठन में सकारात्मक उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय किए गये हैं।

सुरक्षित और अनुकूल कार्य वातावरण – सबसे पहले, **सुरक्षित और अनुकूल कार्य वातावरण** सकारात्मक उत्पादकता के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब कर्मचारियों को सुरक्षित और स्वच्छ कार्यस्थल मिलता है, तो वे बिना किसी भय या तनाव के अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। औद्योगिक क्षेत्रों में सुरक्षा का विशेष महत्व होता है क्योंकि भारी मशीनों और उपकरणों के साथ काम करते समय दुर्घटनाओं की संभावना रहती है। बीएचईएल अपने कर्मचारियों के लिए विभिन्न सुरक्षा उपाय अपनाता है, जैसे सुरक्षा प्रशिक्षण, सुरक्षा उपकरणों का उपयोग और नियमित निरीक्षण। इससे कर्मचारियों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर पाते हैं।

टीमवर्क और सहयोग की भावना – दूसरा महत्वपूर्ण तत्व **टीमवर्क और सहयोग की भावना** है। बीएचईएल जैसे बड़े औद्योगिक संगठन में कई विभाग मिलकर काम करते हैं, जैसे डिजाइन विभाग, उत्पादन विभाग, गुणवत्ता नियंत्रण विभाग और प्रबंधन विभाग। यदि इन सभी विभागों के बीच अच्छा समन्वय हो तो परियोजनाएँ समय पर और बेहतर गुणवत्ता के साथ पूरी हो सकती हैं। टीमवर्क से कर्मचारियों के बीच विश्वास और समझ बढ़ती है जिससे कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण बनता है और उत्पादकता में वृद्धि होती है।

प्रशिक्षण और कौशल विकास – तीसरा महत्वपूर्ण पहलू **प्रशिक्षण और कौशल विकास** है। आधुनिक उद्योगों में तकनीक तेजी से बदल रही है इसलिए कर्मचारियों को नई तकनीकों और कार्य प्रणालियों के बारे में जानकारी देना आवश्यक होता है। बीएचईएल अपने कर्मचारियों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और तकनीकी सेमिनार आयोजित करता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों को नवीनतम तकनीकों और उत्पादन प्रक्रियाओं की जानकारी मिलती है। इससे उनकी कार्यकुशलता बढ़ती है और वे अधिक दक्षता के साथ काम कर पाते हैं।

तकनीकी नवाचार और अनुसंधान – इसके अलावा **तकनीकी नवाचार और अनुसंधान** भी सकारात्मक उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक औद्योगिक वातावरण में कंपनियों को नई तकनीकों को अपनाना आवश्यक होता है। बीएचईएल लगातार अनुसंधान और विकास (R&D) पर ध्यान देता है और नई तकनीकों को अपनाने का प्रयास करता है। इससे उत्पादन प्रक्रिया अधिक तेज, सुरक्षित और प्रभावी बनती है। नई मशीनों और आधुनिक उपकरणों के उपयोग से उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार होता है और लागत भी कम होती है।

कर्मचारियों की प्रेरणा और प्रोत्साहन – **कर्मचारियों की प्रेरणा और प्रोत्साहन** भी सकारात्मक उत्पादकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब कर्मचारियों को उनके अच्छे कार्य के लिए सम्मान और पुरस्कार मिलते हैं, तो उनका मनोबल बढ़ता है और वे और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित होते हैं। बीएचईएल में कर्मचारियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विभिन्न पुरस्कार योजनाएँ, पदोन्नति के अवसर और सम्मान कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इससे कर्मचारियों में स्वस्थ

प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती है और बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रभावी प्रबंधन और नेतृत्व – इसके साथ ही प्रभावी प्रबंधन और नेतृत्व भी सकारात्मक उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। एक अच्छा प्रबंधन कर्मचारियों को सही दिशा देता है, स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करता है और कार्य को व्यवस्थित ढंग से संचालित करता है। बीएचईएल का प्रबंधन कर्मचारियों के साथ नियमित संवाद बनाए रखता है और उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास करता है। जब कर्मचारियों को यह महसूस होता है कि उनका प्रबंधन उनकी बात सुनता है और उनकी समस्याओं का समाधान करता है, तो वे अधिक समर्पण के साथ काम करते हैं।

समय प्रबंधन और कार्य अनुशासन – समय प्रबंधन और कार्य अनुशासन भी सकारात्मक उत्पादकता के महत्वपूर्ण पहलू हैं। किसी भी उद्योग में समय का सही उपयोग बहुत आवश्यक होता है। यदि कार्य निर्धारित समय पर पूरा हो जाए, तो उत्पादन प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती रहती है। बीएचईएल में समय प्रबंधन और कार्य अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिससे उत्पादन में निरंतरता बनी रहती है और परियोजनाएँ समय पर पूरी होती हैं।

कर्मचारियों का कल्याण और सामाजिक सुरक्षा– इसके अतिरिक्त कर्मचारियों का कल्याण और सामाजिक सुरक्षा भी सकारात्मक उत्पादकता को बढ़ावा देते हैं। जब कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुविधाएँ, आवास, शिक्षा और अन्य सामाजिक सुविधाएँ मिलती हैं तो वे अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित रहते हैं। बीएचईएल अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ चलाता है जिससे कर्मचारियों का जीवन स्तर बेहतर होता है और उनका मनोबल बढ़ता है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि सकारात्मक उत्पादकता किसी भी औद्योगिक संगठन की सफलता का मुख्य आधार होती है। सुरक्षित कार्य वातावरण, टीमवर्क, प्रशिक्षण, तकनीकी नवाचार, कर्मचारी प्रेरणा और प्रभावी प्रबंधन जैसे तत्व बीएचईएल की उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी प्रयासों के माध्यम से भारत हेवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड न केवल अपने उत्पादन और गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि भारत के औद्योगिक विकास और आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

प्रबन्धक (वाल्व अभियांत्रिकी)
एचपीबीपी, त्रिची

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर...

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर; गढ़ता हूँ ट्रांसफार्मर,
टर्बाइन और जनरेटर

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर...

ईश्वर को करके प्रणाम, रचता हूँ मैं नित नए आयाम,

ड्राइंग पढ़कर, प्लानिंग कर–कर, बनाता हूँ टेक्नॉलाजी।

अपनाकर गुणता के मापदंड, प्रज्ज्वलित करके अग्नि प्रचंड,

लोहे में लोहा मिलता जैसे पानी में बर्फ पिघलता है,

यही हमारी कार्य कुशलता जिससे मिलती है ग्राहक को सफलता।।

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर; गढ़ता हूँ ट्रांसफार्मर,
टर्बाइन और जनरेटर

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर...

गढ़ता हूँ मैं जटिल संरचनाओं को,
दिखाता हूँ मैं प्रौद्योगिकी की नई विधाओं को दिशा,
तब होता है देश का नव निर्माण।

क्योंकि हमें दी है सर विश्वेश्वरय्या ने अभियांत्रिकी महान।।

मनोज कुमार राय

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर; गढ़ता हूँ ट्रांसफार्मर,
टर्बाइन और जनरेटर

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर...

दौड़ा दिया देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर,

बनाकर ट्रैक्शन मोटर और अल्टीनेटर, गढ़कर उच्च गुणवत्ता के उत्पाद।

पहुँचाना है समय पर ग्राहक के पास, यह संकल्प हमारा है,

ग्राहक सफल हम सफल यही उद्देश्य हमारा है।।

आज देश के कोने – कोने में फैला उजियारा है।

क्योंकि सोने सा तप रहा बी.एच.ई.एल हमारा है।।

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर; गढ़ता हूँ ट्रांसफार्मर,
टर्बाइन और जनरेटर

मैं हूँ एक फैब्रिकेटर...

तकनीशियन (एफजीएम)
एचईपी, भोपाल

हिंदीः राजभाषा से राष्ट्रभाषा

सुनीता

"यदि स्वराज्य केवल अंग्रेजी–शिक्षित लोगों के लिए होता, तो संपर्क भाषा अंग्रेजी होती। लेकिन क्योंकि स्वराज्य करोड़ों भूखे, निरक्षर और दलित लोगों के लिए भी है इसलिए संपर्क भाषा केवल हिंदी ही हो सकती है।"

– महात्मा गांधी

वर्ष 1931 में गाँधीजी द्वारा लिखा यह प्रसिद्ध उद्धरण इंगित करता है कि गाँधीजी जनता की बात, जनता की भाषा में करने के पक्षधर थे। महात्मा गांधी ने हिन्दी को जनता की जाह्नवी कहा था। वर्ष 1936 में गाँधीजी ने कहा था, "अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता।" जैसे–जैसे स्वतंत्रता–संग्राम तीव्रतर होता गया, वैसे–वैसे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन जोर पकड़ता गया। 20वीं सदी के चौथे दशक तक हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थी। वर्ष 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओत–प्रोत जितनी रचनाएँ हिन्दी में लिखी गई, उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा के प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।

स्वतंत्रता के तुरंत बाद गम्भीरता से यह महसूस किया गया कि आजाद भारत की अपनी राष्ट्रभाषा हो क्योंकि कोई भी देश अपनी राष्ट्रभाषा के बिना गूंगा ही होता है। भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं और विशेषतः उर्दू व अंग्रेजी के दखल के चलते राष्ट्रभाषा की घोषणा के संबंध में कुछ सावधानी बरती गई। फलतः 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को भारत सरकार (संघ) की राजभाषा घोषित किया गया, राष्ट्रभाषा नहीं।

भारतीय समाज पर पश्चिमी देशों की भौतिकतावादी और उपभोक्तावादी संस्कृति का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। आज भी अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी बोलना उच्च वर्ग व उच्च मध्यम वर्ग को अपमानजनक लगता है। इतना ही नहीं, अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में बच्चों को हिंदी में बोलने पर जुर्माना तक कर दिया जाता है। अपनी ही मातृभाषा को अपनों के हाथों ही जो दंश झेलना पड़ता है, वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

दूसरी ओर सुखद सच्चाई यह भी है कि हिंदी गंगा के पवित्र प्रवाह की भांति गतिमान है। आज न केवल भारत का अपितु विश्व का शायद ही ऐसा कोई भाग हो, जहां हिंदी बोली या समझी नहीं जाती हो। हिंदी को आगे बढ़ाने में हिंदी सिनेमा, दूरदर्शन पर प्रसारित दर्जनों रोचक कार्यक्रमों व समाचार पत्र–पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। संगीत के क्षेत्र में चाहे सारेगामा हो या इंडियन आइडल, रामायण, महाभारत या अन्य ऐतिहासिक कार्यक्रम हों या हास्य प्रधान कार्यक्रम, सभी ने हिंदी के प्रचार को काफी बल प्रदान किया। आज के वैश्विक युग में पूरा विश्व एक बाजार दिखाई देता है और ऐसे में 146 करोड़ के इस विशाल देश की आम जन की भाषा हिंदी के प्रति कोई बेरुखी नहीं रख सकता।

जुलाई, 2007 में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बान की मून ने आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा था कि – "हिंदी भाषा सहज सद्भाव की भाषा है।" उन्होंने अपना भाषण 'नमस्ते! क्या हालचाल हैं'? से आरम्भ किया।

हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित न करने में 76 वर्ष की असहनीय देरी हो चुकी है। 48 वर्ष पूर्व डॉ० रामकुमार वर्मा ने भी अपने एक वक्तव्य में कहा था ''जिस भांति आज की राजनीति दलगत संघर्षों में उलझकर सम्पूर्ण भारत की अखंडता के सम्बन्ध में प्रश्न चिन्ह लगा रही है, उसी प्रकार भाषा को भी राज्य से बांटकर उसे प्रतिस्पर्धा प्रतिद्वंद्विता के क्षेत्र में लाकर दयनीय बना दिया गया है।'' आगे उन्होंने इस विषय पर अपना दुख यों प्रकट किया–''ऐसा लगता है कि राष्ट्रभाषा के प्रश्न को टालने की कोशिश की जा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अन्य भारतीय

भाषाओं के प्रति भी हमारा सद्भाव है और उनकी उन्नति तथा विकास के हम समर्थक हैं, किन्तु हिंदी को अन्य प्रांतीय भाषाओं के समानांतर रखने से न तो हिंदी ही बढ़ सकेगी और न अन्य भाषाएं। हिंदी को पूर्णरूप से अंग्रेजी का स्थान लेने के लिए कोई विशिष्ट अवधि भी निश्चित नहीं है। इस प्रकार संविधान की अवज्ञा और अपमान से व्यथित होकर उन्होंने अपने राजकीय सम्मान व अलंकरण तक लौटा दिए थे।

हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के वैचारिक आन्दोलन में प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, के.एम. मुंशी, राहुल सांकृत्यायन, वैशम्पायन, अमृतलाल चक्रवर्ती, माखनलाल चतुर्वेदी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, सुनीति कुमार चटर्जी, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, मिश्र बंधुगण, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' एवं वर्तमान समय के अनेक हिंदी साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया।

एक बात स्पष्ट है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में थोपा तो नहीं जा सकता, लेकिन अब बात थोपने की स्थिति से बहुत आगे आ चुकी है। दरअसल, बढ़ते प्रभाव और वर्चस्व ने हिंदी को देश की सर्वाधिक प्रचलित भाषा के रूप में स्थापित कर दिया है। वस्तुतः भारत जैसा वैविध्यपूर्ण देश एक विशाल फूलों के उद्यान की तरह है, जिसमें हर भाषा की अपनी महक है। हिंदी उनमें गुलाब का फूल है। हिंदी हमारे प्यारे हिन्दुस्तान के मस्तक की बिंदी है।

स्वतंत्र राष्ट्र, अपना संविधान, राष्ट्रध्वज, प्रतीक चिह्न और राष्ट्रगान आदि मन को छू लेने वाले शब्द हैं। एक संप्रभु राष्ट्र के लिए उक्त शब्द जितने महत्व के हैं, उतने ही महत्व का शब्द ''राजभाषा'' भी है। यहां विचारणीय है कि राजभाषा शब्द की उपच्छाया हमारे अंतर्मन को कितना उद्वेलित करती है। हमें कहां तक यह लगता है कि हम विदेशी भाषा के आश्रय में अपना कार्य करते हुए, अभी भी किस हद तक अपूर्ण हैं। राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता और पहचान बनाये रखने के लिए एक राजभाषा अनिवार्य है। हिंदी, भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, राष्ट्र की वाणी है, पहचान है और समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है। राजभाषा हिंदी को बदलते कम्प्यूटरीकृत व तकनीक परिवेश का पूरा सहयोग मिलता रहे, तो इसका राष्ट्रभाषा बनना तय है।

'हिंदी' को मिले राष्ट्रभाषा का सम्मान
निज भाषा हो नए भारत की पहचान...।

पत्नी–श्री रमेश कुमार बहल (वरिष्ठ प्रबंधक)
कॉर्पोरेट कार्यालय, दिल्ली

देशभक्ति गीत

हमारे देश की माटी, हमारे भाल का चंदन।

सजाकर हाथ से क्यारी, पुलक उपवन बनाते हैं।
विविध वर्णी सुमन खिलकर, सुगंधों से लुभाते हैं।
कहीं पर धान की बाली, कहीं दाड़िम लिए लाली,
हुलसते खेत थाली भर, खुशी से मुस्कुराते हैं।।

भँवर के भाव का गुंजन, हमारा गाँव वन नंदन।
हमारे देश की माटी, हमारे भाल का चंदन।।

इसी में लोट जाते हैं, इसे उबटन बनाते हम।
जनी ही जानकर इसको, हुलक उलटन लगाते हम।
अनोखी एक परिपाटी, सजाते शीश पर माटी,
सहारा साथ माटी का, अखाड़ा जीत लाते हम।।

जयी बन लाल माटी का, धरा के मान का वंदन।
हमारे देश की माटी, हमारे भाल का चंदन।।

नवल किशोर सिंह

सदा सीमांत पर खेलें, तड़प तलवार को झेलें।
तपाकर देह भट्ठी में, लपट ललकार को झेलें।।
दहकते आग के शोले, गरजते तोप के गोले।
वतन की आन की खातिर, सकल खल–खार को झेलें।।

कटा दें शीश भी अपना, मगर कोई नहीं क्रंदन।
हमारे देश की माटी, हमारे भाल का चंदन।।

बिछाकर मेदिनी को हम, गगन को ओढ़ लेते हैं।
वतन की बात आती तो, महल भी छोड़ देते हैं।।
भले हो घास की रोटी, बदन पर सिर्फ लंगोटी।
धरा और धर्म के हित में, असुर–सिर तोड़ देते हैं।।

मही माता महत्तम का, हृदय से रात दिन छंदन।
हमारे देश की माटी, हमारे भाल का चंदन।।

अभियंता (गुणवत्ता नियंत्रण)
एचपीबीपी, तिरूचि

संस्मरण

गंगा की गोद और राम की नगरी: एक परिवार की पवित्र यात्रा

शिवांगी गोयल

हाल ही में परिवार–सहित भारत की दो पावन भूमियों वाराणसी और अयोध्या की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस यात्रा ने न केवल हमारी धार्मिक आस्था को और सुदृढ़ किया बल्कि यह परिवार के साथ बिताए अमूल्य पलों की एक अनमोल धरोहर बन गई।

दिल्ली से शिवगंगा एक्स्प्रेस द्वारा हम वाराणसी पहुंचे। वहाँ पहुँचते ही ज्ञात हुआ कि हाल ही में आई बाढ़ के कारण घाटों तक पहुंच सीमित थी। हालांकि घाटों की सैर संभव नहीं हो पाई, लेकिन इस परिस्थिति ने हमें शहर के मंदिरों को और समीप से जानने–समझने का अवसर प्रदान किया।

पहले दिन सुबह हम काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन के लिए निकले। वर्तमान काशी विश्वनाथ मंदिर 200 वर्ष से भी अधिक पुराना है एवं भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मंदिर की दिव्यता एवं भव्यता मन को अभिभूत कर देती है। दर्शन/रुद्राभिषेक की बुकिंग हमने पहले ही इंटरनेट/ऑनलाइन माध्यम से कर ली थी जिससे काफी सुविधा रही। परिवार के साथ रुद्राभिषेक करने का अनुभव बहुत ही निराला तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण रहा।

शाम के समय हमने अन्य मंदिरों के दर्शन का आनंद लिया। संकट मोचन हनुमान मंदिर की सौम्यता, तुलसी मानस मंदिर की गरिमा, दुर्गा मंदिर की स्फूर्ति, विशालाक्षी शक्ति पीठ और अन्नपूर्णा मंदिर की आस्था–भावना, आईआईटी बीएचयू में स्थापित नए काशी विश्वनाथ मंदिर की आधुनिक भव्य संरचना, यह सब महसूस करके मन को अलग ही आत्मिक तृप्ति का एहसास हुआ।

वाराणसी की संकरी गलियां भक्तों से उमड़ती थीं, फिर भी वहाँ के स्थानीय लोग, रिक्शावाले हमसे बड़े प्रेम और विनम्रता से मिलते और

मार्गदर्शन करते। उनका व्यवहार मानवता की भावना की अनूठी मिसाल पेश कर रहा था।

इसके पश्चात हमारा अगला पड़ाव था अयोध्या, जहां की पवित्रता ने और भी गहराई से प्रभावित किया। आगमन के दिन ही मुख्य राम जन्मभूमि मंदिर में शयन आरती में सम्मिलित होना एक अद्भुत अनुभव रहा, जो मन को शांति और उमंग से भर देता है। यहाँ भी दर्शन/आरती की बुकिंग पहले ही इंटरनेट/ऑनलाइन माध्यम से कर ली गई थी, जिससे यात्रा सुव्यवस्थित रही।

मंदिर में रामलला की दोनों प्रतिमाओं, पुरानी एवं नई प्रतिमा, के दर्शन करना बेहद भावुक कर देने वाला था। वर्षों से पूजित पुरानी प्रतिमा अब नवीन प्रतिमा के समक्ष स्थापित है, जैसे प्राचीन विरासत की सौगात। बुजुर्गों के लिए उपलब्ध व्हीलचेयर सुविधा भी अत्यंत सराहनीय लगी, जिससे सभी सहजता से दर्शन कर सके।

अगले दिन सुबह हमने हनुमानगढ़ी, कनक भवन, दशरथ महल और सीता की रसोई जैसे मंदिरों के भी दर्शन किए। शाम को सरयू घाट की शांति और सौन्दर्य ने हमारी थकान को हर लिया। रविवार होने के

बावजूद यहां की भीड़ के बीच भी दर्शन सुगम रहे। नए राम जन्मभूमि परिसर के आस–पास उपलब्ध भोजनालयों ने हमारी यात्रा को और भी सुविधाजनक बना दिया।

अंततः यात्रा का समापन अगले दिन वंदे भारत ट्रेन से आरामदायक वापसी के साथ हुआ।

यद्यपि इस यात्रा में हमने बहुत कुछ अनुभव किया फिर भी ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे अभी बहुत से पन्ने पलटने बाकी हैं –वाराणसी के घाटों की सैर, गंगा आरती की आलौकिक छटा और नौका विहार का आनंद लेना अभी शेष है। साथ ही, अयोध्या के पावन मणि पर्वत क्षेत्र की खोज भी हमारी अगली यात्रा का हिस्सा बनेगी।

परिवार के साथ बिताए ये पावन क्षण हमारे हृदयों में सदा के लिए अंकित हो गए हैं। यह यात्रा केवल एक तीर्थयात्रा नहीं बल्कि हमारी आत्मा और परिवार के लिए एक अमूल्य उपहार सिद्ध हुई।

वरिष्ठ प्रबंधक (सीपीपीपी)
उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

वन्दे मातरम् के 150 साल

प्रतिभा शाही

भारत की सांस्कृतिक विरासत का
व्याख्यान है वन्दे मातरम्
स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति का
परिणाम है वन्दे मातरम्
शहीदों की कुर्बानियों का
साक्ष्य है वन्दे मातरम्
बलिदानों और देश–भक्ति का
पर्याय है वन्दे मातरम्
अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का
आगाज था वन्दे मातरम्
जन आन्दोलनों और सभाओं का
रिवाज था वन्दे मातरम्
स्वतंत्रता सेनानियों में प्रेरणा का
स्त्रोत था वन्दे मातरम्
क्रांति की चिंगारी की
अखण्ड जोत था वन्दे मातरम्
जलियांवाला के कण कण में
विधमान है वन्दे मातरम्
सेलुलर की सलाखों में
गुंजायमान है वन्दे मातरम्
खुदी राम बोस के अंतिम
शब्द थे वन्दे मातरम्
भगतसिंह, बिस्मिल और आजाद के
विचार थे वन्दे मातरम्
सन् 1947 में मिली स्वाधीनता का
आधार है वन्दे मातरम्
राष्ट्र गीत के रूप में भारतवर्ष को
शिरोधार्य है वन्दे मातरम्
भारतीय सेना के शौर्य का
संबोधन है वन्दे मातरम्
जल थल नभ में शक्ति का
उच्चारण है वन्दे मातरम्
सरहद पर तैनात सैनिक की
साधना है वन्दे मातरम्
जगत जननी जन्मभूमि की
आराधना है वन्दे मातरम्
कश्मीर से कन्याकुमारी का
विस्तार है वन्दे मातरम्
गंगा गोदावरी कावेरी की
रफ्तार है वन्दे मातरम्
140 करोड़ की एकता का
प्रतीक है वन्दे मातरम्
दुनिया के सामने भारत की
अखण्ड तस्वीर है, वन्दे मातरम्

वरि. प्रबंधक (ट्रैक्शन इंजीनियरिंग)
ईडीएन, बेंगलुरु

भारतीय ज्ञान और परंपरा –संस्कृति और साहित्य

डॉ. के.पी. मिश्र

भारतीय संस्कृति और साहित्य विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों और साहित्यों में से एक है। मिस्र, ग्रीस, रोम आदि की प्राचीन संस्कृतियाँ और साहित्य समय के साथ नष्ट हो गए और केवल उनके अवशेष ही बचे हैं। लेकिन भारतीय संस्कृति और साहित्य आज भी जीवित है। इसके मूलभूत सिद्धांत वही हैं जो प्राचीन काल में थे। ग्राम पंचायतें, जाति व्यवस्था और संयुक्त परिवार प्रणाली आज भी देखी जा सकती है। बुद्ध, महावीर और भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ आज भी जीवित हैं और प्रेरणा का स्रोत हैं। आध्यात्मिकता, प्रकृति से प्रार्थना, कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास, अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, पवित्रता, लोभ न करना आदि मूल्य आज भी इस देश के लोगों को प्रेरित करते हैं। भौतिक विकास और सामग्रियाँ सभ्यता के अंतर्गत आती हैं, जबकि जीवन शैली, रीति–रिवाज और परंपराएँ संस्कृति के अंतर्गत आती हैं। भौतिक विकास एक सीमा तक ही संभव है। यही कारण है कि सभ्यताएँ नष्ट हो गईं जबकि भारतीय संस्कृति और साहित्य आज भी मौजूद है, क्योंकि विकास का आधार आध्यात्मिकता थी, न कि भौतिकवाद।

इस प्रकार, भारतीय संस्कृति को एक प्राचीन संस्कृति कहा जा सकता है, जिसका अतीत आज भी जीवित है। मद्रास के पास पल्लवरम, चिंगलपेट, वेल्लोर, तिन्नीवल्ली, सोहन नदी की घाटी, पश्चिमी पंजाब के पिंडीघेव क्षेत्र, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के रेहंद क्षेत्र, मध्य प्रदेश की नर्मदा घाटी, होशंगाबाद और महेश्वर में पाए गए पाषाण युग के अवशेष यह स्पष्ट करते हैं कि भारत मानव संस्कृति के विकास और उत्कर्ष की भूमि रहा है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो आदि स्थानों पर हुए उत्खनन के आधार पर हमें प्रागैतिहासिक काल की विकसित सभ्यता और संस्कृति का पता चलता है, जो लगभग 3000 ईसा पूर्व फली–फूली थी। इस प्रकार, भारतीय संस्कृति और साहित्य लगभग 5000 वर्ष पुराना है।

प्रस्तावना

संस्कृति से तात्पर्य लोगों के विचार और व्यवहार के स्वरूपों से है। इसमें मूल्य, मान्यताएँ, आचरण के नियम और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संगठन के स्वरूप शामिल हैं। ये औपचारिक और अनौपचारिक प्रक्रियाओं द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं। संस्कृति में वे तरीके शामिल हैं जिनसे हम समाज के सदस्य के रूप में सोचते और कार्य करते हैं। इस प्रकार, सामूहिक जीवन की सभी उपलब्धियों को सामूहिक रूप से संस्कृति कहा जाता है। आम बोलचाल में, संस्कृति के भौतिक पहलुओं, जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों को संस्कृति से अलग माना जाता है, जबकि अन्य में सामूहिक जीवन की गैर–भौतिक, उच्चतर उपलब्धियाँ (कला, संगीत, साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान) शामिल होती हैं। भाषा, कला, दर्शन और धर्म के माध्यम से संस्कृति स्वयं को व्यक्त करती है। यह सामाजिक आदतों, रीति–रिवाजों, आर्थिक संगठनों और राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से भी स्वयं को व्यक्त करती है।

संस्कृति दो प्रकार की होती है: (i) भौतिक और (ii) गैर–भौतिक। पहले प्रकार में प्रौद्योगिकी, उपकरण, भौतिक वस्तुएँ, उपभोक्ता वस्तुएँ, घरेलू डिजाइन और वास्तुकला, उत्पादन के तरीके, व्यापार, वाणिज्य, कल्याण और अन्य सामाजिक गतिविधियाँ शामिल हैं। इसमें मानदंड, मूल्य, मान्यताएं, मिथक, किंवदंतियां, साहित्य, अनुष्ठान, कला रूप और अन्य बौद्धिक–साहित्यिक गतिविधियां शामिल हैं। किसी भी संस्कृति के भौतिक और अभौतिक पहलू आमतौर पर एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। हालांकि, कभी–कभी भौतिक संस्कृति में तेजी से बदलाव आ सकता है, लेकिन अभौतिक पहलुओं को बदलने में अधिक समय लग सकता है। भारतविदों के अनुसार, भारतीय संस्कृति न केवल एक पारंपरिक सामाजिक संहिता है, बल्कि जीवन की एक आध्यात्मिक नींव भी है। भारतीय संस्कृति हमारे समाज की एक अमूल्य धरोहर है। भारतीय संस्कृति और साहित्य विश्व की सभी संस्कृतियों में सबसे प्राचीन है। अनेक उतार–चढ़ावों का सामना करने के बावजूद भारतीय संस्कृति अपनी महिमा और वैभव के साथ चमक रही है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। संस्कृति के आधार पर हम उसके अतीत और वर्तमान की समृद्धि का अनुभव कर सकते हैं। संस्कृति मानव जीवन के मूल्यों का संग्रह है, जो इसे अन्य समूहों से विशिष्ट और आदर्श रूप से अलग करता है।

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य की विशेषताएँ

भारतीय साहित्य में, पारंपरिक भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता की ओर अपने समग्र झुकाव के साथ, नैतिक मूल्यों और उदारता, सादगी और मितव्ययिता के दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। भारतीय संस्कृति एवं साहित्य की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ, जो इसकी असंख्य जातियों, जनजातियों, जातीय समूहों और धार्मिक समूहों एवं संप्रदायों में व्याप्त हैं, इस प्रकार हैं:

ब्रह्मांडीय दृष्टि भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का ढाँचा मनुष्य को ब्रह्मांड की दिव्य रचना के रूप में देखता है। यह केवल मानव–केंद्रित नहीं है, बल्कि सृष्टि के सभी तत्वों, सजीव और निर्जीव दोनों को, दैवीय अभिव्यक्ति मानता है। इसलिए, यह ईश्वर की रचना का सम्मान करता है और सह–अस्तित्व के आदर्श को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार, यह दृष्टि मनुष्य, प्रकृति और ईश्वर को एक अभिन्न इकाई में संश्लेषित करती है। यह सत्यम–शिवम–सुंदरम के विचार में परिलक्षित होता है। सामंजस्य की भावना भारतीय साहित्य में, भारतीय दर्शन और संस्कृति एक सहज सामंजस्य और व्यवस्था प्राप्त करने का प्रयास करती है, और यह संपूर्ण ब्रह्मांड तक विस्तारित है।

भारतीय संस्कृति में यह मान्यता है कि प्रकृति में निहित स्वाभाविक

ब्रह्मांडीय व्यवस्था ही नैतिक और सामाजिक व्यवस्था का आधार है। आंतरिक सामंजस्य को बाह्य सामंजस्य का आधार माना जाता है। बाह्य व्यवस्था और सौंदर्य स्वाभाविक रूप से आंतरिक सामंजस्य से उत्पन्न होते हैं। भारतीय संस्कृति भौतिक और आध्यात्मिक तत्वों में संतुलन स्थापित करने और उनका संश्लेषण करने का प्रयास करती है, जैसा कि पुरुषार्थ की अवधारणा से स्पष्ट होता है। सहिष्णुता भारतीय साहित्य में भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण गुण सहिष्णुता है। भारत में सभी धर्मों, जातियों, समुदायों आदि के प्रति सहिष्णुता और उदारता पाई जाती है। कई विदेशी संस्कृतियों ने भारत पर आक्रमण किया और भारतीय समाज ने प्रत्येक संस्कृति को फलने–फूलने का अवसर दिया। भारतीय समाज ने शक, हूण, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन और बौद्ध संस्कृतियों को स्वीकार किया और उनका सम्मान किया। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की भावना भारतीय समाज का एक अद्भुत गुण है। ऋग्वेद कहता है, "सत्य एक है, फिर भी विद्वान इसे विभिन्न रूपों में वर्णित करते हैं।" गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं, "जो दूसरों की प्रार्थना करते हैं, वे वास्तव में मेरी प्रार्थना करते हैं।" यह विचार सहिष्णुता की पराकाष्ठा है।

भारत में विभिन्न धर्मों का शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व है और सभी एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं–हालांकि कुछ धार्मिक संगठनों द्वारा धर्म परिवर्तन के प्रयासों से इस परंपरा को काफी नुकसान पहुंचा है। भारत में विद्यमान सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति वास्तविकता की विविधता को स्वीकार करती है और दृष्टिकोणों, व्यवहारों, रीति–रिवाजों और संस्थाओं की बहुलता को आत्मसात करती है। यह एकरूपता के पक्ष में विविधता को दबाने का प्रयास नहीं करती। भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य है विविधता में एकता और एकता में विविधता।

संदर्भ सूची

- भटनागर, एबी.–समकालीन भारत एवं शिक्षा, एजी प्रकाशन, मेरठ
- पचोरी गिरीश समकालीन भारत एवं शिक्षा, टीके प्रकाशन, आगरा
- गोरे, एम.एस., विविधता में एकताः राष्ट्र निर्माण में भारतीय अनुभव, रावत प्रकाशन, जयपुर, 2002
- कबीर, हुमायूं, हमारी विरासत, राष्ट्रीय सूचना एवं प्रकाशन लिमिटेड, मुंबई, 1946
- मलिक, एस.सी., भारतीय सभ्यता को समझनाः एक जांच ढांचा, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला, 1975
- मुखर्जी, डी.पी., भारतीय संस्कृति का समाजशास्त्र, रावत प्रकाशन, जयपुर, 1948/1979
- पांडे, गोविंद चंद्र, भारतीय संस्कृति की नींव, बुक्स एंड बुक्स, नई दिल्ली, 1984

सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति
भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

परिचय मेरा

मृदु घट हूँ मैं महाकलश का, क्षण में क्षय हो जाऊंगा
सागर पे हूँ बूंद ओस की, तल को क्या मैं पाऊंगा
तृण भर हूँ इस व्याप्त जगत में, क्या अस्तित्व कुछ ज्ञात नहीं है
कर्म है मेरा कोरी कालिख, त्रिभुवन को क्या बतलाऊंगा
ईश से है बस यही प्रार्थना, कर दो जीवन अक्षय मेरा
मुझसे क्या है परिचय मेरा।

कोई कहे मुझे भृंगुर काया
कोई कहे ईश्वर की माया
नश्वरता की कोई कहानी
या मटमैला वस्त्र पराया
कब तक रहूँ मैं अंधकार में, कौन बनेगा संजय मेरा
मुझसे क्या है परिचय मेरा।

कालचक्र के इस बंधन में, घूम रहा हूँ अविरल में
न लक्ष्य है, न प्रयास है, नाव हूँ ऐसी बहते जल में
चरणों में अपने मुझे स्थान दो,
फिर रख दो औघट या फिर समतल में।

वरुण कुमार शर्मा

बन जाओ तुम मेरे खिवैया, बन जाओ तुम आश्रय मेरा
मुझसे क्या है परिचय मेरा।

सारा जगत है तेरी माया, पूर्ण धरा का व्यापारी तू
तू ही चलाता शशि और दिनकर, पूर्ण ब्रह्म हे अविकारी तू
तू ही बिगाड़े, तू ही सँवारे, मेरा मुझमे क्या ही लागे
रज से मैं पंकज बन जाऊं आशीष मुझे दो हितकारी तू
हूँ मैं केवल हाँड़–मास का, क्या ही मोल और क्या विक्रय मेरा
मुझसे क्या है परिचय मेरा।

कठपुतली सा ताना–बाना, तू ही मेरा सूत्रधार है
तेरे हाथ में मेरी साँसे, तू ही जीवन का आधार है
तेरी इच्छा से चलता हूँ, जब चाहो रूक जाऊंगा
प्राण दिये मुझे मनुज रूप में यह तेरा उपहार है
जीवन के इस रंगमच पे, इतना सा है अभिनय मेरा
मुझसे क्या है परिचय मेरा।

राजभाषा अधिकारी
पावर सेक्टर पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

बात अठन्नी की

सुदर्शन

रसीला, इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहां नौकर था। दस रुपए वेतन था। गांव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। इन सबका भार उसी के कंधों पर था। वह सारी तनख़्वाह घर भेज देता, पर घरवालों का गुजारा न चल पाता। उसने इंजीनियर साहब से वेतन बढ़ाने की बार–बार प्रार्थना की पर वह हर बार यही कहते 'अगर तुम्हें कोई ज्यादा दे तो अवश्य चले जाओ। मैं तनख़्वाह नहीं बढ़ाऊंगा।'

वह सोचता,'यहां इतने सालों से हूं। अमीर लोग नौकरों पर विश्वास नहीं करते पर मुझ पर यहां कभी किसी ने संदेह नहीं किया। यहां से जाऊं तो शायद कोई ग्यारह–बारह दे दे, पर ऐसा आदर न मिलेगा।'

जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन इंजीनियर बाबू के पड़ोस में रहते थे। उनके चौकीदार मियां रमजान और रसीला में बहुत मैत्री थी। दोनों घंटों साथ बैठते, बातें करते। शेख साहब फलों के शौकीन थे, रमजान, रसीला को फल देता। इंजीनियर साहब को मिठाई का शौक था, रसीला, रमजान को मिठाई देता।

एक दिन रमजान ने रसीला को उदास देखकर कारण पूछा। पहले तो रसीला छिपाता रहा। फिर रमजान ने कहा,'कोई बात नहीं है, तो खाओ सौगंध।'

रसीला ने रमजान का हठ देखा तो आंखें भर आई। बोला,'घर से खत आया है, बच्चे बीमार हैं और रुपया नहीं है।'

'तो मालिक से पेशगी मांग लो।'
'कहते हैं, एक पैसा भी न दूंगा।'

रमजान ने ठंडी सांस भरी। उसने रसीला को ठहरने का संकेत किया और आप कोठरी में चला गया। थोड़ी देर बाद उसने कुछ रुपए रसीला की हथेली पर रख दिए। रसीला के मुंह से एक शब्द भी न निकला। सोचने लगा। 'बाबू साहब की मैंने इतनी सेवा की, पर दुख में उन्होंने साथ न दिया। रमजान को देखो गरीब है, परंतु आदमी नहीं, देवता है। ईश्वर उसका भला करे।'

रसीला के बच्चे स्वस्थ हो गए। उसने रमजान का ऋण चुका दिया। केवल आठ आने बाकी रह गए। रमजान ने कभी भी पैसे न मांगे फिर भी रसीला उसके आगे आंख न उठा पाता।

एक दिन की बात है। बाबू जगतसिंह किसी से कमरे में बात कर रहे थे। रसीला ने सुना, इंजीनियर बाबू कह रहे हैं,'बस पांच सौ! इतनी–सी रकम देकर, आप मेरा अपमान कर रहे हैं।'

'हुजूर मान जाइए। आप समझें कि आपने मेरा काम मुफ्त किया है।'

रसीला समझ गया कि भीतर रिश्वत ली जा रही है। सोचने लगा,'रुपया कमाने का यह कितना आसान तरीका है। मैं सारा दिन मजदूरी करता हूं तब महीने भर बाद दस रुपए हाथ आते हैं। वह बाहर आया और रमजान को सारी बात सुना दी। रमजान बोला,'बस इतनी–सी बात हमारे शेख साहब तो उनके भी गुरु है। आज भी एक शिकार फंसा है। हजार से कम तय न होगा। भैया, गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर ऐसी ही कमाई से कोठियों में रहते हैं, और एक हम हैं कि परिश्रम करने पर भी हाथ में कुछ नहीं रहता।

रसीला सोचता रहा। मेरे हाथ से सैकड़ों रुपए निकल गए पर धर्म न बिगड़ा। एक–एक आना भी उड़ाता तो काफी रकम जुड़ जाती। इतने में इंजीनियर साहब ने उसे आवाज लगाई,'रसीला, दौड़कर पांच रुपए की मिठाई ले आ।'

रसीला ने साढ़े चार रुपए की मिठाई खरीदी और रमजान को अठन्नी लौटाकर समझा कि कर्ज उतर गया।

बाबू जगतसिंह ने मिठाई देखी तो चौंक उठे,'यह मिठाई पांच रुपए की है।'

'हुजूर पांच की ही है।'

रसीला का रंग उड़ गया। बाबू जगतसिंह समझ गए। उन्होंने रसीला से फिर पूछा, रसीला ने फिर वही दोहराया। उन्होंने रसीला के मुंह पर एक तमाचा मारा और कहा,'चल मेरे साथ जहां से लाया है।'

'हुजूर, झूठ कहूं तो........'रसीला ने अभी अपनी बात पूरी भी न को थी कि इंजीनियर बाबू चिल्लाए, 'अभी सच और झूठ का पता चल जाएगा। अब सारी बात हलवाई के सामने ही कहना।'

अब कोई रास्ता न बचा था। बोला, 'माई बाप, गलती हो गई। इस बार माफ कर दें।'

इंजीनियर साहब की आंखों से आग बरसने लगी। उन्होंने निर्दयता से रसीला को खूब पीटा फिर घसीटते हुए पुलिस थाने ले गए। सिपाही के

हाथ में पांच का नोट रखते हुए बोले, 'मनवा लेना। लातों के भूत बातों से नहीं मानते।'

दूसरे दिन मुकदमा शेख सलीमुद्दीन की कचहरी में पेश हुआ। रसीला ने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने कोई कहानी न बनाई। चाहता तो कह सकता कि यह साजिश है। मैं नौकरी नहीं करना चाहता इसीलिए हलवाई से मिलकर मुझे फंसा रहे हैं, पर एक और अपराध करने का साहस वह न जुटा पाया। उसकी आंखें खुल गई थी। हाथ जोड़कर बोला, 'हुजूर, मेरा पहला अपराध है। इस बार माफ कर दीजिए। फिर गलती न होगी।'

शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे। उन्होंने रसीला को छह महीने की सजा सुना दी और रूमाल से मुंह पौछा। यह वही रुमाल था जिसमें एक दिन पहले किसी ने हजार रुपए बांधकर दिए थे।

फैसला सुनकर रमजान की आंखों में खून उतर आया। सोचने लगा,'यह दुनिया न्याय नगरी नहीं, अंधेर नगरी है। चोरी पकड़ी गई तो अपराध हो गया। असली अपराधी बड़ी-बड़ी कोठियों में बैठकर दोनों हाथों से धन बटोर रहे हैं। उन्हें कोई नहीं पकड़ता।'

रमजान घर पहुंचा। एक दासी ने पूछा, 'रसीला का क्या हुआ?'

'छह महीने की कैद।'

'अच्छा हुआ। वह इसी लायक था।'

रमजान ने गुस्से से कहा,'यह इंसाफ नहीं अंधेर है। सिर्फ एक अठन्नी की ही तो बात थी।'

रात के समय जब हजार, पांच सौ के चोर नरम गद्दों पर मीठी नींद सो रहे थे, अठन्नी का चोर जेल की तंग, अंधेरी कोठरी में पछता रहा था।

–महान कहानीकार

धर्म और मातृत्व

सुभद्रे, देह क्षणिक है केवल,
आत्मा का पथ रुकता नहीं;
जो जन्मा है, वह जाएगा,
जो गया, लौट आ जाएगा।

यदि कर्म का बंधन, कटा नहीं,
तो धर्म-चक्र फिर थमा नहीं;
मैं काल भी हूँ, साक्षी भी हूँ,
पर कर्म स्वयं ही फलता है।

वीर वही जो रण में गिरकर
युग के हेतु संवरता है;
चक्रव्यूह शस्त्र-विन्यास न था,
वह काल-चक्र का प्रवाह था।

अभिमन्यु देह से दूर हुआ,
पर अमर प्रेरणा का स्रोत हुआ।

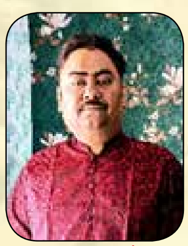

अरुण सक्सेना

हे केशव, तुम न जानोगे,
माँ का मन क्या पहचानोगे?
माना कि धर्मयुद्ध की वेदी पर
दी उसने आहुति स्वयं।

पर मैं अपने इस मन को
क्या बातों से समझा सकती हूँ?
एक माँ के हृदय को क्या
गीता का पाठ पढ़ा सकती हूँ?

मौन हुए माधव उस क्षण,
नयन हुए गंभीर;
पांचाली भी स्थिर खड़ी थी,
शोकाकुल और अधीर।

अभियंता (कार्य अभियंत्रण सेवाएँ)
सीएफपी, रुद्रपुर

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2026-27 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम

हिंदी में मूल पत्रचार (ई-मेल सहित) के लिए निर्धारित लक्ष्य

क क्षेत्र से	लक्ष्य	ख क्षेत्र से	लक्ष्य	ग क्षेत्र से	लक्ष्य
1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को	100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को	90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को	60%
2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को	100%	2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को	90%	2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को	60%
3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को	70%	3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%	3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%
4. क क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	4. ख क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%	4. ग क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	60%

अन्य कार्यों का विवरण

क्र.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
2	हिंदी में टिप्पण/टिप्पणी	80%	55%	35%
3	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
4	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
5	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
6	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
9	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
10	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
11	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शन किए जाएं	100%	100%	100%
12	(i) मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
13	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
14	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16	सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपकटमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है।	45%	30%	20%

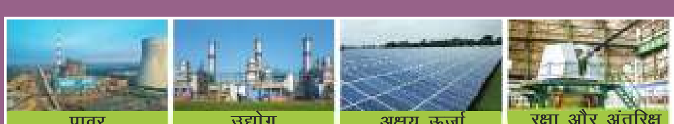

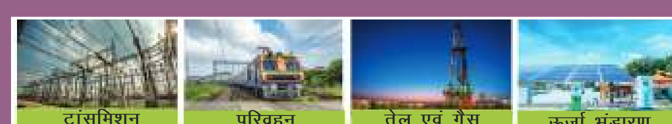

www.bhel.com

Follow us on

BHELOfficial | BHEL_India | BHEL_India | bhel.india | company/bhel